अनादि अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

ज़ाहिद की ग़ज़लें

● दिगम्बराचार्य विमर्शसागर

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–26 (2)

(स्वर्णिम विमर्शोत्सव एवं रजत संयमोत्सव की मंगल प्रस्तुति)

ज़ाहिद की ग़जलें

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जिनागम पंथ प्रकाशन

ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण

.. शास्त्र विक्रय.. ज्ञानावरणस्यास्रवाः श्रुतात्स्याच्छ्रुतकेवली।

शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है तथा शास्त्रदान से श्रुतकेवली होता है ऐसा आगम वाक्य है।

जिनागम पंथ ग्रंथमाला से प्रकाशित श्रुत साहित्य का विक्रय नहीं किया जाता। सभी स्वाध्यायी जीवों के लिए निःशुल्क उपलब्ध कराया जाता है।

जिनागम पंथ ग्रंथमाला : ग्रंथांक–26 (2)

कृति : ज़ाहिद की ग़ज़लें

शुभाशीष : प.पू. शुद्धोपयोगी सन्त, सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज

कृतिकार : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

समावलोकन : श्रमण विचिन्त्यसागर

प्रस्तुति : विमर्शानुरागिनी आर्यिका विमर्शिता श्री माताजी

प्रकाशक : जिनागम पंथ ग्रंथमाला

संस्करण : द्वितीय, 2025

प्रतियाँ : 2000

मुद्रक : अरिहन्त ग्रॉफिक्स, दिल्ली
मो. 9958819046

© **जिनागम पंथ प्रभावना फाउंडेशन**

प्राप्ति स्थान :

- **जिनागम पंथ ग्रंथालय**
  बड़ा जैन मंदिर, बाराबंकी (उ.प्र.)
  नमन जैन मो. 9160855511
- **राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच**
  भिण्ड (म.प्र.)
  मो. 9826217291
- **डॉ. विश्वजीत कोटिया**
  आगरा (उ.प्र.)
  मो. 9412163166
- **अरिन्जय जैन**
  दिल्ली
  मो. 9810099002

दो शब्द

–सुरेश जैन सरल

जब सरिता के उद्‌भव का समय होता है तब वह यह विचार नहीं करती कि उसे किसी पर्वत से निकलना है या सरोवर से, कुन्ड से निकलना है या बंधन से, बस जन्म ले लेती है। काव्य लेखन के क्षण भी ऐसे ही होते हैं, जब काव्य जन्मता है तो वह सोचता नहीं डिग्रीवाले की लेखनी से निसृत होना है या सामान्य जन के हृदय से। काव्य तब अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है जब वह किसी मुनि, ऋषि, आचार्य की वाणी से चलकर उसकी लेखनी को स्पर्श देता है और प्रवाह द्विगुणित कर लेता है। हाँ, काव्य का अपना प्रवाह होता है, कभी नदी सा तो कभी वायु सा। उसे अब फ्लो कहा जाता है।

मेरे कलम के समक्ष एक ऐसी काव्यकृति आई जो वर्तमान आचार्य, राष्ट्रयोगी 108 श्री विमर्शसागर जी महाराज द्वारा सृजित है। इस काव्य को लिखते समय वे 'मुनि' थे, पर उस क्षण भी उनके भीतर एक साहित्याचार्य का जन्म हो चुका था। भाव प्रवणता और साहित्योचित तत्परता उनके हृदय की पूँजी थी। संयम, तप, साधनापूर्ण चर्या का निर्वाह करते हुए भी, उनका मानस 'महाकवि' की भूमिका निभा रहा था, तभी मात्र 86 दिनों में, कभी थमते, कभी विहार करते हुए, उन्होंने शताधिक रचनाएँ लिखीं थी जो एक अद्‌भुत कीर्तिमान स्थापित करने में सफल रहीं। समय था - 26 नवम्बर 2004 से लेकर 20 फरवरी 2005 तक का। लेखन की इतनी तीव्र-गति साहित्य-संसार को चकित करती है। लेखन भी ऐसा जो कभी मरण नहीं पाता, है कालजयि। रचनायें अपना वजन और वजूद रखती हैं। सिद्ध करती हैं कि सामान्य-मानस से नहीं, भोगी के दिल से नहीं, राष्ट्रयोगी के अंतरपट को खोलकर निकली हैं। हर रचना पर कोई शोधार्थी, एक शोधग्रंथ लिख सकता है। किसी भी रचना पर गुरुदेव पू. श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी की डिग्री हावी नहीं है। हर पंक्ति आसमान से झरती बूंदों की तरह सहज, सरल और प्राकृतिक। कुछ भी बनावटी और सजावटी नहीं। ग़ज़ल जैसी विद्या जो कदम-कदम तौलकर लिखी जाती है, के लिए राष्ट्रयोगी ने अपना उपनाम 'ज़ाहिद' इंगित किया है, जिसका हिन्दी अर्थ 'संयमी' होता है। उनसे अधिक संयमी कहाँ मिलेगा? उनकी वाणी और लेखनी से नि:सृत रचनाएँ संकलित की गईं तो साधिक 150 निकलीं, उनमें से 150 का प्रसाद इस ग्रंथ की धरोहर है। अच्छा हुआ कि कविताएं फैक्ट्री में नहीं बनाई जातीं, वे तो उस हृदय में आकार पाती हैं जो समाधिमय होना चाहता है। काव्य, कथा, कहानी आदि लिखते समय हर

लेखक को समय विशेष के लिए समाधि जैसा कुछ स्वरूप धारण करना पड़ता है। मन में उमड़ती पीड़ाओं, शोषणों, अकिन्चनों की पुकार सुननी पड़ती है और उन्हें समाधानों, शीतलताओं तथा संकल्पों के रस में गलाकर शरबत की तरह पेश करनी पड़ती है। मेरे कथन से आप अब तक ध्वनित हो चुके होंगे तो आईये देखें कुछ रचनाएं और रचनाकार का वाजिब-दिल। साहित्य का न्याय। और....न्याय का साहित्य। हर रचना की जन्मतिथि और जन्मभूमि उसके उसके नीचे दृष्टव्य है। चूँकि रचनाकार ने हिन्दी में लिखते हुए, बीच-बीच में सरल उर्दू का उपयोग किया है और उसका अर्थ भी बतलाता चला है, अतः पाठक का मन लगा रहता है पढ़ने में जी नहीं उचटता। जब पूरी रचना पढ़ चुकता है तो उसे वह सुख होता है जो एक भली और सुसज्जित सुहागन को देख लेने में होता है।

पाठक, जब रुक-रुक कर काव्यानन्द लेते हुए पढ़ता है तब रचना उसके निर्मल-मन पर गहरा प्रभाव स्थापित करती है, ऐसी स्थिति में ग्रन्थ की हर रचना उद्धृत करने योग्य पात्रता पाती है, मगर यहाँ लेख के सीमित फैलाव को ध्यान में रखते हुए, कुछ ही उदाहरण दे पाऊँगा। पृ. 2 पर 'दगा' शीर्षक से दी गई रचना में सिद्ध किया गया है कि एक-दो आदमी ही नहीं, पूरी दुनिया दगा झेल रही है और दगा दे रही है।

गुरुदेव कहते हैं–

'मतलबी दुनिया में जीते क्यों हो
रात-दिन गम को ही पीते क्यों हो
सब कह-कहा के यहाँ पर अपना
अपने यारब से ही रीते क्यों हो।'

यह एक पक्की ग़ज़ल बिलकुल गीत की तरह चलती मिलती है जिसमें सावधान किया गया है कि सारे संसार को तो अपना मान लेते हो पर मन में इष्ट/ईश्वर को नहीं उतार पाते हो। निर्जल-कलश की तरह मन तो रीता-रीता है, वहाँ तक ईश्वर को नहीं बुला पाये।

पृ. 21. पर 'तन्हा' शीर्षक है ग़ज़ल का। इसमें उक्त रीतेपन को भरता हुआ देखने मिलता है–

'तुझे दिल में बसा लिया हमने
सारी खुशियों को पा लिया हमने
इससे पहले कि तन्हा कर दे कोई
तुझसे रिश्ता बना लिया हमने।

कोई भी साधक जब तक अपने आराध्य को मन में नहीं उतारता, तबतक वह उससे नातेदारी नहीं बना पाता, मगर जब भक्त, भगवान् से जुड़ जाता है तो उसे अपने भीतर समाये रखता है। प.पू. आदर्श महाकवि आचार्य श्री विमर्शसागर जी का यह चिंतन उनके दर्शन, ज्ञान, चरित्र का मनोज्ञ चित्र प्रस्तुत कर देता है।

'खुदा' पृ. 37, अद्‌भुत रहस्य का उद्‌घाटन करती है यह ग़ज़ल।

'दाब में कब किसे दिखा है खुदा
अपने घर को ही भूल जाओगे
मिलती हमदाँ से शक्ल भी तेरी
दिल को कब आइना बनाओगे'

यहाँ हमारे पूर्वकालीन महाकवि श्री दौलतराम जी को आचार्य श्री स्पर्श कर देते हैं जिन्होंने सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखा था–**''हम तो कभऊँ न निज घर आये''।** आचार्य श्री नये अनुभव के साथ लिखते हैं कि शान शौकत में रहते हुए कोई व्यक्ति/साधक प्रभु को नहीं देख सकता, जिस घर में प्रभु को लाना चाहता है, उसे भी भूल जायेगा, हाँ, आत्मा को भूल जायेगा फलतः सर्वज्ञ-प्रभु जैसी अपनी छवि भी मन रूपी दर्पण में नहीं देख पायेगा। रहस्य यह कि शान शौकत के त्याग के बाद ही आत्मा में ईश्वर को देख पाओगे। एक बार आत्मा को दर्पण बनाकर तो देखो।

लेख लम्बा होता जा रहा है अतः समापन के पूर्व यही कहूँगा कि हमारे आचार्य श्री काव्य-लेखन के समस्त गुणों से सम्पन्न हैं एवं सचेत हैं। वे आदमी, आत्मा और आराध्य को जोड़ने के लिए ही कलम चलाते हैं। इस पुस्तक में उनकी सर्वाधिक कंठों से गायी जानेवाली लोकप्रिय अमर रचना **'जीवन है पानी की बूँद'** की एक नहनी किरॉच भी संजोई गई है जो उनके महाकाव्य की एक बूँद है। इसी तरह एक और अमर रचना **''कर तू प्रभु का ध्यान''** भी दृष्टव्य है। ये रचनायें उनके 'भक्तिकाव्य' की चमकदार साक्ष प्रदान करती हैं। महाकवि सदा लम्बी रचनायें लिखें ऐसा अनिवार्य नहीं है। उनकी तो मात्र दो पंक्तियाँ भी महाकाव्य का सारसंक्षेप लिये होती हैं। ऐसे ऋषिवर को नमन/नमोस्तु।

सरल कुटी, 293, गढ़ा फाटक
जबलपुर (म.प्र.)

'ज़ाहिद की ग़ज़लें साहित्य जगत में उपलब्धि

—डॉ. के.एल. जैन (डी.लिट्)

'ग़ज़ल' विद्या फारसी साहित्य की देन है। इसका प्रयोग सर्वप्रथम 'उर्दू' साहित्य में हुआ। इसके माध्यम से 'ग़ज़ल' को लिखने वाला अपने अन्त:करण की उन मार्मिक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है जो हृदयविदारक हुआ करती हैं। 'ग़ज़ल' के दो रूप मुख्य रूप से देखने को मिलते हैं एक 'इश्क़ हक़ीकी' का और दूसरा 'इश्क़ मिज़ाजी' का। इश्क़ हक़ीकी के माध्यम से ग़ज़लकार उस 'खुदा' या 'रब' के बारे में अपने अंतर्मन की अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है तथा इश्क मिज़ाजी के अंतर्गत ग़ज़लकार इश्क, प्रेम, मुहब्बत तथा सौन्दर्य के नाना रूपों को अनुभूत कर उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान करता है। काल प्रवाह के अनुसार धीरे-धीरे ग़ज़ल का रूप परिवर्तित होता गया और इसमें अनेक विषय जुड़ते गए, जैसे-सामाजिक, राजनैतिक विसंगतियाँ, मूल्यों का विघटन, सम्बन्धों का ह्रास, स्वार्थ की संकीर्णताएँ, अज्ञानता, मोहमाया के बंधन आदि। अब ग़ज़ल ने अपने दायरे को विस्तृत कर लिया है। अब यह केवल उर्दू साहित्य की बानगी न रहकर हिन्दी में भी प्रयुक्त होने लगी है जिसके कारण इसका व्यापक प्रभाव लोगों पर पड़ा है।

हिन्दी कवियों के द्वारा जब 'ग़ज़ल' का प्रयोग किया जाने लगा तो उसके आयामों में विस्तार हुआ और यह विस्तार इतना अधिक हुआ कि संत महात्माओं ने भी समय के अनुसार इस 'ग़ज़ल' को अपनी काव्यात्मक अनुभूतियों का आधार बनाया। जब 'ग़ज़ल' के स्वर शब्द-चित्रों के माध्यम से इन संतों की वाणी द्वारा पृष्ठांकित हुए तो उसमें एक अलग सोच, सार्थक चिंतन, धर्म, अध्यात्म और दर्शन के साथ व्यक्ति और समाज के लिए जो दिशा और दृष्टि प्रदान की गई उसे लोगों ने उन्मुक्त कंठ से सराहा।

समकालीन समय के बहुचर्चित युवाचार्य परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज जिन्होंने साधना के शीर्ष सोपानों को पार कर अनुभूतियों की पूँजी संजोयी है, ऐसे तपस्वी संत ने 'ग़ज़ल' के माध्यम से अपने भावों को अभिव्यक्त करने का जो सार्थक प्रयास किया है वह पाठकों और सुधी श्रावकों के लिए 'सजग और चेतनशील' बनाने के लिए संजीवनी की तरह कार्य करेगा। उनकी इन ग़ज़लों को पढ़कर ऐसा लगता है कि ग़ज़लकार ने जीवन के उस सत्य को बहुत करीब से देखा है जिस सत्य की अनुभूति लोगों को ताज़िन्दगी भटकते रहने के बावजूद भी नसीब नहीं

होती। 'संत' यथार्थ की उन गलियों में मस्ती से घूमा है जिसे गृहस्थ जानकर भी अनजान बने रहने का भ्रम संजोए रखता है। स्वार्थ के तंग रास्तों में भटकते-भटकते जब लोग हताश और निराश हो जाते हैं तब उस 'रब' को याद करते हैं। पश्चाताप् की अनुभूति को आचार्यश्री कितनी सहजता के साथ बयान कर देते हैं–

''अपनी ही राह में काँटे बोए
आँख हँसती रही नादानी में''

आचार्य श्री की 150 ग़ज़लों का यह संग्रह मानव जीवन के उन विविध प्रसंगों की प्रामाणिक अनुभूतियों के जीवंत और सारग्राही स्वरूप की उस थाती को अपने में समेटे हुए है जो अनुपम और अद्वितीय है। जीवन से हताश, निराश, उदास, आहत, दु:खी संतप्त, चिंतित और बेचैन मानव को यह 'कृति' ऐसा 'सुकून' प्रदान करती है जो इस भौतिक संसार में कदापि सम्भव नहीं। आचार्यश्री ने इन ग़ज़लों में उर्दू, अरबी और फारसी भाषा के शब्दों का जिस सलीके से प्रयोग किया है वह उनकी काव्यात्मक प्रतिभा को मानक रूप से परिचित कराता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी आचार्यश्री की वाणी में जो तेज, ओजस्व, प्रखरता और चुम्बकीय आकर्षण है वह विरले ही संतों में देखने को मिलता है। यह कृति **'ज़ाहिद की ग़ज़लें'** साहित्य जगत में एक अनूठी हलचल पैदा करने में समर्थ होगी। सुधी श्रावक और प्रबुद्ध पाठक इसको अवश्य पढ़ें उन्हें इस कृति से अनूठा लाभ होगा और वे इस नश्वर जगत् में उस शाश्वत् की अनुभूति भी सहजता से कर सकेंगे, ऐसा सुफल विरलों को ही प्राप्त होता है।

–प्राचार्य, शा. कन्या महाविद्यालय
टीकमगढ़ (म.प्र.)

आद्याक्षर

भारतवर्ष की सनातन संस्कृति के महोन्नत भाल पर दैदीप्यमान तिलक की भाँति चारुत्व को प्राप्त दिगम्बर जैन श्रमण परम्परा सदैव से आर्यजनों द्वारा शेषाक्षत की भाँति वंदनीय रही है। महानता को सही मायनों में जीवंत करनेवाले महनीय तपोधनों की गुणाढ्य संतति में समय-समय पर अनेकों धुरंधर जैनाचार्यों का उद्भव हुआ जिन्होंने अपनी दर्पणसम अविकार वृत्ति, अनुत्तम ज्ञान साधना एवं सुरोपासित अटल श्रद्धान् के द्वारा समय के पटल पर अपनी यश प्रशस्तियाँ अंकित की हैं। इन्हीं महात्माओं के सुवंश में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व से 21वीं सदी को गौरवान्वित करनेवाले चर्या और चिंतन के धनी, साधनापथ पर कदम-दर-कदम अपनी साधना से अनुमार्गियों के लिये नूतन प्रकाश स्तम्भ स्थापित करनेवाले श्रमणकुल से वंदनीय, देव कुलार्चनीय परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज एक असाधारण चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी आचार्य हैं। जिनकी परम वीतरागी सौम्यमुद्रा का दर्शन मात्र ही भव्यों के जीवन में वैराग्य का अंकुरण करनेवाला है। आपके वात्सल्य, अनुशासन और निर्दोष चर्या से प्रभावित हो अनेकों शिवेक्षु आत्मविज्ञान के साथ मोक्षमार्ग की साधना में आपके सुपथगामी हुये हैं। आपके श्रेष्ठ निर्यापकाचार्यत्व में अनेकों श्रमण-श्रमणी एवं भव्य मुमुक्षुओं ने सल्लेखना पूर्वक उत्तम समाधि की साधना की है।

जिनका दिव्य पादमूल श्रेष्ठतम वरदानों का आनंद स्थल है, ऐसे प्रज्ञामनीषी पूज्य आचार्यश्री का यशोमयी सृजत्व भी युगपरिवर्तन की ऊर्जा से सम्पन्न है, जो दिग्भ्रमित जनमानस को समीचीन पथ का पाथेय प्रदान करता है। पूज्य आचार्य प्रवर ने अपने साहित्य में हर दृष्टिकोण से धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, पारिवारिक और मानवीय मूल्यों के समुन्नयन का संपुट प्रदान किया है। पूज्यश्री के साहित्य के हर पृष्ठ पर होती है सरसता, हर लाइन में पिरो देते हैं वो रोचकता, हर शब्द करता है अंतस् को आन्दोलित और अक्षर-अक्षर में छिपा होता है जीवन विकास का परम संदेश।

''**जीवन है पानी की बूँद**'' **महाकाव्य–**पूज्यश्री की लेखनी से सन् 1997, भिण्ड में हिन्दी काव्यजगत का सर्वाधिक लोकप्रिय, कुरल शैली का महाकाव्य 'जीवन है पानी की बूँद' सृजित हुआ। आचार्य भगवन् की मूल कृति यह महाकाव्य इतना अधिक लोकप्रिय है कि देश–विदेश में जैन समुदाय का कोई भी धार्मिक, सामाजिक या सांस्कृतिक कार्यक्रम हो, जबतक उसमें इस अमर काव्य की पंक्तियाँ न गुनगुनाई जायें तबतक वह अनुष्ठान अधूरा–सा प्रतीत होता है।

दिगम्बर एवं श्वेताम्बर परम्परा के अनेकों साधु भगवंत, त्यागीवृन्द, विद्वान् और संगीतकार इस महाकाव्य पर नूतन–नूतन हजारों छंद लिखकर अपनी काव्य प्रतिभा को धन्य कर रहे हैं, यह इस कालजयी महाकाव्य की लोकप्रियता का एक सशक्त उदाहरण है। इस महाकाव्य पर अनेकों शोधार्थी P.H.D. कर रहे हैं। पूज्यश्री के इस महाकाव्य पर देश के मूर्धन्य जैन, अजैन विद्वानों एवं साहित्यकारों द्वारा अनेक विद्वत् संगोष्ठियाँ सम्पन्न की जा चुकी हैं।

हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, उर्दू, अंग्रेजी, राजस्थानी, हाड़ौती, बुंदेली, अवधि, आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता एवं हिन्दी के साथ–साथ प्राकृत, संस्कृत, उर्दू आदि अनेक भाषाओं में साधिकार कलम चलानेवाले, संत परम्परा के वरिष्ठ साहित्यकार परम पूज्यनीय भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज द्वारा जहाँ एक ओर जैनदर्शन के अनेकों मूलग्रंथों का मौलिक छंदों में पद्यानुवाद कर आचार्य भगवन् कुंदकुंद और पूज्यपाद की परम्परा को पुष्ट किया गया है वहीं दूसरी ओर उनकी लेखनी से सृजित सैकड़ों बोधप्रद कवितायें, आध्यात्मिक भजन एवं सवैया, मुक्तक, हाइकू, नई कविता आदि अनेक विधाओं पर सैकड़ों प्रकीर्णक रचनायें हिन्दी काव्य परम्परा के कोष की समृद्धि बन पड़ी हैं। सिर्फ हिन्दी ही नहीं पूज्य आचार्यश्री ने उर्दू में साधिक 200 गजलों का प्रणयन कर उर्दू साहित्य में भी अद्भुत कीर्तिमान स्थापित किया है।

अभीक्ष्ण ज्ञान साधना का अमृतफल 'अप्पोदया' प्राकृत टीका– श्रुत संवर्धन के लिये समर्पित पूज्य आचार्यश्री की प्रज्ञ लेखनी ने पूज्य आचार्य

भगवन् श्री अमितगति स्वामी कृत सहस्र वर्ष प्राचीन 'श्री योगसार प्राभृत' ग्रंथ पर प्राकृत भाषा में ''**अप्पोदया**'' नामक सहस्र पृष्ठीय वृहद् टीका का सृजन कर श्रुत संस्कृति के क्षेत्र में एक स्वर्णिम इतिहास रचा है। देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं श्रमण जगत के द्वारा समादृत आपकी यह ''**अप्पोदया**'' प्राकृत टीका अध्यात्म का एक वृहद् कोष है, जो आपकी अभीक्ष्ण ज्ञान साधना का ही अमृतफल है।

बहु आयामी व्यक्तित्त्व के धनी पूज्य गुरुदेव के विराट कृतित्त्व में अनेक विधायें केली करती हैं। पूज्य आचार्यश्री ने जहाँ एक ओर अपने लेखन से आरातिय श्रुत को बल प्रदान किया है, वहीं दूजी ओर '**विमर्श लिपि**' एवं '**विमर्श अंकलिपि**' का सृजन कर समुचि श्रमण संस्कृति का मस्तक ऊँचा किया है। साथ ही पूर्णत: मौलिक शब्द, व्याकरण आदि से सम्पन्न नवीन भाषा '**विमर्श एम्बिसा**' का निर्माण कर आपने इतिहास के पृष्ठों पर एक अमिट लेख लिख दिया है। आपकी इस अद्भुत कृति के लिये **थैम्स यूनिवर्सिटी फ्रांस** द्वारा आपको **डी.लिट्** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

जैन एकता के लिये दिव्यावदान– पूज्य आचार्यश्री ने ''**जिनागम पंथ जयवंत हो**'' का नारा देकर संतवाद, पंथवाद और जातिवाद के नाम पर बिखरती जैन संस्कृति को एकता के सूत्र में बाँधने का स्तुत्य कार्य किया है।

पूज्य आचार्यश्री का काव्य सर्जना में श्रम कौशल वरेण्य है। आपकी एक प्रेरक काव्य रचना ''**देश और धर्म के लिये जिओ**'' को मध्यप्रदेश शिक्षा बोर्ड द्वारा कक्षा–11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक '**मकरन्द**' के पाठ्यक्रम में एवं '**एक सुखद अनुभूतियों का एहसास 'माँ'** यह रचना कक्षा 8 की एटग्रेट अभ्यास पुस्तिका '**भाषा भारती**' में प्रकाशित किया गया है, यह श्रमण संस्कृति के स्वाभिमान का विषय है।

सिद्धक्षेत्र श्री अहारजी में आपश्री को अपनी निर्मल साधना से पंचमकाल में दुर्लभतम श्री शान्तिभक्ति की महान् सिद्धि प्राप्त हुई, जिससे प्रभावित हो यक्षों द्वारा की गई महापूजा और नाम दिया गया '**भावलिंगी**

संत' एवं '**अहार जी के छोटे बाबा**'। यह सम्पूर्ण कथानक आपकी सच्ची भावसाधना का अमिट शिलालेख है।

दिगम्बर श्रमण परम्परा के महान प्रतिष्ठाचार्य, पूज्य आचार्य भगवन् जैसे महान् संत जगत में विरलप्राय: हैं। अनेकान्तिनी प्रतिभा के ससक्त हस्ताक्षर, प्रेम, दया, करुणा, वात्सल्य की अपरिसीम संवेदनाओं से छलकता हृदय, सरलता और सहजता का प्रतिनिधित्व करता जीवन, महानता के सर्वोच्च शिखर पर लघुता के स्वर ये पूज्य आचार्यश्री के जीवन की कुछ ऐसी दुर्लभतम विशेषतायें हैं जो उन्हें सहज ही आम संतों की भीड़ में एक जुदा संत की पहिचान देती हैं।

परम पूज्यनीय शुद्धोपयोगी संत सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज के अग्रगण्य शिष्यों में परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज एक अद्वितीय प्रतिभाशील सहज साधक हैं। गुरुआज्ञा, अनुशासन और स्वयोग्यता से आपने अपनी निर्वाण दीक्षा के 25 वर्षों में जो कद प्राप्त किया है, वहाँ तक कोई विरला संत ही पहुँच पाता है। आपने अपनी साधनाकाल के विगत 27 वर्षों में पूरे देश में परिभ्रमण कर अनेकों पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें, वेदी प्रतिष्ठायें, श्री कल्पद्रुम, समोशरण, इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र आदि वृहद् स्तरीय विधान, अनेक जिनालयों का जीर्णोद्धार, संत शालाओं का निर्माण, जिनागम पंथ ग्रंथालयों की स्थापना आदि कराके **जिनागम पंथ** का ध्वज घर-घर में स्थापित किया है।

पूज्य आचार्यश्री कहते हैं- जिनवाणी हमारी माँ है, उसपर मूल्य अंकित कर उसका विक्रय नहीं करना चाहिए। जिनवाणी का विक्रय करने से ज्ञानावरणी कर्म का आस्रव-बंध होता है। अत: पूज्य आचार्यश्री की प्रेरणा से ''**जिनागम पंथ ग्रंथमाला**'' की स्थापना की गई है। इस ग्रंथमाला से प्रकाशित साहित्य साधु भगवंतों एवं स्वाध्यायी जनों के लिये नि:शुल्क भेंट किया जाता है। आचार्यश्री की यह सद्प्रेरणा निश्चित ही समाज को नया चिंतन एवं नई दिशा देगी।

आपके शुभाशीष से "**राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)**" एवं "**जिनागम पंथी श्रावक संघ**" ये दो संगठन देशभर में मानव सेवा, देशसेवा और धर्म प्रभावना के क्षेत्र में समाज की महत् उपलब्धि बन चुके हैं।

आपके सानिध्य में आयोजित, जिनागम शिक्षण शिविर, विमर्श कैम्प, पूजन प्रशिक्षण शिविर (आनंद महोत्सव), विद्वत् संगोष्ठियाँ, साहित्यकार सम्मेलन, मंच के सेमिनार आदि के माध्यम से समाज में संस्कारों का शंखनाद किया जा रहा है।

आपकी रजत साधना के ये पच्चीस वर्ष निश्चित रूप से देश, समाज, धर्म और समुचि मानवता के लिये किसी दिव्य वरदान से कम नहीं है।

अत: आपके "**रजत संयमोत्सव**" एवं "**स्वर्णिम विमर्श उत्सव**" के अवसर पर अखिल भारतीय शास्त्री परिषद्, विमर्श गुरुभक्तों एवं शिष्यों ने यह भाव सँजोया है कि आपका समूचा साहित्य प्रकाशित हो ताकि जन-जन आपके अवदान से लाभान्वित हो सकें, साथ ही कुछ प्राचीन आचार्यों के मूल ग्रंथों के प्रकाशन का भी बीड़ा उठाया है। यह समूचा साहित्य प्रकाशन का कार्य "**जिनागम पंथ ग्रंथमाला**" के तहत सम्पन्न किया जा रहा है। पूज्य आचार्यश्री का यह साहित्य जन-जन के मन को आलोकित करता रहे। इसी सुमंगल भावना के साथ शब्द विराम।

चूँकि ग्रंथ प्रकाशन में संशोधन एवं संपादन का कार्य अत्यंत श्रमसाध्य है, पूज्य गुरुदेव के इस पावन युगल प्रसंग पर प्रकाशित सभी शास्त्रों की प्रूफ रीडिंग एवं साजसज्जा के कार्य में संघस्थ मुनिराज, आर्यिका मातायें, त्यागी व्रती एवं विद्वत् वर्ग ने अपना अमूल्य समय देकर श्रुतसेवा के इस कार्य में श्लाघनीय योगदान दिया है, जो उनकी गुरुभक्ति और श्रुतभक्ति का अनुपम उदाहरण है। **जिनागम पंथ ग्रंथमाला** एवं **ग्रंथ प्रकाशन समिति** आप सभी के प्रति हृदय से आभार ज्ञापित करती है।

परिचय की वीथिकाओं में

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	:	श्री राकेश कुमार जैन
पिता	:	पं. श्री सनत कुमार जैन (दो प्रतिमाधारी, समाधिस्थ)
माता	:	श्रीमती भगवती जैन (आपके ही कर कमलों से दीक्षित एवं समाधिस्थ पू.आर्यिका विहान्तश्री माताजी)
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	:	15 नवम्बर, 1973, दिन : गुरुवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	:	दो (अग्रज–राजेश जैन, अनुज–चक्रेश जैन)
भगिनी	:	दो (अग्रजा–श्रीमती कमला जैन, अनुजा–बा.ब्र. महिमा दीदी (वर्तमान में–आर्यिका विवंदिताश्री माताजी)
विवाह	:	बाल ब्रह्मचारी
खेल	:	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता—दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	:	मंत्री— श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	:	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	:	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणा भाव	:	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुये। आचार्यश्री की वात्सल्यता ने अत्यंत प्रभावित किया। (सन्–1995, स्थान–मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार : आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैयावृत्ति के समय आजीवन आलू, प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत : आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए

सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान् शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, दिनांक 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा : आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान- क्षेत्रपाल जी ललितपुर (उ.प्र.), दिनांक 3 अगस्त 1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा: फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागरजी।

मुनि दीक्षा : पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनिदीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित: आचार्यश्री विरागसागरजी ने 13 फरवरी 2005, रविवार को कुन्थुगिरी में गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छिओं के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार : मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067, रविवार, दिनांक 12 दिसम्बर 2010 को बांसवाड़ा (राजस्थान) में आचार्यश्री विरागसागरजी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

शान्ति भक्ति की सिद्धि : 25 दिसम्बर 2015, सिद्धक्षेत्र अहार जी में भगवान् श्री शान्तिनाथ स्वामी के अतिशयकारी पादमूल में, संघस्थ बा.ब्र. विशु दीदी (वर्तमान में-आर्यिका विमर्शिता श्री माताजी) की असाध्य बीमारी (रोग) से करुणान्वित हो पूज्य गुरुदेव ने जब लगभग 1400 वर्ष प्राचीन आचार्य पूज्यपाद स्वामी रचित शान्त्यष्टक का भावपूर्वक पाठ किया तो देखते ही देखते क्षण मात्र में दीदी असाध्य रोग से मुक्त हो गईं। तब क्षेत्र के यक्ष-यक्षणियों द्वारा गुरुदेव की महापूजा की गई और सूचित किया कि आपको अपनी निर्मल साधना से इस पंचमकाल में दुर्लभतम शान्ति भक्ति की सहज ही सिद्धि प्राप्त हुई है। साथ ही पूज्य गुरुदेव को **'भावलिंगी संत', 'अहार जी के छोटे बाबा', 'शान्तिप्रभु के लघुनंदन'** आदि संज्ञायें प्रदान कीं।

शब्दालंकार : रत्नत्रय के ऊर्जस्वी और तेजस्वी अलंकारों से जिनकी आत्मा का एक-एक प्रदेश अलंकृत है। सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की दिव्य रश्मियों से आलोकित पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महामुनिराज का विराट व्यक्तित्व किन्हीं शब्दालंकारों का मोहताज नहीं है। फिर भी जगह-जगह की धर्मप्राण-समाजों, ऊर्जस्वी संगठनों एवं यशस्वी व्यक्तियों

ने नाना अवसरों पर अपने मनोभावों को शब्दों में समेट कर गुरुचरणों में कई शब्दालंकार प्रस्तुत किये हैं और अपना सौभाग्य माना है।

वात्सल्य शिरोमणि– संत के जीवन का सबसे प्रभावी गुण होता है उसका अकृत्रिम वात्सल्य भाव, पूज्य गुरुवर को यह वात्सल्य की अमूल्य सम्पदा, गुरु परम्परा से विरासत में ही प्राप्त हुई है, वर्षायोग 2008 के उपरान्त उत्तरप्रदेश के आगरा नगर में पंचकल्याणक के अवसर पर आगरा समाज ने आपके वात्सल्य से प्रभावित होकर आपको "**वात्सल्य शिरोमणि**" के अलंकार से विभूषित किया।

श्रमण गौरव– प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज की अनुशासन के सुडौल साँचे में ढली निर्दोष श्रमण चर्या वर्तमान में श्रमण जगत को गौरवान्वित करती है, पूज्य श्री की आगमानुसारी चर्या से प्रभावित होकर एटा–2009 वर्षायोग में शाकाहार परिषद ने आपको "**श्रमण गौरव**" की उपाधि से अलंकृत किया और अपना सौभाग्य बढ़ाया।

वात्सल्य सिन्धु– वात्सल्य और करुणा के दो पावन तटों के बीच प्रवाहित गुरुवर की जीवन मंदाकिनी जनमानस की सतह पर बिखरी घृणा, बैर, कटुता की कलुषता को सहज ही धो डालती है। पूज्यश्री के इसी गुण आकर्षण से अनुग्रहीत हो, एटा वर्षायोग–2009 में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर राजेश जैन गीतकार आदि कवि समूह ने गुरुवर को "**वात्सल्य सिन्धु**" का भाव वंदन अर्पित कर सौभाग्य माना।

आचार्य पुंगव– संतवाद, पंथवाद, जातिवाद और ग्रंथवाद की वैचारिक संकीर्णताओं से असम्पृक्त पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की सिर्फ चर्या ही अनुकरणीय नहीं, अपितु उनका चतुरानुयोग का निर्मल ज्ञान भी ज्येष्ठ है। ऐसे ज्ञान और चर्या में श्रेष्ठ संत के महिमावंत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर पूज्य गुरुदेव की गृहनगरी जतारा जैन समाज ने पंचकल्याणक 2012 के अवसर पर आपको "**आचार्य पुंगव**" की उपाधि से भूषित कर अपना मान बढ़ाया।

राष्ट्रयोगी– पूज्य गुरुवर का "**वैचारिक वैभव**" सिर्फ जैनों तक सीमित नहीं अपितु हर जाति का व्यक्ति उसे अपनी विरासत मानता है। अत: बिजयनगर (राज.) वर्षायोग–2012 में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित "दिव्य संस्कार प्रवचन माला" में आपके राष्ट्रोन्नति से समृद्ध उपदेशों को सुनकर आपको "**राष्ट्रयोगी**" का अलंकार समर्पित किया गया।

सर्वोदयी संत– पूज्य आचार्यश्री की निर्भीक शैली जनमानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तभी तो पूज्यवर के प्रवचनों में जैनों के साथ–साथ अजैन भी देशना को सुनकर आनंदित होते हैं, आपके उपदेशों में प्राणीमात्र के उदय की दिव्य चमक नजर आती है, तभी तो बिजयनगर (राज.) दिगम्बर जैन समाज ने 2012 वर्षायोग में आपको "**सर्वोदयी**

संत'' की उपाधि से नवाजा।

प्रज्ञामनीषी— श्रुताराधना के अनुपम आराधक, जिनेन्द्रवाणी के गहन प्रचारक, वाणी और कलम के अनूठे जादूगर पूज्यश्री की तीक्ष्ण प्रज्ञा और निर्मल ज्ञान से प्रभावित होकर, अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन बिजयनगर (राज.)- 2012 में कविगण एवं भारत विकास परिषद द्वारा आपको ''**प्रज्ञामनीषी**'' की उपाधि से विभूषित किया गया।

राष्ट्रहितैषी— उत्तरप्रदेश के एटा नगर में स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव के राष्ट्रहित में समर्पित देशोन्नति परक अमूल्य चिंतन से प्रभावित हो **विश्व हिन्दू परिषद्** द्वारा सन् 2013 में आपको ''**राष्ट्रहितैषी**'' अलंकरण से अलंकृत किया गया।

आदर्श महाकवि— सम्प्रतिकाल में कुरल शैली का सैकड़ों विषयों को हृदयंगम करनेवाला अमर महाकाव्य ''**जीवन है पानी की बूँद**'' के शब्दशिल्पी, भजन, ग़ज़ल, मुक्तक, कविता, नई कविता, पद्यानुवाद, सवैया आदि अनेक जटिल विधाओं पर साधिकार कलम चलानेवाले परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के अपूर्व काव्यात्मक अवदान से प्रेरित हो, 14 नवम्बर 2016 को अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन में, देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य कवियों ने सुरेश 'पराग' के नेतृत्व में एवं पं. संकेत जी के मार्गदर्शन में सकल जैन समाज देवेन्द्रनगर की गरिमामयी अनुमोदना के संग पूज्यश्री को ''**आदर्श महाकवि**'' का अलंकरण भेंट कर निज सौभाग्य वर्धन किया।

चारित्र रथी— आत्मप्रदेशों में सच्चे भावलिंग की प्रतिष्ठा कर, आत्मरति और परविरति के साथ चारित्र रथ पर सवार हो पूज्य गुरुदेव आत्मोत्थान के सुपथ पर अबाध रीति से वर्धमान हैं। आपकी इस आत्मोन्नयन की निष्पंक चारित्र साधना से प्रभावित हो देश के वरिष्ठ साहित्यकार **श्री सुरेश 'सरल' जी** ने बिजयनगर चातुर्मास 2012 में आपको ''**चारित्र रथी**'' का अलंकरण भेंट कर स्व गौरववर्धन किया।

जिनागम पंथ प्रवर्तक — वर्तमान में पंथवाद, संतवाद और जातिवाद के नाम पर बिखरती दिगम्बर जैन समाज में अनादि अनिधन ''**जिनागम पंथ**'' का उद्घोष कर पूज्य गुरुदेव ने जैन एकता के लिये एक महनीय कार्य किया है। पूज्य गुरुदेव के इस ''**जैन यूनिटी मिशन**'' से प्रभावित हो सन् 2020 में श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं गजरथ महोत्सव के सुप्रसंग पर बा.ब्र. ऋषभ भैया (नागपुर) के मार्गदर्शन में सकल दिगम्बर जैन समाज, बाराबंकी ने आपको ''**जिनागम पंथ प्रवर्तक**'' का अलंकरण भेंट कर आपके इस अभिनंद्य प्रयास की अभ्यर्थना की।

राष्ट्रगौरव— परम पूज्य भावलिंगी संत राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज का अनुत्तम वैदुष्य जहाँ एक ओर धर्मनीति की प्रतिष्ठा करता है वहीं दूसरी ओर आपका क्रान्तिनिष्ठ मौलिक चिंतन, राजनीति, न्याय-नीति, मानव सेवा, शाकाहार, गौरक्षा, लोकतंत्र, पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों के प्रति जन जागरण कर संपूर्ण देश के लिये गौरव का विषय बन पड़ा है। पूज्य गुरूदेव के दिव्यावदानों से आज समुचा देश गौरवान्वित

है। इसीलिये महमूदाबाद चातुर्मास 2021 में सम्पूर्ण अवध प्रान्त की जैन समाज की गरिमामयी उपस्थिति में कला और साहित्य की अखिल भारतीय संस्था **''राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ''** के अनुसांगिक संगठन **''संस्कार भारती''** की ओर से माननीय श्री गिरीशचन्द्र मिश्र, राज्यमंत्री, उत्तरप्रदेश शासन द्वारा पूज्य गुरुदेव को **''राष्ट्रगौरव''** का अलंकरण भेंट किया गया।

सौम्यमूर्ति— सौम्यता संत की साम्यता का प्रतिदर्श है, संत जितना साम्यता को प्राप्त होता जाता है, उसकी साधना में उतनी ही सौम्यता झलकने लगती है। परम पूज्यनीय भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज सौम्यता की प्रतिमूर्ति हैं। पूज्य आचार्य प्रवर की सौम्य चर्या से अभिभूत सकल दिगम्बर जैन समाज एटा द्वारा स्वर्णिम विमर्श उत्सव (15/11/2022) के पावन प्रसंग पर आपको **''सौम्यमूर्ति''** अलंकरण से संबोधित कर स्वयं का सौभाग्यवर्धन किया गया।

आचार्यरत्न— निर्वाण दीक्षा की मात्र 7 वर्षों की निर्मल साधना का ही प्रतिफल था जो दीक्षा गुरु प.पू. सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज द्वारा आपको देश के 14 बड़े आचार्य एवं 200 पिच्छीधारी साधुओं की गरिमामयी उपस्थिति में आचार्य पद की घोषणा की गई। यह श्रमण परम्परा के लिये एक स्वर्णिम अध्याय का श्रीगणेश था। सम्प्रति द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव की जटिलताओं के मध्य अपने चिंतन के हाइटेक संरक्षण से चतुर्विध संघ के उन्नयन, संवर्धन एवं मार्गदर्शन में आपका कोई शानी नहीं। आचार्य पद की विराट गरिमा से सम्पन्न आपके महनीय व्यक्तित्त्व से प्रभावित होकर सकल दिगम्बर जैन समाज आगरा एवं दिगम्बर जैन परिषद् आगरा द्वारा आपके **'रजत संयमोत्सव'** पर आपको **''आचार्यरत्न''**अलंकरण प्रदान किया गया।

बुंदेलखण्ड गौरव—बुंदेलखण्ड की पुण्यकोख से अनेक जैन-जैनेतर संतों ने जन्म लेकर इस भूमि का मानवर्धन किया है। इसी संत श्रृंखला में एक स्वर्णिम कड़ी जोड़ने वाले दिगम्बराचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज हैं। जिनके सृजन में लीक से हटकर कुछ नया करने का जज्बा है, जिनके कृतित्त्व ने आज पूरे विश्व में श्रमण परम्परा को प्रतिष्ठा दिलाई है, ऐसे महान संत के अविस्मरणीय अवदानों से सिर्फ जन्मभूमि जतारा ही नहीं पूरा बुंदेलखण्ड गौरववंत है। आचार्य भगवन के **'रजत संयमोत्सव'** पर जतारा जैन समाज सहित बुंदेलखण्ड की समस्त दिगम्बर जैन समाज द्वारा आपको **''बुंदेलखण्ड गौरव''** शब्दालंकरण भेंट किया गया।

साहित्यिक यात्रा

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज सौम्यवदन, गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य पाठ संग्रह –

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. मानतुंग के मोती
3. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
4. गीताञ्जलि (भजन)
5. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
6. जीवन है पानी की बूँद (भाग–1)
7. जीवन है पानी की बूँद (भाग–2)
8. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
9. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
10. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
11. समर्पण के स्वर (काव्य)
12. आईना (काव्य)
13. सोचता हूँ कभी–कभी (काव्य)
14. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
15. वाह क्या खूब कही (काव्य)
16. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
17. आओ सीखें जिनस्तोत्र
18. चटपटेप्रश्न–स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)
19. उपासक संस्कार

प्रवचन साहित्य :

1. रयणोदय (प्रथम भाग)
2. रयणोदय (द्वितीय भाग)
3. रयणोदय (तृतीय भाग)
4. रयणोदय (चतुर्थ भाग)
5. रयणोदय (पंचम भाग)
6. योगोदय (प्रथम भाग)
7. योगोदय (द्वितीय भाग)
8. उपासकोदय (प्रथम भाग)
9. उपासकोदय (द्वितीय भाग)
10. देशव्रतोदय
11. साम्योदय (प्रथम भाग)
12. साम्योदय (द्वितीय भाग)
13. रत्नोदय (प्रथम भाग)
14. ज्ञानोदय
15. इष्टोदय (प्रथम भाग)
16. इष्टोदय (द्वितीय भाग)
17. दानोदय
18. गूँगी चीख
19. भरत जी घर में वैरागी
20. शब्द शब्द अमृत
21. शंका की एक रात

प्रेरक साहित्य :

1. जनवरी विमर्श
2. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
3. विमर्श हस्ताक्षर

ग़ज़ल संग्रह :

ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान :

1. आचार्य विरागसागर विधान
2. एकीभाव विधान
3. श्री भक्तामर विधान (3)
4. विषापहार विधान

5. श्री कल्याण मंदिर विधान 6. श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका : योगसार प्राभृत ग्रंथ पर :

1. अप्पोदया (प्राकृत टीका) 2. आत्मोदया (हिन्दी टीका)

महाकाव्य :

"जीवन है पानी की बूँद" (महाकाव्य)– पूज्य गुरुदेव इस अमर महाकाव्य के मूल रचयिता है। पूज्यश्री के इस बहुचर्चित महाकाव्य पर अनेकों साधु-भगवंत, विद्वान् एवं संगीतकार बहुसंख्या में नवीन छंदों का सृजन कर अपनी काव्य प्रतिभा को धन्य कर रहे हैं, जो इस महाकाव्य की लोकप्रियता का अनुपम उदाहरण है।

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

भाषा : विमर्श एम्बिसा

प्राकृत साहित्य : 1. शुद्धप्पाणुवेक्खा 2. सरूव शुदि 3. योगसार प्राभृत (प्राकृत छाया)

पद्यानुवाद:

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभू स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र
14. रयणसार
15. योगसार
16. उपासक संस्कार
17. देशव्रतोद्योतन
18. ज्ञानांकुश
19. दानोपदेश

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शान्तिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-आचार्य विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर जी के कृतित्त्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय – राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)

5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

- **आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला**
- **जिनागम पंथ ग्रंथमाला**

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन
प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक, नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ौत-2014)
4. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ा मलहरा-2016)
5. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर-2016)
6. समसामयिक राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (जबलपुर-2017)
7. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत '**रयणोदय**' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (छिंदवाड़ा -2018)।
8. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत '**ज़ाहिद की ग़ज़लें**' कृति पर साहित्यकार सम्मेलन (छिंदवाड़ा-2018)
9. आचार्यश्री विमर्शसागर जी कृत '**रयणोदय**' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (दुर्ग-2019)।
10. आचार्य श्री विमर्शसागर जी कृत '**अप्पोदया**' प्राकृत टीका पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (गाजियाबाद-2022)
11. आचार्य श्री विमर्शसागर जी कृत '**अप्पोदया**' प्राकृत टीका पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (जतारा-2023)

आनन्द महोत्सव (पूजन प्रशिक्षण शिविर)– आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित '**आनन्द महोत्सव**' एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुड़े हैं। अभी तक 24 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं–

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोकनगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)

7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. बिजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)
18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
20. जबलपुर (म.प्र.)
21. लखनादौन (म.प्र.)
22. छिंदवाड़ा (म.प्र.)
23. दुर्ग (छत्तीसगढ़)
24. फतेहपुर (उ.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव–2002 (रजवांस, सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव–2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक, रथ महोत्सव–2004 (बूँदी, राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव–2007 (रामगंजमण्डी, कोटा ,राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक, रथोत्सव–2007 (कोटा, राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव–2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव–2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव–2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव–2012 (जतारा, म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव–2013 (तीर्थधाम आदीश्वरम् चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव–2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव–2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव–2015 (बैरवार, जतारा, म.प्र.)
14. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव–2018 (धनौरा, म.प्र.)
15. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, रथ महोत्सव–2021 (महमूदाबाद उ.प्र.)
16. आदिनाथ पंचकल्याणक रथोत्सव, 2024 (कृष्णानगर, दिल्ली)

चातुर्मास :

1. मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र.) — 1996
2. भिण्ड (म.प्र.) — 1997
3. भिण्ड (म.प्र.) — 1998
4. भिण्ड (म.प्र.) — 1999
5. महरौनी (उ.प्र.) — 2000
6. अंकुर कॉलोनी (सागर, म.प्र.) — 2001
7. सतना (म.प्र.) — 2002

8. अशोकनगर (म.प्र.) — 2003
9. रामगंजमण्डी (राज.) — 2004
10. सिंगोली (म.प्र.) — 2005
11. कोटा (राज.) — 2006
12. शिवपुरी (म.प्र.) — 2007
13. आगरा (उ.प्र.) — 2008
14. एटा (उ.प्र.) — 2009
15. डूंगरपुर (राज.) — 2010
16. अशोकनगर (म.प्र.) — 2011
17. बिजयनगर (राज.) — 2012
18. भिण्ड (म.प्र.) — 2013
19. बड़ौत (उ.प्र.) — 2014
20. टीकमगढ़ (म.प्र.) — 2015
21. देवेन्द्रनगर (म.प्र.) — 2016
22. जबलपुर (म.प्र.) — 2017
23. छिंदवाड़ा (म.प्र.) — 2018
24. दुर्ग (छत्तीसगढ़) — 2019
25. बाराबंकी (उ.प्र.) — 2020
26. महमूदाबाद (उ.प्र.) — 2021
27. गाजियाबाद (उ.प्र.) — 2022
28. जतारा (म.प्र.) — 2023
29. कृष्णा नगर (दिल्ली) — 2024
30. सहारनपुर (उ.प्र.) — 2025

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती है। कम बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी, ''जिनागम पंथ प्रवर्तक'' आचार्यश्री पंथवाद-संतवाद-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करनेवाले आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देनेवाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार्य परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है। आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्त्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

-श्रमण विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

पूज्य गुरुदेव से संबंधित अन्य साहित्य

जीवनी साहित्य :

1. राष्ट्रयोगी : लेखक—श्री सुरेश 'सरल' जबलपुर (म.प्र.)
2. आँगन की तुलसी : लेखक—प्राचार्य श्री निहाल चन्द जैन, बीना (म.प्र.)
3. जतारा का ध्रुवतारा : लेखक—श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
4. भावलिंगी संत (महाकाव्य) : लेखक—श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
5. विमर्श धाम (महाकाव्य) : लेखक—पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र)
6. सर्वोदयी संत (महाकाव्य) : लेखक—श्री ज्ञानचन्द जैन 'दाऊ', सागर (म.प्र.)
7. विमर्श महाभाष्य : लेखक—पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
8. विमर्श वाटिका : लेखक—श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
9. विमर्श भक्ति शतक : लेखिका—श्रीमती स्मृति जैन 'भारत',अशोकनगर (म.प्र.)
10. विमर्श शतक, : लेखक—पं. ब्रजेन्द्र जैन, देवेन्द्र नगर (म.प्र.)
11. विमर्श वंदना : लेखक—कवि शशिकर 'खटका', राजस्थानी, विजयनगर (राज.)
12. विमस्समहाकव्वं (प्राकृत) : लेखक—डॉ. उदयचंद जैन, उदयपुर (राज.)

विधान :

1. आचार्य विमर्शसागर विधान : लेखक—श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
2. संकट मोचन तारणहारे-गुरु विमर्श विधान : लेखक-पं. संकेत जैन 'विवेक' देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
3. भावलिंग संत विधान : लेखक—श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)

स्मारिकायें :

1. विमर्श वारिधि (विजयनगर चातुर्मास 2012, स्मारिका)
2. विमर्श प्रवाह (बड़ौत चातुर्मास 2014, स्मारिका)
3. विमर्श गीतिका (टीकमगढ़ चातुर्मास 2015, स्मारिका)
4. विमर्शानुभूति (देवेन्द्रनगर चातुर्मास 2016, स्मारिका)
5. विमर्श वात्सल्य (जबलपुर चातुर्मास 2017, स्मारिका)
6. विमर्श प्रभा (छिंदवाड़ा चातुर्मास 2018, स्मारिका)

मासिक पत्रिका :

विमर्श प्रवाह (मासिक)
प्रधान संपादक—डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत)
संपादिका—डॉ. अल्पना जैन (ग्वालियर)
प्रबंध संपादक—डॉ. विश्वजीत जैन (आगरा)
संपादक—पं. सर्वेश शास्त्री, पं. संकेत जैन 'विवेक'

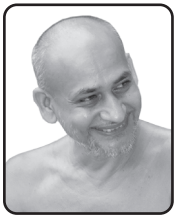

बहुचर्चित 'जीवन है पानी की बूँद' (महाकाव्य) का उद्भव मूल रचयिता की कलम से...

बात 1997 भिण्ड चातुर्मास की है–

सूरज गुनगुनी धूप लेकर क्षितिज पर चमकने लगा। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने विशाल संघ के साथ प्रभातकालीन आवश्यक भक्ति क्रिया से निवृत्त हो चुके थे। प्रतिदिन की भाँति परम पूज्य गुरुदेव अपने विशाल संघ के साथ नित्य क्रिया हेतु नसियाँ जी की ओर बढ़ते जा रहे थे।

पूज्य गुरुदेव के साथ मैं भी यथाक्रम ईर्यासमिति से चल रहा था और काव्य में रुचि होने के कारण चिंतन को आध्यात्मिक अनुभूतियों से स्नान करा रहा था। तभी अचानक चिंतन की गर्भस्थली में एक पंक्ति '**जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे**' का प्रसव हुआ, और मैं इस प्रसव की परमानंद अनुभूति का बारम्बार अनुभव करता हुआ स्मृति के दिव्य द्वार तक पहुँच गया। मैंने कभी 'होनी–अनहोनी' सीरियल देखा था, अत: होनी–अनहोनी शब्द को अपने काव्य में स्थान देने का विचार करता था, तभी अचानक नित्य क्रिया से लौटते समय चिंतन की गर्भस्थली से जुड़वाँ पंक्ति '**होनी–अनहोनी, हो–हो–2 कब क्या घट जाये रे**' का प्रसव हुआ। मैं दोनों जुड़वाँ पंक्तियों का अनुभव करता हुआ, अंतरंग में गुरु आशीष की श्रद्धा से भर गया। अत: इस आध्यात्मिक भजन को पूर्ण करने में उपयोग लगाया। भजन की पूर्णता होते ही मैं पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में पहुँचा और विनयपूर्वक अपना चिंतन मधुर स्वर में गुरु चरणों में समर्पित किया। सच कहूँ, गुरुदेव ने अत्यंत आह्लाद से भरकर मुझे शुभाशीष दिया। गुरु का वह मंगल आशीष ही है कि इस आध्यात्मिक भजन ने सभी के कंठ को स्पर्शित किया और इस समय का बहुचर्चित भजन कहलाया। जैन हों या अजैन सभी ने इसे समभाव से स्वीकारा और मुझे अत्यंत श्रद्धा और प्यार से '**जीवन है पानी की बूँद**' चिंतन के प्रणेता, इस नाम से पुकारने लगे।

यद्यपि इस भजन को जब अन्य साधु, विद्वान्, गीतकार, गायक, अपनी प्रशंसा के लिए अपनी रचना कहकर बोलने लगे, तब पूज्य गुरुदेव सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी को यह कहना पड़ा, कि '**जीवन है पानी की बूँद**' भजन तो विमर्शसागर जी की मूल गाथाएँ है जिस पर अन्य साधु, विद्वान्, गायक तो मात्र टीकायें लिख रहे हैं।

–श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे–ऽऽ
होनी–अनहोनी, हो–हो–2-कब क्या घट जाये रे ऽऽ

साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा–लेटा।
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा।
ख्वाबों में तू क्यों, हो–हो–2 आनन्द मनाये रे ऽऽ

अर्द्धमृतकसम वृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न–सिकुड़न।
गोदी में पोता–पोती, खोज रहा बचपन यौवन।
बीते जीवन के, हो–हो–2 तू गीत सुनाये रे ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी।
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी।
बेटा बहु सोचें, हो हो–2 डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी–बेटा है।
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है।
भूखा प्यासा ही, हो–हो–2 इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरहट में, पुण्य–पाप की करवट में।
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है।
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है।
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है।
देहरी से बाहर, हो–हो–2 वो साथ न जाये रे ऽऽ

कर तू प्रभु का ध्यान

रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

कर तू प्रभु का ध्यान–बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान–बाबा, निज घट में भगवान।।

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू वह, पलभर में मिल जायेगा।
खुद को तू पहिचान–बाबा, खुद को तू पहिचान।1।।

धन–वैभव यह महल–खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, साँझ समय मुरझायेगा।
कर ले धर्मध्यान–बाबा, कर ले धर्मध्यान।।2।।

कभी किसी का दिल दु:ख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मल्हम बन जायें, ऐसे बोल बड़े अनमोल।
कहलाता यह ज्ञान–बाबा, कहलाता यह ज्ञान।।3।।

माता–पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा।
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्तव्य कहा।
पाओगे सम्मान–बाबा, पाओगे सम्मान।।4।।

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो।
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो।
हो सम्यक् श्रद्धान–बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान।।5।।

राग–द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा।
गँवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा।
क्यों बनता नादान–बाबा, क्यों बनता नादान।।6।।

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी ना वह अपना।
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना।।
क्यों तू करे गुमान–बाबा, क्यों तू करे गुमान।।7।।

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मरकर देव हुआ तत्काल।
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल।
मिट जाये अज्ञान–बाबा, मिट जाये अज्ञान।।8।।

शान्तिनाथ कीर्तन

रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, भगवन्–2
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, शान्ति भगवन्।

हम आये हैं – द्वार तुम्हारे–2
दे दो प्रभु जी – हमको सहारे–2
शान्तिनाथ भगवन्–भगवन्–भगवन्ऽऽ
जय हो.....

छवि वीतरागी–प्यारी प्यारी लागे–2
दरश जो पाया–धन्य भाग जागे–2
चरणों करुँ नमन–नमन–नमनऽऽ
जय हो.....

सर्वज्ञ स्वामी–शरण में आया–2,
कहीं न मिला जो–वह सुख पाया
हर्षित हुए नयन–नयन–नयनऽऽ
जय हो.....

हित उपदेशी–आप कहाते–2
हम गुण गाने–भक्त बन जाते–2
छोड़ूँ न अब चरण–चरण–चरणऽऽ
जय हो.....

अहार जी के – बाबा कहाते–2
यक्ष यक्षिणी भी–सिर को नवाते–2
झुकते हैं मुनिगण–मुनिगण–मुनिगणऽऽ
जय हो.....

दुखिया हो कोई–द्वार पे आये–2
हँसता हुआ ही–द्वार से जाये–2
श्रद्धा हो पावन–पावन–पावनऽऽ
जय हो.....

ऋण मुक्ति का वर दीजिये

रचयिता : श्रमणाचार्य विमर्शसागर

गुरुदेव मेरे आप बस, इतनी कृपा कर दीजिए।
कल्याण अपना कर सकूँ, वरदान इतना दीजिए।।

सोचूँ सदा अपना सुहित, नहिं काम क्रोध विकार हो।
हे नाथ ! गुरु आदेश का, पालन सदा स्वीकार हो।
सिर पर मेरे आशीष का, शुभ हाथ प्रभु धर दीजिए। गुरुदेव...

दृढ़ शील संयम व्रत धरूँ, नित ब्रह्मचर्य लखूँ सदा।
सीता सुदर्शन सम बनूँ, निज आत्मसौख्य चखूँ सदा।
माता सुता बहिना पिता, दृष्टि विमल कर दीजिए। गुरुदेव...

सच्चा समर्पण भाव हो, नहिं स्वार्थ की दुर्गन्ध हो।
विश्वासघात ना हम करें, हर श्वाँस में सौगंध हो।
हे नाथ! गुरु विश्वास की, डोरी अमर कर दीजिए। गुरुदेव...

जागे न मन में वासना, मन में कषायें न जगें।
हो वात्सल्य हृदय सदा, कर्त्तव्य से न कभी डिगें।
गुरुभक्ति की सरिता बहे, निर्मल हृदय कर दीजिए। गुरुदेव...

भावों में निश्छलता रहे, छल की रहे न भावना।
गुरु पादमूल शरण मिले, करते हैं हम नित कामना।
जिनधर्म जिनआज्ञा सुगुरु, सेवा का अवसर दीजिए। गुरुदेव...

उपकार जो मुझ पर किये, गुरुवर भुला न पायेंगे।
जब तक है तन में श्वाँस हम, उपकार गुरु के गायेंगे।
हम शिष्य हैं गुरु के ऋणी, ऋणमुक्ति का वर दीजिए। गुरुदेव...

सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से, सुरभित रहे मम साधना।
आचार की मर्यादा ही, हे नाथ ! हो आराधना।
स्वर-स्वर समाधिभाव का, चिंतन मुखर कर दीजिए। गुरुदेव...

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ऐसे प्रथम दिगम्बराचार्य हैं, जिनकी यह रचना म.प्र. शिक्षा बोर्ड द्वारा कक्षा आठवीं की एटग्रेड अभ्यास पुस्तिका 'भाषा भारती' में प्रकाशित की गई है।

एक सुखद अनुभूति का एहसास

''माँ''

बेटा हो दुःख–पीड़ा में, माँ बन जाती दीवार।
माँ के प्यार सा इस दुनियाँ में नहीं किसी का प्यार
ओ–ऽ ऽ माँ, प्यारी माँ–ऽऽ–ऽ
माँ की गोदी में बेटा जब चैन से सोता है।
बेटा जैसा और किसी का पुण्य न होता है।
किलकारी भर भरकर माँ का करता है दीदार
माँ के प्यार सा.....

बेटा हो दुःख–पीड़ा में, माँ बन जाती दीवार।
बेटा जब–जब रोता है, माँ लोरी गाती है।
भूखी–प्यासी रहकर भी माँ, दूध पिलाती है।
चंदा–सूरज, अश्रु बहाते, पाने माँ का प्यार।
माँ के प्यार सा.....

कोठी–बँगला रुपया–पैसा, सब ऐशो–आराम।
माँ बिन सूना घर का आँगन, माँ को करो प्रणाम।
माँ ही घर की तुलसी है, रौनक, घर का शृंगार।
माँ के प्यार सा.....

जीवन–संगिनी पाकर माँ का प्यार भुलायेगा।
घर में दीवाली होगी पर खुशी न पायेगा।
माँ ही घर की दीवाली, होली, घर का त्यौहार।
माँ के प्यार सा.....

अपनी खुशियाँ कर न्यौछावर, देती है खुशियाँ।
बेटा समझे, न समझे, समझे न यह दुनियाँ।
माँ चलती काँटों पर, देती फूलों का उपहार।
माँ के प्यार सा.....

दुनिया छूट भी जाये, माँ का कभी न छूटे साथ।
माँ ने पकड़ा हाथ हमारा, पकड़ो माँ का हाथ।
सब तीरथ माँ चरणों में, बन जाओ श्रवण कुमार।
माँ के प्यार सा.....

राम, कृष्ण, महावीर ने माँ का मान बढ़ाया है।
जाँ देकर आजाद भगत ने, माँ को पाया है।
सदा चिरायु, सुखी रहो, भारत माँ करे पुकार।
माँ के प्यार सा.....

वर्तमान में जातिवाद-पंथवाद में बँटती हुई जैन समाज का ध्यान
आकर्षित करनेवाली और सम्यक् बोध प्रदान करनेवाली
भावलिंगी संत श्रमणाचार्य
श्री विमर्शसागर जी महाराज द्वारा रचित पंक्तियाँ

(1)

तेरा और बीस पंथ, उलझे हैं श्रावक संत,
कोई तेरा कोई बीस करते बढ़ाई हैं।
करते हैं राग-द्वेष, जानें नहीं धर्म लेश,
मंदिरों में खींचतान करते लड़ाई हैं॥
कर रहे धर्म लोप, मानते हैं धर्म गोप,
एक दूसरे की अहंकार की चढ़ाई है।
तेरा-बीस के बयान, जैसे हिन्द-पाकिस्तान
हाय जैन एकता भी आज लड़खड़ाई है॥

(2)

कोई है बघेरवाल, कोई खण्डेलवाल,
कोई अग्रवाल तो कोई परवार है।
कोई-कोई जैसवाल, कोई-कोई ओसवाल,
कोई पोरवाल कोई गोल शृंगार है॥
बंद हुये बोलचाल, वाल की खड़ी दीवाल,
जातियों का भूत सबके ही सिर सवार है।
मंदिरों में अब जैन कहीं दिखते ही नहीं,
मंदिरों पे अब जातियों का अधिकार है॥

(3)

जातिमद चढ़ रहा, पन्थभेद बढ़ रहा,
जहाँ देखो वहाँ राग-द्वेष की ही बात है।
महावीर हुये खण्डेलवाल, अग्रवाल,
आदि-आदि मंदिरों पे लिखा ये दिखात है॥
कहीं महावीर हुये तेरा पंथी, बीस पंथी,
धर्मात्माओं ने भी दी क्या सौगात है।
सोचा जब मैं भी महावीर को पहचान दूँ,
तो धरा महावीर रूप, मेरी क्या औकात है॥

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज
ऐसे प्रथम दिगम्बराचार्य हैं, जिनकी यह रचना
मध्य प्रदेश शिक्षा बोर्ड ने कक्षा ग्यारहवीं की पुस्तक 'मकरन्द' में शामिल की है।

देश और धर्म के लिये जिओ

देश और धर्म के लिए जिओ-2
हर कदम-कदम पे सबको ले ।
एकता अखण्डता की बात ले ।।
शुभ - पवित्र लक्ष्य के लिए जिओ ।

देश.....

मातृभूमि पर भी हमको गर्व हो ।
मातृभूमि रक्षा एक पर्व हो ।।
ऐसे राष्ट्र पर्व के लिए जिओ ।

देश.....

श्रम सभी का एक मूलमंत्र हो ।
श्रम के लिए हर मनुज स्वतंत्र हो ।।
लोकलाज शर्म छोड़कर जिओ।

देश.....

हो अनाथ दुखिया अगर राह में ।
हो सहानुभूति हर निगाह में ।।
करुणा और प्रेम के लिए जिओ ।

देश.....

भाईचारा सबके दिल में हो सदा ।
कटुता घृणा बैरभाव हो विदा ।।
जीना श्रेष्ठ कर्म के लिए जिओ ।

देश.....

प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं, जिनके द्वारा श्रमण परम्परा के इतिहास में प्रथम बार सन् 2011 में नूतन लिपि का सृजन किया गया, जिसे 'विमर्श लिपि' संज्ञा दी गई

विमर्श लिपि

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए
विमर्श लिपि (स्वर)	ന	ന̤	ɛ	ɛ:	ω	ω̈	3
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)	.	..	.	..	.	..	ɔ

	ऍ	ऐ	ओ	ऑ	औ	अं	अः
विमर्श लिपि (स्वर)	3̆	3̇	ɛ	ɛ̆	ɛ̇	ന̊	ന̊
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)	˘	ɔ	c	˘	ċ	o	ʘ

ऋ	ॠ	ऌ	ॡ
3c	3c	8c	8c
c	c		

व्यंजन

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
विमर्श लिपि	/.	\.	I.	≥.	≤.
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
विमर्श लिपि	9.	ᑕ.	b.	q.	þ.
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
विमर्श लिपि	7.	L.	T.	Λ.	V.
		ड़ →	T̥.	Λ̥. ←	ढ़

त वर्ग	त	थ	द	ध	न
विमर्श लिपि					
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म
विमर्श लिपि					
अंतस्थ	य	र	ल	व	
विमर्श लिपि					
ऊष्माण	श	ष	स	ह	
विमर्श लिपि					
संयुक्त	क्ष	त्र	ज्ञ		
विमर्श लिपि					

विमर्श लिपि में शब्द के नीचे लाईन होती है।
चिन्ह भी लाईन पर ऊपर नीचे आगे–पीछे रहता है।
जैसे

राम जाता है।	क्या राम जाता है?
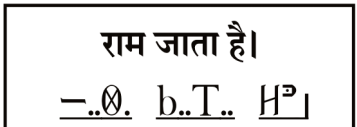	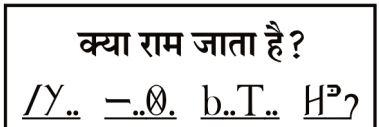

शांति भक्ति का अतिशय देख रोमांचित हूँ

श्रमणाचार्य विमर्शसागर

संसारी जीव एक व्यापारी की तरह है, जो नित्य शुभ और अशुभ कर्म का संचय करता है, उनका फल भोगता है। अशुभ कर्म का फल दुःख है, शुभ कर्म का फल सुख। मोक्षमार्ग शुभाशुभ कर्म से मुक्त अतीन्द्रिय सुख का साधन है। मोक्षमार्गी साधक प्रधानतया अतीन्द्रिय सुख के मार्ग का आश्रय करते हैं। कदाचित् शुभमार्ग का आश्रय कर अशुभ कर्म की शान्ति का उपाय भी करते हैं, जिनधर्म की प्रभावना करते हैं। जैसे 48 कोठरी में बंद आचार्य मानतुंग स्वामी ने आदिनाथ स्तुति की और ताले स्वयमेव खुल गये। आचार्य वादिराज स्वामी ने जिनस्तुति की और कुष्ठ रोग तत्काल ठीक हो गया। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने शांति स्तुति की और नेत्र ज्योति आ गई। कवि धनंजय ने आदि स्तुति की और पुत्र का विष तत्काल शान्त हो गया, पुत्र मानो सोते से जाग गया, जिनधर्म की भी महाप्रभावना हुई।

सच 25.12.2015 का दिन मैं कभी भूल नहीं सकता जब दोपहर सामायिक हेतु चतुर्दिक् कायोत्सर्ग कर मैं बैठने ही वाला था कि 15 दिन से अत्यन्त अस्वस्थ आँचल दीदी को संघस्थ दीदीयाँ व्हील चेयर से आशीर्वाद हेतु लाईं। पैरालाइसिस जैसी शिकायत होने से पैर-हाथ से तो असमर्थता थी ही, आज आँखों से दिखना एवं कानों से सुनना भी बंद हो गया था। अत्यन्त दयनीय हालत में दीदी को देखकर हृदय करुणा से द्रवित हो उठा। मन ही मन भगवान शांतिनाथ का स्मरण कर प्रभु से बोला - 'हे नाथ! 22 वर्षीय असाध्य रोग से पीड़ित आँचल दीदी की अस्वस्थता आँखों से देखी नहीं जाती। प्रसिद्ध डॉक्टर्स भी स्पष्ट मना कर चुके हैं कि दीदी अब कभी स्वस्थ नहीं हो सकतीं। हमारे मेडिकल साइंस में यह प्रथम केस है कि दीदी की रिपोर्ट नॉर्मल है और अस्वस्थता बढ़ती जा रही है। हे प्रभो! अब तो एकमात्र आपकी भक्ति ही शरण है। सच्चा भक्त आपकी भक्ति के फल से जब पूर्ण निरामय अवस्था को प्राप्त कर सकता है, तो इस रोग से मुक्ति क्यों नहीं मिलेगी।' मैं अत्यन्त करुणा से भरा हुआ आँचल दीदी से बोला - बेटा! मैं तुम्हें शांतिभक्ति सुना रहा हूँ, मेरी आज की यही सामायिक है, मैं भगवान् शांतिनाथ को हृदयकमल पर विराजमान करके आचार्य भगवन् पूज्यपाद स्वामी का भक्ति से स्मरण कर, पूज्य आचार्य गुरुदेव विरागसागर जी का आशीष अनुभव कर अत्यन्त तन्मयता के साथ शांतिभक्ति का उच्चारण करने लगा। अपूर्व विशुद्धि अनुभव हो रही थी, रोम-रोम भक्ति रस में सराबोर था। तभी अचानक आँचल दीदी की आँखों में नेत्र ज्योति आ गई, कानों से स्पष्ट सुनाई देने लगा, मुख का टेढ़ापन दूर हो गया और निश्चल हाथ की अंगुलियाँ स्वयमेव खुल गईं, हाथ भी सहज चलने लगा। कमरे में जितने लोग थे, सभी जय-जयकार करने लगे। शांतिभक्ति का अतिशय देख सभी रोमांचित हो गये। आँचल

दीदी बोलीं – गुरुदेव! मेरा चेहरा पहले जैसा हो गया है। मैं पहले की तरह ही बोल रही हूँ न। मुझे पहले की तरह ही दिखाई एवं सुनाई भी दे रहा है। मैंने कहा – बेटा! यह सब भगवान शांतिनाथ की कृपा है। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव! अब तो मैं आहार का शोधन भी कर सकती हूँ, और हाथों से आहार दे भी सकती हूँ, तभी उनका ध्यान अपने संवेदना शून्य पैर पर गया, बोलीं गुरुदेव! यदि मेरा पैर भी ठीक हो जाता तो मैं आपको जल्दी आहार दे पाती। मैंने कहा – बेटा! भगवान् शांतिनाथ की भक्ति से वह भी शीघ्र ठीक होगा। मैंने पुन: दीदी को शांतिभक्ति सुनाना शुरू किया, दीदी भी साथ पढ़ने लगीं। अहो! अद्भुत आनन्द रस बहने लगा प्रभु की भक्ति करते। तभी दीदी के पैर की अंगुलियाँ चलने लगीं और दीदी अपने पैरों पर खड़ी हो गईं। व्हील चेयर को पीछे धकेल दिया और कमरे में ही चलने लगीं। अभी शांतिभक्ति पूर्ण नहीं हुई थी, अत: मैंने कहा – बेटा! भक्ति कर लो। सभी ने भावपूर्वक शांतिभक्ति पूर्ण की। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव! ऐसा लग रहा है मानो सोकर उठी हूँ। गुरुदेव! मैं तो बिल्कुल ठीक हो गई। मैंने कहा – बेटा! शांतिभक्ति के प्रसाद से तुम ठीक हुई हो। दीदी बोलीं – गुरुदेव सब आपकी ही कृपा है।

कमरे में दीदी के माता–पिता भी उपस्थित थे। यह भक्ति का चमत्कार देख उनकी आँखों से खुशी के आँसू ढुलक रहे थे। मैंने कहा – अब सभी लोग भगवान शांतिनाथ के पास चलेंगे। एक बार वहाँ भी शांतिभक्ति का पाठ करेंगे। दीदी ने कहा – अब मैं व्हील चेयर से नहीं, पैदल ही चलूँगी। अहो! दीदी को पैदल चलते देख उपस्थित सैकड़ों भक्त जन आश्चर्य करने लगे। हमने शांति जिनालय में पुन: शांतिभक्ति का पाठ किया और भगवान शांतिनाथ के चरणों का भावपूर्वक स्पर्श कर आँचल दीदी को एवं संघस्थ सभी साधुओं को आशीर्वाद दिया। फिर हम सभी प.पू. सूरिगच्छाचार्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी के पास पहुँचे, वहाँ दीदी ने आचार्य वंदना की। पूज्य गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद दिया, और कहा – आहारजी में घटी यह अतिशयकारी घटना यहाँ चिरकाल तक गुंजायमान होती रहेगी।

सच, मैं बेहद रोमांचित और आनंदित हूँ। शांतिभक्ति का पाठ करते समय जो विशुद्धि और आनंद का अनुभव हुआ, वह शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। भक्ति का यह अतिशय चमत्कार स्मृति पटल पर बार–बार आता ही रहता है। जिनेन्द्र भक्ति का माहात्म्य यही तो है–

विघ्नौघा प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगा:।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।

अर्थात् जिनेश्वर की स्तुति करने पर विघ्नों का समूह तथा शाकिनी, भूत, सर्प आदि की बाधाएँ क्षण भर में क्षय को प्राप्त हो जाती हैं और विष भी निर्विषता को प्राप्त होता है।

जानें क्या है जिनागम पंथ?

–श्रमणाचार्य विमर्शसागर

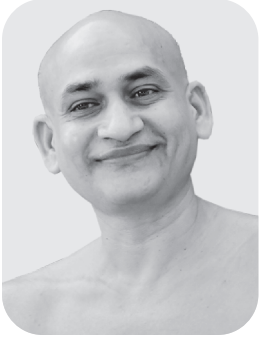

'जिनागम पंथ' अनादि–अनिधन, विश्व मैत्री, प्रेम, एकता का परम पावन संदेश है, जो तीर्थंकर भगवंत,केवली अरिहन्त, गणधर संत, आचार्य–उपाध्याय–निर्ग्रंथ के मुख से अतीतकाल में कहा गया, वर्तमान में कहा जा रहा है और भविष्यकाल में कहा जायेगा।

अहो! तीर्थंकर जिन की वाणी यानि जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम और इसमें वर्णित आत्महितकारी पंथ, मार्ग। यही है जिनागम पंथ।

अहो! जिनागम में कथित पंथ अर्थात् मार्ग, यही सच्चा था सच्चा है और सच्चा रहेगा। तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन की वाणी ही जिनागम है। और जिनागम में कथित श्रमण–श्रावक धर्म यह पंथ अर्थात् मार्ग है। जो श्रमण–श्रावक धर्म के मार्ग पर चल रहा है वह जिनागम पंथ का पथिक 'जिनागम पंथी' है।

सचमुच जिनागम पंथ शाश्वत था, शाश्वत है, शाश्वत रहेगा। जो जिनागम पंथ का पथिक है वह सम्यग्दृष्टि, श्रावक अथवा श्रमण संज्ञा को प्राप्त जिनागम पंथी है। जो जिनागम पंथ की श्रद्धा से रहित है वह मिथ्यादृष्टि है।

अहो! विदेह क्षेत्र में विराजित विद्यमान बीस तीर्थंकरों के मुख से गणधरादि परमेष्ठी भगवंतों के द्वारा आज भी जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम प्रगट हो रहा है।

धन्य हैं, वे भव्य जीव जो जिनागम कथित समीचीन पंथ अर्थात्

जिनागम पंथ को स्वीकार कर अनादि मोह, राग-द्वेष की परम्परा का विच्छेदन कर आत्मकल्याण कर रहे हैं। अहो! जिनागम पंथ के अलावा अन्य कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। जिनागम पंथ के अलावा अन्य पंथ उन्मार्ग हैं, अकल्याणकारी हैं।

जयदु जिणागम पंथो, रागद्दोसप्प णासगो सेयो।
पंथो तेरह – बीसो, रागादि – वड्ढिओ असेयो।।

जो रागद्वेष का नाश करनेवाला है, कल्याणकारी है, ऐसा 'जिनागम पंथ जयवंत हो'। इसके अलावा तेरहपंथ, बीसपंथ आदि पंथ, रागद्वेष को बढ़ाने वाले हैं, अकल्याणकारी हैं।

अहो! कालदोष के कारण कतिपय विद्वानों ने तीर्थंकर जिनदेव के मुख से भाषित अर्थात् सर्वांग से खिरनेवाली दिव्यध्वनि में कथित जिनागम पंथ से बाह्य तेरहपंथ, बीसपंथ, शुद्ध तेरहपंथ आदि नाना पंथों की संज्ञाएँ रखकर परस्पर रागद्वेष को जन्म दिया है। कुछ विद्वान एवं श्रमण संज्ञा से भूषित जीवों ने भी ख्याति-पूजा-लाभ के लिए नये-नये पंथ गढ़कर भव्य जीवों का महान् अहित किया है।

अहो! अज्ञानता, आज ये जीव इन नाना संज्ञाओं से पंथों का पोषणकर जिनागम पंथ से दूर खड़े हो गये हैं। और कल्पित पंथों का पोषणकर अपना आत्म पतन ही कर रहे हैं। तेरह-बीस आदि संज्ञाएँ जिनेन्द्र देव की वाणी से बाह्य हैं। ये जिनागम पंथ से बाह्य पंथ ही वर्तमान में राग-द्वेष का कारण बने हुये हैं। चारों तरफ समाज में विघटन, मंदिरों में खींचतान, इन कल्पित तेरह-बीस आदि पंथों की ही देन है। जिनागम पंथ सभी को एक सूत्र में बाँधकर मैत्री-प्रेम-वात्सल्य का संदेश देता है।

अहो! आज भी यदि स्वकल्पित पंथों का दुराग्रह छोड़कर सब जीव जिनेन्द्र देव की वाणी यानि जिनवाणी, जिनागम में श्रद्धा रखें और जिनागम वर्णित पंथ यानि 'जिनागम पंथ' को सच्ची श्रद्धा से स्वीकारें, तो सर्व समाज में आज भी एकता का सूत्रपात हो सकता है। आपस के रागद्वेष मिट सकते हैं और जिनशासन गौरवान्वित हो सकता है।

।। जयदु जिणागम पंथो ।।

सरूव थुदी

उवओगमओ अप्पा अहं, जाणगसरूवो मम अहा।
णिद्दंदो अहमणिबंधो हं, आणंदकंद-सहज-महा।।
जाणिय सया दु संतमओ, णिय संतरस-पीउं सया।
णिय संतरस-लीणम्मि हं, णिय चेद-धुवरूवो अहा।।1।।

महसु असंखपदेसेसुं, भयवंत-अप्पा णिवसदि।
हं हुवमि परमप्पा सयं, परमप्प-रूवो विलसदि।।
हं सिद्धकुल-अंसो हुवमि, हु दंसावदि भविदव्वदा।
णिय सत्ति-अंसदो सिद्धो हं, दव्वस्स णिय णिय दव्वदा।।2।।

रागादि-भाव दु विगडीआ, दव्वम्मि णिय णवि दंसणं।
परदव्व-परभावाण दु, रूवम्मि चिद णवि फंसणं।।
पुहु सव्वदो विर सव्वदो, अवियाररूवो मम अहा,
हं पूर-सहजसहावदो, जो हु वीदरागमओ कहा।।3।।

गुण-दव्वदो हं धुवमहा, परिणमं णियदं पत्तो हं।
परिणदं अत्तमओ खलु, सत्तीए णियदओ अत्तो हं।।
कारण सयं हं कज्जमवि, सिवमग्गो मग्गफलं सयं।
हं भावलिंगी संतो जाणग- हुवमि सफल हु जीवणं।।4।।

भावलिंगी संत का स्वरूप

देहादि संग रहिओ, माणकसाएहिं सयल परिचत्तो।
अप्पा अप्पम्मि रओ, स भावलिंगी हवे साहू ।।56।

– अष्टपाहुड

अर्थ – देहादि संग (परिग्रह) से रहित और मान कषाय के साथ सकल कषाय से रहित हो आत्मा अपनी आत्मा में लीन होता है वही भावलिंगी साधु होता है।

आचार्य विमर्शसागर विरचित

स्वरूप स्तुति

हूँ आत्मा उपयोगमय, ज्ञायक स्वभाव मेरा अहा।
निर्द्वन्द हूँ निर्बन्ध हूँ, आनन्दकन्द सहज अहा।।
नित शान्तरसमय जानकर, निज शान्तरस नित पानकर।
निज शांतरस में लीन हूँ, ध्रुवरूप निज अनुभव अहा।।1।।

मेरे असंखप्रदेश में, भगवान् आतम बस रहा।
मैं हूँ स्वयं परमात्मा, परमात्मरूप विलस रहा।।
हूँ सिद्धकुल का अंश मैं, बतला रही भवितव्यता।
मैं सिद्ध शक्ति अंश से, निजद्रव्य की निज द्रव्यता।।2।।

रागादि भाव विकार का, निजद्रव्य में दर्शन नहीं।
परद्रव्य या परभाव का, चित् रूप स्पर्शन नहीं।।
सबसे पृथक् सबसे विलग, अविकार रूप मेरा अहा।
मैं पूर्ण सहज स्वभाव से, जो वीतरागमयी कहा।।3।।

हूँ द्रव्य–गुण से ध्रुव अहा, नित परिणमन को प्राप्त हूँ।
परिणमन निश्चय आप्तमय, शक्ति से निश्चय आप्त हूँ।।
कारण स्वयं हूँ कार्य भी, शिवमार्ग स्वयं हूँ मार्गफल।
मैं भावलिंगी संत हूँ, ज्ञायक हूँ मैं, जीवन सफल।।4।।

दिगम्बर साधु के समान कोई नहीं

साधुश्चारित्रहीनोऽपि समानो नान्यासाधुभिः।
भग्नोऽपि शातकुम्भस्य कुम्भो मृत्सना घटैरिव।।

अर्थ – प्रशंसनीय चारित्र से रहित होने पर भी दिगम्बर साधु अन्य साधुओं के समान नहीं होता जैसे कि सुवर्ण का घट फूट जाने पर भी मिट्टी के घटों के समान नहीं होता।

क़ज़ा

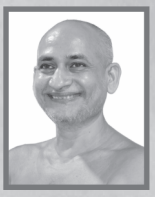

हर तरफ हैं क़ज़ा[1] के ही मंज़र[2]
अपने ही लोग हैं जैसे ख़ंजर

किस पे कर लूँ यकीं यहाँ ऐ दिल
डूबा हो जबकि फ़रेबी में शहर

धन, मकाँ, बीबी, बच्चे सब झूठे
सच कहूँ हैं ये गुलामी का क़हर[3]

झूठी क़समों का भरोसा न करो
जीस्त[4] है झूठे ही रिश्तों का सफ़र

जिसको अपना कहा लूटा उसने
ये तो दुनिया है लुटेरों का नगर

यहाँ आता नहीं ख़ुशी का दिन
ख़ुदकुशी[5] करते पी ग़मों का ज़हर

चाहता है क़ज़ा से न हो मिलन
सबको ठोकर लगा के कर तू गुज़र

जोड़ ले अपना रिश्ता अब रब से
रब का साथी है कर ले अपनी ख़बर

❑❑

26 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. मौत, 2. दृश्य, 3. आफत, 4. ज़िन्दगी, 5. आत्महत्या

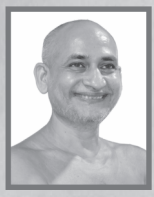

दग़ा

मतलबी दुनिया में जींते क्यों हो
रात-दिन ग़म को ही पीते क्यों हो

सबको कह-कह के यहाँ पर अपना
अपने यारब से ही रीते क्यों हो

अपनों को अपने दे रहे हैं दग़ा
ठोकरें खाने को जींते क्यों हो

रूह[1] अपनी है उसे प्यार करो
झूठी उल्फ़त[2] में ही जींते क्यों हो

आशियाँ अपना मिल गया है अगर
आसमानों में ही जींते क्यों हो

अपने से भी न कर सका तू वफ़ा
जुल्म की ज़िंदगी जींते क्यों हो

होयेंगे एक दिन सभी रुख़सत[3]
यादों में अश्कों[4] को पीते क्यों हो

❑❑

26 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. आत्मा, 2. प्यार, मुहब्बत, 3. रवाना, विदा, 4. आँसू

तलाश

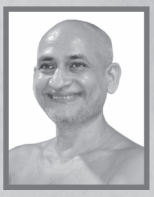

मिले हो हमसे मगर हम तेरी तलाश में हैं
तू मेरे साथ रहे बस हम इसी आश में हैं

तू है अरूप, अरस तू अगंध अस्पर्शी
तू ज्ञान-दर्शमयी तू ही चित्विलास में है

तू शुद्ध-बुद्ध अमल है अचल है अविकारी
तू निरंजन है तू ही तो कर्म विनाश में है

तेरे बिना मेरी इस ज़िंदगी का क्या मकसद
मेरी धड़कन हो तुम्हीं रब तू ही तो साँस में है

जहाँ भी देखता हूँ लोग मतलबी हैं यहाँ
तू ही तो है जो मेरी आरजू में प्यास में है

तेरी ही चाह में अब तक जिये मेरे यारब
तू मेरा चाँद है, सूरज है तू उजास में है

तेरे बिना न हिले पेड़ के कभी पत्ते
तू जल में, आग में है, फूल में सुवास में है

किसे दिखाऊँ जिगर में भरे हैं ज़ख़्म मेरे
तुझे कहा है लिहाज़ा तू मेरे पास में है

❑❑

26 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

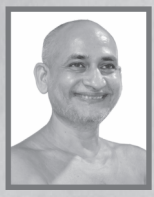

आदमी

किसके लिये रोता यहाँ हँसता है आदमी
अपने लिये जिये तो फ़रिश्ता है आदमी

बदले हुये किरदार[1] की जब तक न मौत हो
तब तक कदम-कदम पे सिसकता है आदमी

बदले हुये जमाने के मंज़र[2] अजीब हैं
ख़ुद आदमी को ही यहाँ डसता है आदमी

कह-कह के अपना दे रहे सबको दग़ा अपने
खाकर दग़ा न फिर भी सँभलता है आदमी

अपना ज़मीर[3] खोने से इज़्ज़त किसे मिली
पानी का मोल है यहाँ सस्ता है आदमी

जैसा करम करोगे वैसा फल भी पाओगे
क्यों भाग्य के लिये ही तरसता है आदमी

''ज़ाहिद[4]'' ने आके दुनिया में पाया मुक़ाम[5] को
अपने लिये जिया जो वो हँसता है आदमी

❑❑

27 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. आचरण, 2. दृश्य, 3. विवेक, ईमान 4. संयमी, जितेन्द्रिय, 5. घर, रहने का स्थान

नज़र

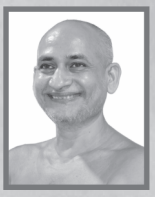

रब की नज़र से जब मेरी नज़र ये मिल गई
सच कहता हूँ मैं ज़िंदगी कमल सी खिल गई

देखे हैं ज़िंदगी में आँधी-तूफाँ भी बहुत
दीदार के तूफाँ में दिशा ही बदल गई

रब से बढ़ाईं हमने भी नज़दीकियाँ बहुत
रब में जो डूबे ज़िंदगी रब जैसी ढल गई

रब मिल गया है हमको न अब चाह किसी की
मावस[1] की रात में भी हमें राह मिल गई

झुक-झुक दरख़्त[2] करते हैं प्रणाम भी जिसे
रब नाम से आँधी प्रणाम कर निकल गई

गर चाहता है न्याय तो जा रब की अदालत
जो भी गया महावीर सी क़िस्मत बदल गई

रब जैसी कोई दुनिया में हस्ती ही कहाँ है
जिस नाम से कर्मों की भरी बस्ती जल गई

जो लोग जानते यहाँ रब की हक़ीक़तें[3]
तक़दीर[4] उसके नाम से उनकी सँभल गई

❑❑

27 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. अमावस, 2. वृक्ष, 3. सच्चाईयाँ, 4. भाग्य

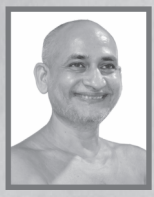

रब

रब की आहट में अब नींद आती नहीं
याद आती है रब की तो जाती नहीं

रब मेरी जीस्त[1] में इस क़दर ख़ास है
जो मिला ना अभी तक वो अहसास है
मेरी साँसों में सरग़म समाती नहीं।

रब मिला जैसे कोई ख़ज़ाना मिला
मेरी ख़ुशियों को जैसे ठिकाना मिला
रब बिना साँस भी आती-जाती नहीं।

हर ग़मों की दवा रब का ही साथ है
ज़िंदगी का मज़ा रब का ही साथ है
रब सी मूरत नज़र कोई आती नहीं।

रब को पाने ही छोड़ी है दुनिया यहाँ
रब की आबोहवा[2] सी सबा[3] है कहाँ
रब मिला, याद कोई सताती नहीं।

झाँक ले अपने भीतर दिखेगा ख़ुदा
उस सी हस्ती न कोई है सबसे जुदा
रब में डूबा जो फिर मौत आती नहीं।

❑❑

28 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. ज़िंदगी, 2. जलवायु, 3. प्रभात के समय चलने वाली पूरब की हवा

हसरतें

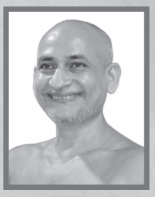

क्या कमाया है ज़िन्दगानी में
अपनी बीती हुई कहानी में

हसरतें[1] दिल की रह गईं दिल में
मौत जब आ गई जवानी में

अपनी ही राह में काँटे बोए
आँख हँसती रही नादानी में

जलते शोलों[2] को ही छुआ हरदम
क्या गजब आग लगी पानी में

डरते न लोग भी क़यामत[3] से
जीं रहे प्यार की निशानी में

हिज्र[4] का हर तरफ लगा पहरा
क्या भरोसा है ज़िन्दगानी में

जानता इस जहाँ का सच 'ज़ाहिद'[5]
जीना क्या इस जहाने-फ़ानी[6] में

❑❑

28 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. कामनायें, चाहतें 2. आग, 3. प्रलय, 4. जुदाई, 5. संयमी, जितेन्द्रिय, 6. नश्वर संसार

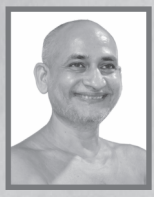

भलाई

किसके लिये जियें यहाँ किसके लिये मरें
करना है जो भलाई वो ख़ुद के लिये करें

ग़ैरों के लिये जीना है ग़फ़लत[1] की ज़िंदगी
जो कर्म दे हमको सुकूँ[2] उसके लिये करें

ख़ुद की भलाई में छिपी सबकी भलाई भी
बनकर फ़क़ीर ज़िंदगी सबके लिये करें

तन्हाई[3] में देता न कोई साथ किसी का
है कौन किसका साथी जिसके लिये मरें

मजबूरियों पे मत हँसो दु:खी-यतीम की
लाचार ज़िंदगी है पाप के लिये डरें

अहसानमंद लोग ही रब के क़रीब हैं
कुछ करना है दुनिया में फ़र्ज[4] के लिये करें

जीना है तुझको गर यहाँ 'ज़ाहिद'[5] की तरह जी
सच कहता लोग प्रेम ग़रज़[6] के लिये करें

❑❑

29 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. लापरवाही, असावधानी 2. चैन, 3. अकेले, 4. कर्त्तव्य,
5. संयमी, जितेन्द्रिय, 6. मतलब

कई लोग

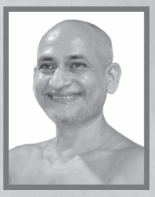

काँटों पे ज़िंदगी गुज़ारते हैं कई लोग
ऐसे भी ज़िंदगी सँवारते हैं कई लोग

जींते नहीं हैं लोग एक जैसी ज़िंदगी
फूलों के साथ भी कराहते[1] हैं कई लोग

करना ग़रूर[2] मत कभी अपने नसीब का
तक़दीर के हाथों भी हारते हैं कई लोग

जो हँस रहे हैं उनको सुखी मानिये नहीं
हँसता पड़ोसी तो कराहते हैं कई लोग

मुफ़लिस[3] हो तवंग़र[4] हो इबादत[5] अलग नहीं
फिर भी इबादतें नकारते हैं कई लोग

अपने ख़ुदा को भी जो यहाँ पा नहीं सके
मस्जिद में ख़ुदा को पुकारते हैं कई लोग

वाक़िफ़ नहीं हक़ीक़तों[6] से ज़िंदगी की तो
स्वप्नों में ज़िंदगी दुलारते हैं कई लोग

❑❑

29 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. दुःखी होते, 2. अभिमान, 3. गरीब, 4. धनवान,
5. प्रार्थना, 6. सच्चाईयों

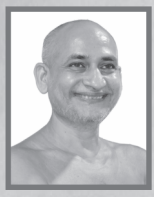

इन्सान

इंसान में दिखने लगा जिसको ख़ुदा यहाँ
सच कहता हूँ दुनिया से वो इंसाँ जुदा यहाँ

छोटा-बड़ा इंसान को मत कह अरे नादाँ
तक़दीर हर इंसान की होती जुदा यहाँ

दुनिया तो बदलती, न बदलता कभी इंसाँ
इंसान बदल जाये न होगा ख़ुदा यहाँ

रत्नों की संपदा से भी अनमोल है इंसाँ
इंसान पे भगवान भी होता फ़िदा[1] यहाँ

इंसान बन तू चाह न कर ग़ैरों की अरे
दो दिन का ठाठ है सभी होता विदा यहाँ

इंसान के लिये खुले जन्नत[2] के द्वार भी
हर शख़्स[3] से निराली इंसाँ की अदा यहाँ

जिसका ज़मीर[4] मर गया इंसान नहीं वो
जींता जो समद[5] के लिये इंसाँ ख़ुदा यहाँ

जिसको दिखा स्वयं में ख़ुदा का बजूद[6] तो
इंसान न रहा हुआ पैदा ख़ुदा वहाँ

❑❑

29 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. मुग्ध, आसक्त 2. स्वर्ग, 3. व्यक्ति, 4. मन, अन्त-करण 5. ईश्वर, 6. असतित्त्व

मदहोश

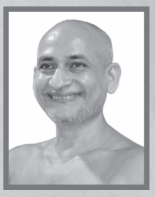

धन, भोग में मदहोश हो रहा है आदमी
जाने क्यों अपना होश खो रहा है आदमी

जब होंगे दुनिया से विदा सब छूट जायेगा
फिर जाने क्यों संतोष खो रहा है आदमी

चाहे तो भोग त्याग ज़िंदगी उबार ले
ख़ुद अपनी कश्ती को डुबो रहा है आदमी

दो पल को भी सुकूँ नहीं कोल्हू का बैल है
लगता है ज़िंदगी को ढो रहा है आदमी

चोरी, फ़रेब, झूठ इनका हो गया आदी
काँटे ख़ुद अपनी राह बो रहा है आदमी

झाड़ी खड़ी मज़ार[1] पे इतना ही कह रहीं
भोगों का दास इसमें सो रहा है आदमी

धन के लिये जिये थे सिकंदर-अशोक भी
क्यों इनकी राह चलके रो रहा है आदमी

धन-भोग की दीवानगी मंज़र[2] है मौत का
दोज़ख[3] को ही तैयार हो रहा है आदमी

❑❑

30 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. कब्र, 2. दृश्य, 3. नरक

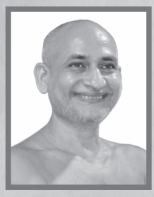

चेहरा

आइना रब को बनाया होता
असली चेहरा न छुपाया होता

टूट जाते ग़मों के घर ख़ुद ही
दिल में यारब को बुलाया होता

लोग जिंदा हैं यहाँ किसके लिये
मौत को घर में बुलाया होता

उसकी हर शख़्स[1] पे नज़र है यहाँ
अपनी नज़रों को उठाया होता

रह न पाता अँधेरा दिल में कभी
दीप सजदा[2] का जलाया होता

रब की तासीर[3] मिल गई होती
रब की साँसों से जिलाया होता

ख़ुशनुमा होती ज़िंदगी अपनी
गुलशन-ए-रूह[4] खिलाया होता

रब का दीदार होता रब से मिलन
अपने चिल्मन[5] को हटाया होता

❑❑

30 नवम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. व्यक्ति, 2. नमन, 3. असर, 4. आत्मा का गुलशन, 5. घूँघट

दैरोहरम

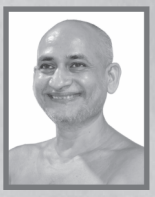

क्या गजब है यहाँ ज़माने में
सो रहे लोग शामयाने में

पत्थरों पे क्या फूल खिलते कभी
चैन मिलता है क्या मयख़ाने[1] में

न जला दीप आस्था का दिले
क्या मिला अस्थियाँ जलाने में

ख़ुद ख़ुदा की न राह चल पाये
राह सबको लगे दिखाने में

अपनी आवाज सुन नहीं पाये
लगे मस्जिद में ही चिल्लाने में

बाँट न पाये दर्द इंसाँ का
लगे दैरो - हरम[2] बनाने में

चैन मिल जाये दो घड़ी के लिये
ज़िंदगी खोते धन कमाने में

चाह पद की है नाम की दिल में
क्या मिला कलियाँ लगाने में

❑❑

1 दिसम्बर 2004
रामगंजमण्डी

1. मधुशाला, 2. मन्दिर-मस्जिद

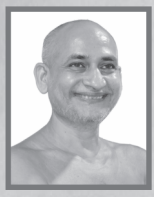

आज भी अकेला है

कल भी तू अकेला था - आज भी अकेला है
राग-द्वेष भावों ने - कैसा खेल खेला है

सच कहूँ मैं तुमसे जो-धर्मभाव रखता है
उसकी रूह का मंज़र[1], ख़ुदा जैसा लगता है
ढूँढ घर-शहर अपना, छोड़ सब झमेला है

क्या मिला तुझे पगले, राग-बंध-भोगों में
भोग के संयोगों में-भोग के वियोगों में
त्याग से ही जीवन में ज्ञान का उजेला है

साथ दो घड़ी का तो सब यहाँ निभाते हैं
मौत के समुन्दर में सब यहाँ नहाते हैं
जान ले सचाई तू-रिश्ता दुःख का मेला है

आती-जाती लहरों सी सबकी ज़िंदगानी है
ज़िंदगी में सुख-दुःख की - हर प्रथा पुरानी है
वक्त लिख रहा किस्मत, कौन गुरु है चेला है

दिशा के बदलते ही-दशा बदल जाती है
ज़िंदगानी शूलों में-फूलों सी खिल जाती है
छूट जाता है पल में-रिश्तों का जो रेला है

❑❑

3 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. दृश्य

प्रणाम

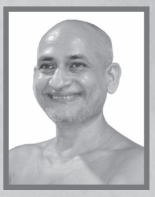

नींद में बात किया करते हैं
रब[1] को हम याद किया करते हैं

रब की महफ़िल में हम रहें हरदम
नाम लेकर ही जिया करते हैं

हमने रंगीन छोड़ दी दुनिया
रब की रंगत में जिया करते हैं

रब मिला और कुछ न चाह दिले
रब की सजदा में जिया करते हैं

रब से ही ज़िंदगी में हैं खुशियाँ
अश्क भी हँस के पिया करते हैं

मौत उनको प्रणाम करती है
नाम जो रब का लिया करते हैं

रब मिलेगा यक़ीन है हमको
अपना दिल साफ किया करते हैं

❑❑

4 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. परमात्मा, ईश्वर

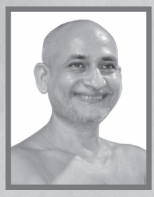

फ़ना

पत्तों को सींचने से नहीं फूल खिलेंगे
रिश्तों को सींचने से न महावीर मिलेंगे

मत कर गुमान तू अरे धन का न रूप का
पंछी उड़ेगा और ये मिट्टी में ढलेंगे

आया अकेला आके क्यों घरद्वार बसाया
जायेगा अकेला न कोई साथ चलेंगे

दुनिया में आके अपना भला, सबका कर भला
बस तेरे कर्म हैं जो तेरे साथ चलेंगे

पंछी दरख़्त[1] पे मिला करते हैं जिस तरह
होगी सुबह सब अपने-अपने देश उड़ेंगे

राजा हो या हो रंक अंत सबका है यही
अर्थी पे चढ़के जायेंगे चिता पे जलेंगे

मरकर भी इस जहाँ[2] से नहीं होंगे वो फ़ना[3]
मानव जो मानवीयता का काम करेंगे
❑❑

4 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. वृक्ष, 2. संसार, 3. नष्ट

निकले

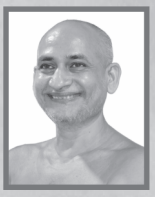

रूह अपनी सँवारने निकले
बोझ अपना उतारने निकले

फूलों पर जीस्त[1] गुजारीं हैं कई
शूलों पर हम गुजारने निकले

कोई दुश्मन नज़र नहीं आता
हम नज़र को सुधारने निकले

दोस्त जिसमें नज़र नहीं आता
उस नज़र को ही मारने निकले

जो चले साथ-साथ मंजिल तक
हम उसे ही पुकारने निकले

डूब न जाऊँ भव-भँवर में कहीं
अपने रब को उभारने निकले

अब न दिखते ये चाँद-तारे हसीं
ख़ुद में ख़ुद को निहारने निकले

न लगे दाग़ कोई दामन में
आचरण हम पखारने निकले

❑❑

4 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. ज़िंदगी

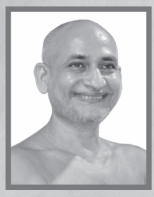

राह

नाम तेरा ही लिये जाता हूँ
डूबकर तुझमें जिये जाता हूँ

करे मदहोश मुझको मुझसे मिला
तुझसी मय मैं भी पिये जाता हूँ

सारी दुनिया है जिसकी दीवानी
उस इबादत को किये जाता हूँ

न दिखे मौत का कभी मंज़र[1]
ख़ुद को सौगात दिये जाता हूँ

साथ हरदम निभाता न जो यहाँ
छोड़ उसको ही जिये जाता हूँ

अब न कोई रुला सके हमको
अश्क यारब को दिये जाता हूँ

तुझको पाया है यहाँ 'ज़ाहिद'[2] ने
राह ज़ाहिद की लिये जाता हूँ

❑❑

4 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. दृश्य, 2. संयमी, सबसे बड़ा त्यागी

अपना घर

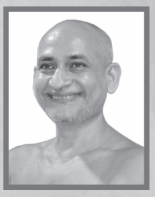

अपना घर छोड़ कहीं और न जाया जाये
अपने घर में ही नया बाग़ लगाया जाये

अपना कहता था जिसे निकले वही बेग़ाने
मौत के साथी सभी झूठे यहाँ अफ़साने
महफ़िले रूह में ख़ुद को भी भुलाया जाये

जाने क्यों लोग यहाँ आशियाँ बनाते हैं
खंडहर होते मकाँ ग़म में डूब जाते हैं
रूहे दामन में नहीं दाग़ लगाया जाये

घर को छोड़ोगे अगर ठोकरें ही खाओगे
ठोकरें खाके कभी लौट घर को आओगे
अपने घर रहके ख़ुदा को भी बुलाया जाये

चाहते रब को दिले तो ख़ुदापरस्त[1] बनो
पा ले रूहानी-सिफ़त[2] नहीं ज़रपरस्त[3] बनो
सिर झुकाना है तो हमदाँ[4] को झुकाया जाये

❑❑

5 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. ईश्वर के पूजक, 2. आध्यात्मिक गुण, 3. धन के उपासक,
4. सर्वज्ञ प्रभु

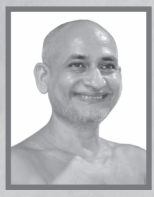

बेवफ़ा

बे-वफ़ा कितने सख़्त[1] रहते हैं
जैसे सूखे दरख़्त[2] रहते हैं

जश्न-ए-जीस्त[3] के लिये लाग़ी[4]
क़रहा[5] देकर भी मस्त रहते हैं

उनके दिल को टटोलना मुश्किल
वे जो सूरतपरस्त[6] रहते हैं

चेहरे अपने बदलते कपड़ों से
वे जो हवापरस्त[7] रहते हैं

बेच देते हैं अपना ईमाँ तक
जो भी हवसपरस्त[8] रहते हैं

करते मस्जूद[9] को भी वो रुसवा[10]
जिनके ख़्वाबों में रख़्त[11] रहते हैं

घर बिखर जाते हैं दिलशाद कई
जैसे प्याले के लख़्त[12] रहते हैं

बेवफ़ाई का पिया जिनने जहर
लोग भी वो बेबख़्त[13] रहते हैं

❑❑

6 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. कठोर, 2. वृक्ष, 3. ज़िंदगी की खुशी, 4. झूठा, 5. घाव, जख़्म, 6. सौन्दर्योपासक, 7. इन्द्रिय लोलुप, 8. लोभी, लालची, 9. पूज्य, 10. अपमानित, बदनाम, 11. ठाठ-बाट, 12. टुकड़े, 13. भाग्यहीन

तन्हा

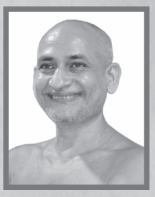

तुझे दिल में बसा लिया हमने
सारी ख़ुशियों को पा लिया हमने

इससे पहले कि तन्हा[1] कर दे कोई
तुझसे रिश्ता बना लिया हमने

ढूँढते लोग तुझे दैरो - हरम[2]
अपने घर में ही पा लिया हमने

तेरी चौखट को पाने की ख़ातिर
अपना सब कुछ लुटा दिया हमने

हर घड़ी होता रहे दीद[3] तेरा
आँखों में ही छुपा लिया हमने

पाने को तेरा नूर[4] ही या ख़ुदा
गुलशन-ए-रुह खिला लिया हमने

मुद्दतों से तू ही रहा रूठा
आज तुझको मना लिया हमने

और अब ना किसी की चाह दिले
तुझको अपना बना लिया हमने

❑❑

6 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. अकेला, 2. मन्दिर-मस्जिद, 3. दर्शन, 4. प्रकाश-ज्योति

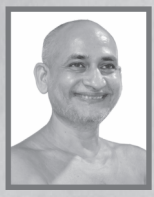

निफ़ाक़

इस जहाँ से तलाक[1] हो जाये
कर्मों का जब हलाक[2] हो जाये

झाँक लो अपने ही गिरेबाँ में
अपना दिल ख़ुद ज़हाक़[3] हो जाये

हमसे कब दूर भी रहा यारब
सिर्फ़ दिल से निफ़ाक़[4] खो जाये

एक रब का क़यास[5] हो दिल में
रूह अपनी भी चाक़[6] हो जाये

न रहेंगे जहाँ में नुक़्ताचीं[7]
गर नज़र सबकी पाक हो जाये

ऐश-इशरत[8] की ज़िंदगी झूठी
सब क़ज़ा[9] संग फ़िराक़[10] हो जाये

देख रब को दिले तग़य्युर[11] हो
जीस्त[12] से तुम-तराक़[13] खो जाये

होता 'ज़ाहिद'[14] कभी-कभी कोई
ज़ाहिरपरस्त[15] ख़ाक हो जाये

❑❑

7 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. सम्बन्ध विच्छेद, 2. खात्मा, 3. खुद पर हँसने वाला, 4. छलकपट, 5. ध्यान, 6. सोच-विचार, 6. स्वस्थ, 7. ऐब या दोष निकालने वाले, 8. भोग और आनन्द, 9. मौत, 10. बिछोह, वियोग, 11. बहुत बड़ा परिवर्तन, 12. ज़िंदगी 13. शान-शौकत, ठसक, 14. संयमी, 15. केवल ऊपरी तड़क-भड़क में झूलने वाला

अदीब

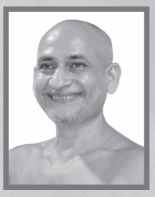

ज़िन्दगी अपनी उभारे है वो नजीब[1] कोई
ख़ुद को ख़ुद से ही मिला दे है वो नसीब[2] कोई

न तवंग़र[3], न जंगजू[4] कोई पाता रब को
दुआए - ख़ैर[5] मनाले है वो क़रीब कोई

भूला है रब के लिये किन्तु ज़िंदगी अपनी
ऐश-इसरत[6] में गुजारे है वो ग़रीब कोई

सब गिरे को यहाँ गिराते खण्डहर की तरह
जो गिरे को भी उठा ले है वो हबीब[7] कोई

जींते सूरतपरस्त[8] लोग तन की ख़िदमत में
रूह को चाक़[9] बना दे है वो तबीब[10] कोई

जो लिखा करता शेर, कविता, ग़ज़ल रब के लिये
सारी दुनिया को भुला दे, है वो अदीब[11] कोई

जिसे सर्दी, जिसे गर्मी न रुलाती है कभी
दीद ''ज़ाहिद'' के भी पाले है वो अजीब[12] कोई

❑❑

7 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. श्रेष्ठ कुलवाला, 2. भाग्य, 3. धनवान, 4. लड़ाकू, 5. कुशल क्षेम के लिए की जाने वाली ईश्वर से प्रार्थना, मंगलकामना, 6. भोग, आनंद, 7. मित्र, 8. सौन्दर्योपासक, 9. स्वस्थ, 10. चिकित्सक, वैद्य, 11. साहित्यकार, 12. अद्‌भुत, विलक्षण

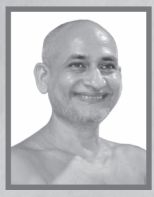

बेनज़ीर

हर सदा[1] रब की सदा लगती है
उसकी ख़ुशबू दिले महकती है

जो लगी आग रब के सीने में
मेरे सीने में भी सुलगती है

इंतहा[2] हो गई शबे - ग़म[3] की
हर ख़ुशी अब नवी[4] सी लगती है

रब सा कोई नहीं ग़फ़ूर[5] यहाँ
सामने मौत भी लरज़ती[6] है

रब को पाने हुआ हूँ बेपर्दा[7]
दुनिया ये बेख़ुदी[8] सी लगती है

आईना हो गया है मेरा दिल
रब की तस्वीर ही झलकती है

मिलती 'ज़ाहिद'[9] को इनायत[10] रब की
ज़िन्दगी बेनज़ीर[11] लगती है।

❑❑

7 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. आवाज, 2. समाप्ति, 3. गम की रात, 4. नवीन नई, 5. क्षमा करने वाला, 6. काँपती, 7. पर्दा रहित, 8. बेहोश, 9. संयमी जितेन्द्रिय, 10. कृपा, दया, 11. जिसकी कोई उपमा न हो, अनुपम

भाग्य

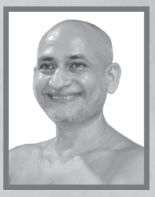

किसी के भाग्य में हँसना किसी के भाग्य में रोना
किसी के भाग्य में पाना किसी के भाग्य में खोना

भावना भाये जाओ तुम मिलेगा रास्ता तुमको
पड़ेगा फिर न कुछ खोना पड़ेगा फिर नहीं रोना

मुक़द्दर इस जहाँ[1] में तुमने ख़ुद अपना बनाया है
कोई बैठा है डोली में, किसी के भाग्य में ढोना

कोई धन से हुआ लाचार करता रात-दिन मेहनत
किसी के भाग्य धन खोना, किसी के भाग्य में सोना

यहाँ सब चाहते हैं इस जमीं व आसमानों को
किसी के भाग्य में दुनिया, किसी के भाग्य में कोना।

किसानों से जरा पूछो कि जिनके लद गये हैं दिन
किसी के भाग्य में फसलें, किसी के भाग्य में बोना

कहानी क्या सुनायें हम यहाँ क़िस्मत के मारों की
किसी के भाग्य में भोजन, किसी के भाग्य में दौना

अरे 'ज़ाहिद'[2] यहाँ दुनिया में तू ही हँसता गाता है
यहाँ कोई नहीं हँसता है सबके भाग्य में रोना

❑❑

8 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. जहान, संसार 2. संयमी, जितेन्द्रिय

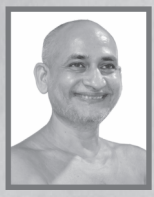

मीर

आज दिखता नहीं क़मर[1] हमको
लगता वो सह नहीं सका ग़म को

कितनी सादिक़[2] थी ज़िंदगी उसकी
तोड़ न पाया ख़्वाब के भ्रम को

ज़िंदगी में क्या ज़लज़ला[3] आया
खो गया अपनी आख़िरी दम को

कू-ब-कू[4] उसके नाम की चर्चा
रब को पाने जो भूला था ख़म[5] को

नूर[6] अपना वो लुटाता ही रहा
था वो जाँबाज[7] मिटाया तम को

मीर[8] वो प्यास बुझाता सबकी
भूल न पायेगा जहाँ यम[9] को

था वो 'ज़ाहिद'[10] अजीब दुनिया से
जहाँ में रहके भी जिया रम[11] को

❑❑

8 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. चन्द्रमा, चाँद 2. सच्ची, 3. भूचाल, 4. गली-गली, 5. वक्रता, 6. प्रकाश, 7. जान देने को तैयार रहने वाला, 8. धार्मिक आचार्य, 9. नदी, दरिया 10. संयमी, जितेन्द्रिय, 11. दूर रहने की प्रवृत्ति

ज़िन्दगी

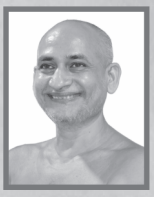

बन-बन के रोज़-रोज़ बिखरती है ज़िन्दगी
इशरत[1] के बाद ख़ुद को अखरती है ज़िन्दगी

सब लोग चाहते बनें गूना-ए-ख़ुदा[2] हम
अज़कार[3] के बिना न निखरती है ज़िन्दगी

यारब के आइने में करले दीद[4] तू अपना
मस्जूद[5] की ख़ातिर से उभरती है ज़िन्दगी

रोता कोई, हँसता कोई चेहरे बदल-बदल
आदम[6] की रंजोग़म[7] में गुजरती है ज़िन्दगी

साहिल[8] पे बैठने से न मिलते कभी मोती
दरिया[9] में डूबने से न मरती है ज़िंदगी

कर ले तू कारख़ैर[10] यहाँ कायनात[11] में
तफ़ज़ीह[12] से कभी न सुधरती है ज़िंदगी

जीना है तो जियो यहाँ क़ादिर[13] की आश में
सच कहता हूँ 'ज़ाहिद'[14] की सँवरती है ज़िंदगी

❑❑

8 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. सुख-भोग, 2. ईश्वर की तरह, 3. ईश्वर की उपासना, 4. दर्शन, 5. पूज्य, 6. आदमी, 7. व्यथा और दु:ख, 8. किनारे, 9. नदी, 10. शुभ कार्य, 11. संसार, 12. निंदा, बुराई 13. सर्वशक्तिमान, प्रभु 14. संयमी, जितेन्द्रिय

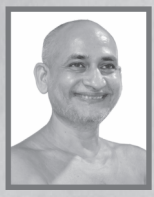

जिस्म

कब तक बनायेगा यहाँ घर अपना ताश का
सूरतपरस्त[1] सुन ले जिस्म गुल पलाश का

करता है नाज़ क्यों तू अरे नाज़िनीं[2] को पा
मौका गँवा रहा है नफ़स[3] की तलाश का

कितने असम[4] किये यहाँ इशरत[5] की चाह में
अशराफ़[6] जी रहे हैं जीवन जो दास का

मत देख नाज़िनीं को नज़रभर के ओ साक़ी[7]
कब जलने लगे दिल ग़राँबहा[8] कपास का

अग़्यार[9] के न साथ बिता ज़िंदगी अपनी
अफ़शाँ[10] में जो डूबे हैं भरोसा न साँस का

जब आयेगी क़ज़ा[11] तो कोई साथ न देगा
'ज़ाहिद'[12] ही निभाता है फ़र्ज़ जो अनास[13] का

❑❑

9 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. सौन्दर्योपासक, 2. सुन्दरी, 3. पल, क्षण, 4. पाप, 5. सुखभोग, 6. सज्जन लोग, 7. प्रिय के लिये प्रयुक्त शब्द, 8. बहुमूल्य, बेशकीमत, 9. गैर लोगों, 10. बादले के कटे हुये छोटे-छोटे टुकड़े जो स्त्रियों के मुख पर शोभा के लिये छिड़के जाते हैं, 11. मौत, 12. संयमी, जितेन्द्रिय, 13. मित्र, दोस्त

क्या मिला?

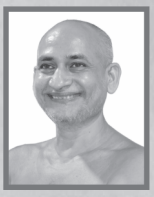

क्या मिला रूह को जलाने में
सारी दुनिया से दिल लगाने में

खो गईं रब की बहारें दिल से
क्या मिला है चमन खिलाने में

अपने भीतर नहीं दिखा जो ख़ुदा
क्या मिला दैरो-हरम[1] जाने में

जब सफ़ीना[2] बँधी हो साहिल[3] से
क्या मिला माँझी को बुलाने में

मिल नहीं पाया ऩफ़्स[4] का जौहर[5]
क्या मिला रत्न के ख़जाने में

सो गये लोग ढँक के सिर अपना
क्या मिला है नज़्म[6] सुनाने में

कोई 'ज़ाहिद'[7] ही जागता हरदम
क्या मिला उसको आज़माने में

❑❑

9 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. मन्दिर-मस्जिद, 2. नाव, 3. किनारे, 4. साँस, 5. रत्न, 6. गीत, कविता, 7. संयमी, जितेन्द्रिय

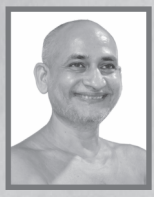

ख़ुश नसीब

जो क़ज़ा[1] का हबीब[2] होता है
वो कोई ख़ुशनसीब होता है

शबे - यल्दार[3] मनाती मातम[4]
चाँद जिनके क़रीब होता है

जिसके दिल में अबद[5] समाया है
गीती[6] में भी मुनीब[7] होता है

चाहता है जो क़ज़ा की भी क़ज़ा
उसका यारब तबीब[8] होता है

दूर करता जो शूल राहों से
आदमी वो नजीब[9] होता है

गाह[10] दिल में न इनायत जिसके
वो तवंग़र[11] ग़रीब होता है

क़ज़ा करती है अदब 'ज़ाहिद'[12] का
दुनिया में वो अजीब होता है

❑❑

9 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. मौत, 2. मित्र, दोस्त, 3. अँधेरी मनहूस रात, 4. दुःख, शोक 5. अनन्त या असीम होने का भाव, 6. संसार, दुनिया, 7. ईश्वर की ओर अनुरक्त, 8. चिकित्सक, वैद्य, 9. श्रेष्ठ कुलवाला, कुलीन, 10. कभी, 11. धनवान, 12. संयमी, जितेन्द्रिय

ख़ुदाई

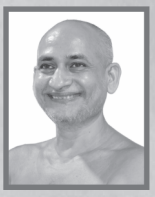

क्या बुराई की बात करते हो
हाथापाई की बात करते हो

ग़ैरों पे हँसते गिरेबाँ झाँको
जग - हँसाई की बात करते हो

झूठ, निंदा, फ़रेब ख़ुद करके
क्या ख़ुदाई[1] की बात करते हो

हँसते हो, जलता जो पड़ोसी का घर
क्या दुहाई की बात करते हो

ख़ुद बने ना वफ़ापरस्त[2] कभी
बेवफ़ाई की बात करते हो

टूट जाते फ़रिश्तों[3] के रिश्ते
क्या सगाई की बात करते हो

देखना ख़ुद को देख लो 'ज़ाहिद'[4]
हातिमताई[5] की बात करते हो

❑❑

10 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. ईश्वरता, 2. वफादार, 3. देवताओं, 4. संयमी, जितेन्द्रिय, 5. परोपकारी, दाता, उदार

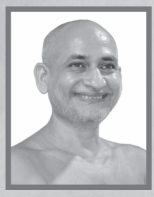

रक़ीब

कौन-किसका हबीब[1] होता है
मौत आती नसीब[2] रोता है

खूब देते दुहाई रिश्तों की
कौन कितना क़रीब होता है

हर रिवायत[3] मिली विरासत में
कर्म से कब नजीब[4] होता है

ठोकरें खाते रहते बज़्मे-जहाँ[5]
ग़मज़दा[6] कब मुनीब[7] होता है

नाम रब का लबों पे न जिसके
वो तवंगर[8] ग़रीब होता है

होती शौहरपरस्त[9] नाज़िनीं[10] जो
रब ही उनका रक़ीब[11] होता है

यहाँ फ़ैयाज़[12] है कोई 'ज़ाहिद'[13]
ख़ुदा उनका हबीब होता है

❑❑

10 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. मित्र, 2. भाग्य, 3. पारम्परिक बात, 4. कुलीन, 5. संसार रूपी महफिल, 6. दु:खी, 7. ईश्वर में अनुरक्त, 8. धनवान, 9. पतिव्रता, 10. सुन्दरी, 11. दूसरा प्रेमी, 12. बहुत बड़ा दानी, 13. संयमी, जितेन्द्रिय

तख़लीस

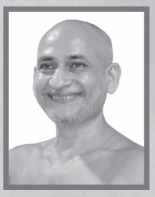

जब से देखा ख़ुदा का नूर[1] दिले
हुआ एतबार, जुदा-जूर[2] दिले-

रब सी दुनिया में शख़्सियत न कोई
देखा नज़रों से जो भरपूर दिले

मिल गया है ख़ज़ाना रूहानी
मिट गये ग़म मिला सुरूर[3] दिले

बन गया रब से अब नया रिश्ता
एक ईज़ाब[4] ही उमूर[5] दिले

दीद कब्रें करा रहीं हरदम
जिस्मे-फ़ानी[6] का क्या ग़रूर[7] दिले

हमदाँ[8] को पा सका नहीं क़ाज़िब[9]
दीद क़ादिर[10] का न कसूर दिले

पाता तख़लीस[11] भी कोई 'ज़ाहिद'[12]
वंदगी में है जिसका चूर दिले

❑❑

10 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. प्रकाश, 2. मिथ्यात्व, 3. सुख, आनन्द, 4. प्रार्थना, 5. विषय, 6. नश्वर शरीर, 7. अभिमान, 8. सर्वज्ञ प्रभु, 9. झूठा, मिथ्याभाषी, 10. सर्वशक्तिमान, 11. मुक्ति, 12, संयमी, जितेन्द्रिय

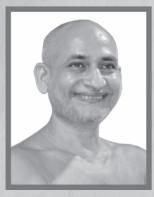

इल्तिजा

इल्तिजा[1] कर रहा हूँ रब के लिये
जीस्त[2] से हो फ़ना[3] ग़ज़ब[4] के लिये

मेरी जज्बा[5] है दम-ब-दम[6] इतनी
जिऊँ कबीर[7] के अदब के लिये

दिल हो गूना-ए-गुल[8] लतीफ़[9] मेरा
ना हँसूँ ग़ैरों को ज़रब[10] के लिये

नाम अबदन[11] लबों पे हो यारब
गाऊँ मैं नग़्मा जाँ-ब-लब[12] के लिये

राह में ग़मज़दा मिले कोई
काम आ जाऊँ मैं तरब[13] के लिये

चाह अन्ना-अबू[14] की अब न दिले
जी रहा रब के अब नसब[15] के लिये

नफ़्स[16] को पाता है कोई 'ज़ाहिद'[17]
छोड़ दी दुनिया इस तलब के लिये

❑❑

11 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. प्रार्थना, 2. ज़िंदगी, 3. नाश, 4. क्रोध, गुस्सा, 5. भावना, 6. हरदम, घड़ी-घड़ी, 7. बड़ों, श्रेष्ठ, 8. फूल की तरह, 9. कोमल, 10. आघात, चोर, 11. हमेशा, 12. जिसके प्राण होंठों तक आ गये हों, 13. प्रसन्नता, 14. माता-पिता, 15. कुल, वंश, 16. साँस, पल, 17. संयमी, जितेन्द्रिय

दरबदर

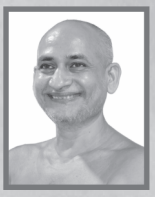

क्या मिला दुनिया में सिवा दरबदर[1]
फ़ानी[2] है सबकी ही यहाँ कर-व-फर[3]

टूटेंगे जो बनाये हैं रिश्ते
रिश्तों का होता चिता तक ही सफ़र

कर ले कुछ कारख़ैर[4] पल दो पल
सब पे है एक गुनाहों की नज़र

ऐश-इशरत[5] में जो हुआ गाफ़िल
रूह का कर न सका दीद[6] क़मर[7]

डूबा है रब की बंदगी में जो
पीते वो लोग बन के मीरा ज़हर

ख़ुद फ़ना[8] कर दे रिश्ते दुनियाई
सारी दुनिया जहीर[9] उसकी क़दर

रूह में रब को देखता 'ज़ाहिद'[10]
सब लुटाकर भी पा लिया है समर[11]

❑❑

12 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. एक घर से दूसरे घर, 2. नश्वर, 3. शान-शौकत, 4. शुभ कार्य, 5. भोग-आनन्द, 6. दर्शन, 7. चाँद, 8. नाश, 9. मददगार, 10. संयमी, जितेन्द्रिय, 11. फल, नतीजा, लाभ

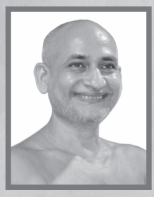

गुरुवर

आप हो मेरे रहनुमा[1] गुरुवर
हर घड़ी चाहूँ ख़ाके-पा[2] गुरुवर

सादगी तेरी जीस्त[3] हो मेरी
कर सके न बयाँ ज़ुबाँ गुरुवर

सारी दुनिया से हो गवार[4] हमें
तुझको अर्पित है दिलो-जाँ गुरुवर

तुझसा दुनिया में ना जहाँदीदा[5]
दो ज़हादत[6] का जाँफिज़ा[7] गुरुवर

सच कहूँ है वही ज़हे-किस्मत[8]
जिसने पाई तेरी दुआ गुरुवर

मेरी मिन्नत है बस यही हरदम
हो हमारे मिज़ाजदाँ[9] गुरुवर

किसने रोका तुम्हें सिवा दिल के
आप हो पाक जू-ए-खाँ[10] गुरुवर

गूना-ए-रब[11] हो आप भी 'ज़ाहिद'[12]
दिल ये कहता मेरे मिबाँ[13] गुरुवर

❑❑

12 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. पथ प्रदर्शक, 2. चरणों की धूल, 3. ज़िंदगी, 4. प्रिय, 5. बहुत बड़ा अनुभवी, 6. संयम, 7. अमृत, 8. धन्य भाग्य, 9. मिजाज या प्रकृति पहिचानने वाले, 10. बहती हुई नदी, 11. ईश्वर की तरह, 12. संयमी, जितेन्द्रिय, 13. स्वामी, मालिक

ख़ुदा

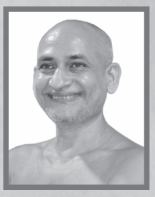

ख़ुद में खोजोगे ख़ुदा पाओगे
ख़ुद को दुनिया से जुदा पाओगे

जुल्म सहते रहे मगर, कब तक
रूह को देह में बिठाओगे

दाब[1] में कब किसे दिखा है, ख़ुदा
अपने घर को ही भूल जाओगे

मिलती हमदाँ[2] से शक्ल भी तेरी
दिल को कब आइना बनाओगे

देह की कब्र में सोने - वालो
कितना तुम रूह को जलाओगे

मिलती फ़ुर्सत नहीं जमाने से
कब इबादत[3] को सीख पाओगे

जानता है ख़ता[4] कोई 'ज़ाहिद'
कब ख़ाता को बुरा बताओगे

❑❑

15 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. शान-शौकत, 2. सर्वज्ञ प्रभु, 3. प्रार्थना, 4. गलती, कसूर

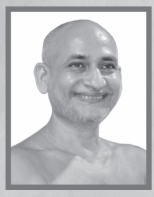

गुनाह

रहना दुनिया में ख़ुदा[1] के होकर
सारी दुनिया से जुदा से होकर

करता किसके लिये गुनाह यहाँ
तेरे अपने ही विदा दें रोकर

चाहता है जो तू ख़ुशी हरदम
सारी दुनिया को लगा दे ठोकर

अपने यारब को क्या बतायेगा तू
जीस्त[2] गुजरी जो भोगों में सोकर

अपने भीतर उभार ले तू ख़ुदा
बूँद-सागर में जो मिले खोकर

उनको मिलता नहीं ख़ुदा जो जियें
कर्म के बीज फिर नये बोकर

वो ही पत्थर बने ख़ुदा 'ज़ाहिद'[3]
पाया सब जिसने गुरु के होकर

❑❑

16 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. ईश्वर, 2. ज़िंदगी, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

दो घड़ी

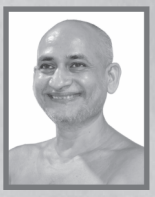

दिल जलाकर भी जी लिया होता
ग़म को अमृत सा पी लिया होता

बर्गे-गुल[1] सबसे कह रही हरदम
तूफाँ को हँस के सह लिया होता

कब मिली तुमको जहाँ में ख़ुशियाँ
साक़ी से पूछ भी लिया होता

सच कहूँ फूल छल रहे सबको
काँटों के साथ भी जिया होता

दो घड़ी का है साथ सबका यहाँ
दो घड़ी ख़ुद को पा लिया होता

डूबा जो रब में पा गया मंजिल,
काश ऐसा कभी जिया होता

काँटों पे चल के ही हँसा 'ज़ाहिद'[2]
काम रहबर[3] सा भी किया होता

❑❑

16 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. फूल की पत्ती, 2. संयमी, जितेन्द्रिय, 3. पथ प्रदर्शक

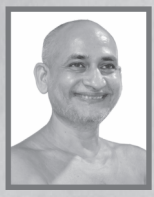

भूलें

कल की भूलें रुला रहीं सबको
आग जैसी जला रहीं सबको

जानते सब कि सुख न भोगों में
भोगों का विष पिला रहीं सबको

देखकर राह सुख की फूलों की
काँटों पर ही चला रहीं सबको

छोड़कर बहती उजालों की नदी
अँधेरों से मिला रहीं सबको

फैली हैं नर्म बर्गे-गुल[1] फिर भी
पत्थरों पे सुला रहीं सबको

ज़िन्दगी सामने खड़ी लेकिन
मौत संग गुल खिला रहीं सबको

भूलें 'ज़ाहिद'[2] को न रुला पाईं
अपना ग़म ख़ुद सुना रहीं सबको-

❑❑

16 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. फूल की पत्ती, 2. संयमी, जितेन्द्रिय

रूह का अदब

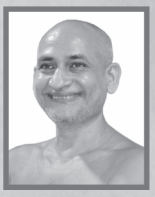

साथ ले चल हमें भी रब साक़ी
तुझसे ही रूह का अदब[1] साक़ी

बिन तेरे ज़िंदगी का क्या मतलब
तू ही बस मेरा एक हुब[2] साक़ी

सारी दुनिया को भूल बैठा हूँ
तू मिला हमको इस सबब[3] साक़ी

तुझसा यारब शकील[4] न कोई
तुझसा कोई नहीं जज़ब[5] साक़ी

मेरी साँसों में तू समाया है
तू तलब है तू ही तरब[6] साक़ी

दीन का औ यतीम का मुक़रब[7]
सारी दुनिया से तू अज़ब साक़ी

तेरी उल्फ़त[8] में जो जिया 'ज़ाहिद'[9]
मिट गई है ग़मों की शब[10] साक़ी

❑❑

16 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. आदर-सम्मान, 2. प्रेम, 3. कारण, 4. सुन्दर, 5. आकर्षण, 6. प्रसन्नता, 7. घनिष्ठ मित्र, 8. मुहब्बत, 9. संयमी, जितेन्द्रिय, 10. रात

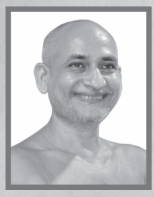

साथी

रब को साथी यहाँ बनाओ तुम
डूबकर उसमें ही मर जाओ तुम

जो मिला दे स्वयं से, मंजिल से
एक उस राह पे चल जाओ तुम

चाहे कितना भी जमाना रोके
रोज़ यारब से मिलने आओ तुम

दीद[1] यारब का ही रहे हरदम
यादों से रूह[2] को सजाओ तुम

राह में हो दुःखी यतीम कोई
उसको अपने गले लगाओ तुम

जो कभी टूटता नहीं रिश्ता
ऐसे रिश्तों के गीत गाओ तुम

मज़हबी फ़िरकापरस्ती[3] छोड़ो
मुक़रब[4] 'ज़ाहिद'[5] को बनाओ तुम

❑❑

17 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. दर्शन, 2. आत्मा, 3. साम्प्रदायिकता, 4. घनिष्ठ मित्र, 5. संयमी, जितेन्द्रिय

ख़ुदी-बेख़ुदी

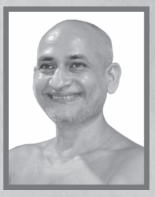

जल रहे लोग ख़ुदी[1] में हरदम
कर रहे ख़ुद पे बेख़ुदी[2] में सितम[3]

नामवर[4] सो रहे मज़ारों में
खो गये दाब[5] में यहाँ दमकदम[6]

साथ क्या लाया, क्या है ले जाना
कर रहा किसके लिये फिर तू असम[7]

जिस्म देता न साथ है फ़ानी[8]
साथ क्या देंगे फिर तेरे हमदम

रब ही उनका ज़हीर[9] जो बेकस[10]
कर तू ख़ुद पे करीम[11] जैसा करम[12]

छोड़ दिल से ख़ुदी ख़ुदा के लिये
अपने घावों पे ख़ुद लगा मल्हम

बेख़ुदी में भी हँस रहा 'ज़ाहिद'[13]
जल रहे, ना जला रहे वसु-करम[14]

❑❑

17 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. अहंभाव, 2. बेहोशी, जो अपने आपे में न हो, 3. जुल्म, अनर्थ, 4. प्रसिद्ध नाम वाले, 5. शान-शौकत, 6. जीवन और अस्तित्त्व, 7. पाप, 8. नश्वर, 9. मददगार, 10. जिसका कोई सहारा न हो, 11. ईश्वर का विशेषण, 12. अनुग्रह, 13. संयमी, जितेन्द्रिय, 14. आठ कर्म

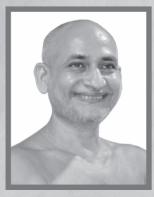

नामवर

नामवर[1] ना रहे जमाने में
मिट गये नाम ही कमाने में

हँस रहे आसमाँ-जमीं उन पर
शान-औ-शौकत लगे दिखाने में

वो ही पछतायेंगे यहाँ साक़ी
पा जवानी लगे इठलाने में

दुनिया है ये सराय दो दिन की
कब्रें सबको लगीं बुलाने में

ऐश-इशरत[2] में ही जीने - वाले
अपनी कश्ती लगे डुबाने में

हुक्म जिनका लकीर पत्थर की
ना रहे, हुक्मे-क़ज़ा[3] आने में

कौन भूला है उनको ऐ 'ज़ाहिद![4]
मस्त जो रब के गीत गाने में

❑❑

17 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. प्रसिद्ध नाम वाले, 2. भोग-आनन्द, 3. मौत का आदेश, 4. संयमी, जितेन्द्रिय

दर्दे-निहाँ

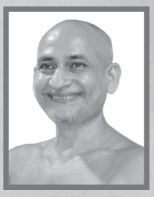

अपना दर्दे-निहाँ[1] सुनाऊँ किसे
ग़मज़दा सब, यहाँ बताऊँ किसे

नुक़्ताचीं[2] है यहाँ हर इक आदम
ज़ख़्म दिल के यहाँ दिखाऊँ किसे

प्रेम सबका यहाँ है मतलब का
याद किसको करूँ भुलाऊँ किसे

ग़ैरों को रोता देख हँसते हैं लोग
अपना साथी यहाँ बनाऊँ किसे

नैन मूँदे ही सो रहे हैं जो
जल के छींटे यहाँ लगाऊँ किसे

अपनी ख़ुशहाल ज़िंदगी के लिये
सख़्त दिल कर यहाँ मिटाऊँ किसे

चाह मेरी है बन सकूँ 'ज़ाहिद'[3]
राह चलते यहाँ हँसाऊँ किसे

❑❑

17 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. आंतरिक पीड़ा, छिपा हुआ दर्द, 2. ऐब या दोष निकालने वाला,
3. संयमी, जितेन्द्रिय

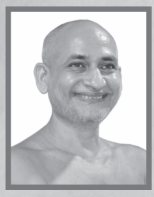

प्रार्थना

फूल मुरझाये भी खिल जायेंगे
प्रेम के गीत अहल[1] गायेंगे

हर तरफ होगा अमन-चैन तभी
दिल जो अश्कों से पिघल जायेंगे

तीर्थ होगा वतन हमारा ये
गंगा-जमुना से जो मिल जायेंगे

फिर न बदलेगा फ़िज़ा[2] का आलम[3]
भाईचारा जो दिल में लायेंगे

प्रार्थना रोज हो ख़ुशहाली की
दिन ख़िज़ाँ[4] के भी बदल जायेंगे

हो अदल[5] से ही सबके दिल रोशन
दिन तो ग़ुर्बत[6] के भी ढल जायेंगे

हो भला सबका जज़्बा[7] हो 'ज़ाहिद'[8]
अच्छी करनी का सुफल पायेंगे

❑❑

18 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. आदमी, 2. बहार, 3. संसार, 4. पतझड़, 5. न्याय, इंसाफ,
6. दरिद्रता, 7. भावना, 8. संयमी, जितेन्द्रिय

इश्क़े-दौलत

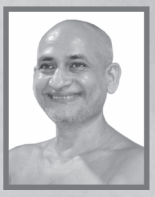

मंज़रे-मौत[1] सब नज़र आता
ग़मज़दा ग़म से कब उबर पाता

जी रहा कोई नाज़िनीं[2] के लिये
इश्क़े-दौलत[3] में डूब मर जाता

ऐश-इशरत[4] की आग में जल के
ज़िंदगी भर यहाँ क़हर[5] पाता

चैन देते न काख़ - ए - उमरा[6]
रात-दिन ग़म के ही अबर[7] पाता

जिस्में-फ़ानी[8] औ ज़हाने-फ़ानी[9]
काश इनसे कोई गुज़र पाता

जिनको कहता है ये जहाँ हमदम
काश इनको समझ शरर[10] पाता

कोई 'ज़ाहिद'[11] ही है हक़ीक़तदाँ[12]
डूबा रब में, न वो ज़रर[13] पाता

❑❑

18 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. मौत का दृश्य, 2. सुन्दरी, 3. दौलत के इश्क, 4. भोग-आनन्द, 5. विपत्ति, आफ़त, 6. अमीरों के महल, 7. बादल, 8. नश्वर शरीर, 9. नश्वर संसार, 10. आग की चिनगारी, 11. संयमी, 12. हकीकत को जानने वाला, 13. चोट

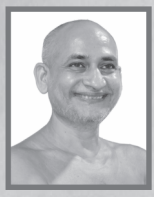

इश्क़

इश्क़[1] में जलते हैं मुर्दों की तरह
नासमझ लोग हैं ख़ुर्दों[2] की तरह

इश्क़ करना ख़ुदा के नूर[3] से कर
ज़िंदगी जी ले तू मर्दों की तरह

ढूँढता क्या तू जिस्में-नाज़िनीं[4] में
इश्क़ होता है बेदर्दों की तरह

रूह ही सत्य, शिव है, सुन्दर है
रूह पाने जी शागिर्दों[5] की तरह

इस जवानी का क्या मिज़ाज कहूँ
जल में उठती हुई लहरों की तरह

इश्क़ को जानता फ़क़त[6] 'ज़ाहिद'[7]
इश्क़ है द्वार के परदों की तरह

❑❑

18 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. प्रेम, मुहब्बत, 2. छोटों, 3. प्रकाश, 4. सुन्दरी के शरीर,
5. शिष्यों, 6. केवल, 7. संयमी, जितेन्द्रिय

मोह-मै

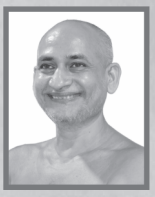

अब नहीं जीना गुलज़ारे-हस्ती[1]
अब नहीं पीना मोह-मै[2] मस्ती

हर दिले स्वार्थ का ज़हर देखा
इससे उजड़ी यहाँ कई बस्ती

उस समुन्दर में कूद जा जाके
मौज़ ख़ुद बनती जहाँ पे कश्ती

नाम हरदम लबों पे हो रब का
जीस्त[3] रब जैसी बने हो दुरुस्ती

जल रहे हैं चिता पे सबकी तरह
जिनको कहता जहाँ बड़ी हस्ती

जिस तरह लोग मर रहे लगता
मौत जीवन से हो गई सस्ती

कोई 'ज़ाहिद'[4] ही पा सका रब को
डूबा ख़ुद में मिली ख़ुदा मस्ती
❑❑

19 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. संसार रूपी वाटिका, 2. मोह रूपी शराब, 3. ज़िंदगी, 4. संयमी, जितेन्द्रिय

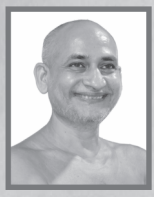

आग

आग जैसी हो लगाई जाये
ग़म की दुनिया ये जलाई जाये

ज़िन्दगी भर गई है बदबू से
फूलों की बगिया खिलाई जाये

रूह विकलांग हो रही हरदम
दवा बच्चों सी पिलाई जाये

मस्ती रब सी मिले न कर मातम
याद ग़ैरों की भुलाई जाये

पाना तख़लीस-नाज़िनीं[1] तुमको
आँख यारब से मिलाई जाये

मर रहा जो जहाने-फ़ानी[2] में
याद यारब की दिलाई जाये

मर के भी मरते न यहाँ 'ज़ाहिद'[3]
जीस्त ग़ाफ़िल जो सुलाई जाये

❑❑

19 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. मुक्ति वधु, मुक्ति सुन्दरी, 2. नश्वर संसार, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

माँझी

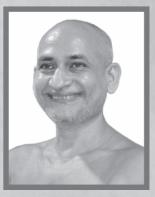

काली रातों को मिटाया जाये
घर में इक दीप जलाया जाये

कितने दिन हो गये न आया क़मर[1]
दे सदा[2] उसको बुलाया जाये

सो रहा गुलचीं[3] ख़िज़ाँ[4] का मौसम
गुलशने - रूह[5] खिलाया जाये

तूफाँ से कश्तियों को डर है अगर
माँझी यारब को बनाया जाये

दूर जन्नत[6] न होगा कदमों से
मुक्ति की राह जो जाया जाये

ज़िंदगी सबकी है पहेली सी
इसका हल सबको बताया जाये

काँटों का ताज पहनते 'ज़ाहिद'[7]
फूलों को दिल से भुलाया जाये

❑❑

19 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. चाँद, चन्द्रमा, 2. आवाज, 3. माली, 4. पतझड़,
5. आत्मा का गुलशन, 6. स्वर्ग, 7. संयमी, जितेन्द्रिय

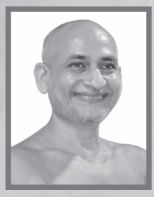

क़र्ज़

क़र्ज़ लौटाना फ़र्ज़ है सबका
क़र्ज़ करना तो मर्ज़ है सबका

करले कुछ कारख़ैर[1] तू आदम
बदनीयत से ही क़र्ज़ है सबका

ताजवर[2] भी डरा नहीं पाये
नातवानी[3] से लर्ज़[4] है सबका

प्रेम को क़र्ज़ मान लौटा दे
दुनिया में प्रेम गर्ज़[5] है सबका

चाह दौलत की मिटा दो दिल से
एक दौलत ही हर्ज़[6] है सबका

क्यों परेशाँ हो नर्म बिस्तर पे
अंत में कुर्र-ए-अर्ज़[7] है सबका

क़र्ज़ को मर्ज़ जानता 'ज़ाहिद'[8]
नाम किस्मत पा दर्ज़[9] है सबका
❑❑

19 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. शुभ कार्य, 2. राजा, बादशाह, 3. कमजोरी, अशक्तता, 4. कंपन, 5. प्रयोजन, 6. झगड़ा, उपद्रव 7. पृथ्वी, 8. संयमी, जितेन्द्रिय, 9.

किस्मत का तीर

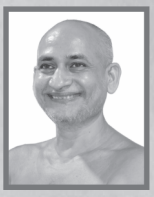

हमने आँखों में नीर देखा है
इंसाँ कोई ज़हीर[1] देखा है

जी रहा सबकी भलाई के लिए
हमने आदम कबीर[2] देखा है

जुल्म मतकर किन्हीं यतीमों पे
ख़ाक[3] होते कदीर[4] देखा है

जिनके दिल हो गये थे पत्थर दिल
वो पिघलते ज़मीर[5] देखा है

कोई ग़मगीं न हों जहाँ में कभी
हमने रब का बशीर[6] देखा है

रोते लोगों को हँसाता हरदम
आदमी में फ़क़ीर देखा है

खोदते ख़ाक ख़ज़ाना मिलना
हमने किस्मत का तीर देखा है

रब की सौगात बाँटता 'ज़ाहिद'[7]
हमने ऐसा अमीर देखा है

❑❑

20 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. मददगार, 2. श्रेष्ठ, 3. मिट्टी, 4. शक्तिशाली, बलवान,
5. मन, अन्तःकरण, 6. शुभ समाचार सुनाने वाला, 7. संयमी

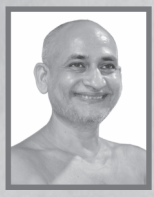

हमदाँ

कल मिले ना मिले जमाने में
करले शुभ काम तू जमाने में

जो किया साथ वही जायेगा
क्या मिले दाब[1] को दिखाने में

जी रहे जो फ़क़त[2] मिले हमदाँ[3]
वो लगे मौत को मिटाने में

कर ले अपने गुनाह से तौबा[4]
क्या रखा आशियाँ जलाने में

भरता ख़ुशियों से दुनिया का दामन
गुलशन-ए-रूह[5] को खिलाने में

ग़मज़दा हो अगर यतीम कोई
रब की ख़ातिर जिओ हँसाने में

पूछो क्यों हँसता-रोता है 'ज़ाहिद'[6]
रब में डूबा वो इस जमाने में

❑❑

21 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. शान-शौकत, 2. केवल, 3. सर्वज्ञ प्रभु, 4. अनुचित कार्य न करने की प्रतिज्ञा, 5. आत्मा का गुलशन, 6. संयमी, जितेन्द्रिय

आहे-ग़रीबाँ

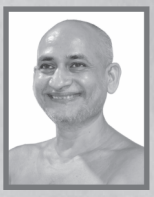

मत हँसो इतना, रोये हमसाया[1]
सबके जज़्बात[2] समझो हमपाया[3]

सबके दिन एक से नहीं होते
जो ख़रीददार, वो कभी बाया[4]

आहे-ग़रीबाँ[5] को पहचानते जो
उनपे रहता सदा रब का साया

काम नेकी का करें दुनिया में जो
उनकी होती कभी बदी[6] आया[7]

शानो-शौकत को पाके इठला मत
घर है मिट्टी का देखले काया

जलती है बर्फ़ में भी जब अँगुली
आग से कौन है जो बच पाया

जुस्तजू[8] कर रहा हूँ 'ज़ाहिद'[9] की
जीना हमको भी तो ज़ेरे-साया[10]

❑❑

21 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. पड़ौसी, 2. भावनायें, 3. बराबर की मर्यादा वाली, 4. ग्राहक,
5. गरीबों की पीड़ा, 6. बुराई, 7. क्या, 8. तलाश, खोज
9. संयमी जितेन्द्रिय, 10. किसी की छाया के नीचे

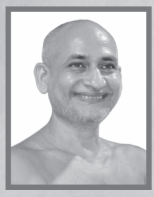

रब सा साक़ी

होंठ भी अब मेरे लगे जलने
नाम रब के सिवा लगे छलने

जब से हमको मिला रब सा साक़ी
काँटे भी फूल बन लगे खिलने

ज़िन्दगी मेरी बंदगी के लिये
ख़ुदबख़ुद[1] पाँव अब लगे चलने

रूह से मिलने की न अब बंदिश
अब्रे-असम[2] भी अब लगे खुलने

धड़कनों में संगीत है रब का
और संगीत सब लगे खलने

किसकी यादों का खिलाऊँ गुलशन
रब के बिन कोई न आता मिलने

बनके 'ज़ाहिद'[3] क़रीब हूँ रब के
ग़म के अँधियार अब लगे ढलने

❑❑

21 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. स्वत:, आपसे आप, 2. पाप के बादल, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

मौसम

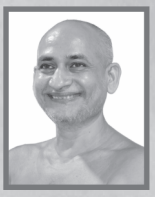

आज मौसम अज़ीब देखा है
ख़ुद को रब के क़रीब देखा है

हमको फ़ुर्सत भी कहाँ थी पलभर
आज रब में नसीब देखा है

हम तरसते थे दोस्ती के लिये
आज रब में हबीब[1] देखा है

दीद[2] करना था पाक दामन का
आज रब सा नजीब[3] देखा है

ख़ुद गुनाहों ने कर ली है तौबा
हमने रब को ग़रीब देखा है

जो दु:खों का मरज़ मिटा देता
हमने रब सा तबीब[4] देखा है

रूह को चाहता सदा 'ज़ाहिद'[5]
हमने रब को रक़ीब[6] देखा है

❑❑

21 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. मित्र, दोस्त, 2. दर्शन, 3. कुलीन, 4. चिकित्सक, वैद्य 5. संयमी, जितेन्द्रिय, 6. दूसरा प्रेमी

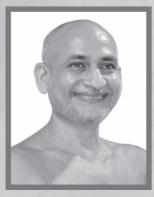

जहाने-फ़ानी

लोग क्यों मिलके जुदा होते हैं
जो जुदा हों, न ख़ुदा होते हैं

मिलके जो फिर कभी नहीं बिछुड़ा
इस जहाँ में वो ख़ुदा होते हैं

रातभर ही चमकते हैं अंजुम[1]
दिन उजाले में विदा होते हैं

जानकर सच जहाने-फ़ानी[2] का
जाने क्यों लोग फ़िदा[3] होते हैं

जी जलालत[4] में गीत गा रब के
पुण्य से माल-मता[5] होते हैं

चश्म[6] से अश्क बग़ाबत[7] चूँ[8] करें
लोग ऐसे वो ज़दा[9] होते हैं

'ज़ाहिद'[10] दुनिया से कुछ जुदा सा लगा
नूरे - दीदा - ए-ख़ुदा[11] होते हैं

❑❑

22 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. तारे, 2. नश्वर संसार, 3. आसक्त, मुग्ध, 4. श्रेष्ठता,
5. धन-दौलत, 6. आँख, 7. विद्रोह, 8. इसलिये,
9. जिस पर आघात लगा हो,

मुलाकात

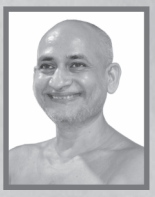

हर मुलाकात अहम होती है
रब की हर बात अहम होती है

उसकी सारा जहाँ करे सजदा
जिसपे यारब की करम[1] होती है

दाब[2] में जी रहे जो रब को भुला
ज़िंदगी उनकी अदम[3] होती है

करते अपने गुनाहों से तौबा
जिनको थोड़ी भी शरम होती है

करते नेकी, परीशाँ[4] आदम की
जिनकी हर जज़्बा[5] नरम होती है

जिसकी दम रब समाया है उसकी
हर शबे-ग़म[6] ही ख़तम होती है

रब का बंदा है पाकदिल 'ज़ाहिद'[7]
बंदगी उसकी नज़्म[8] होती है

❑❑

22 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. कृपा, मेहरबानी 2. शान-शौकत, 3. न होना, अनस्तित्त्व
4. परेशान, 5. भावना, 6. ग़म की रात, 7. संयमी, 8. कविता,

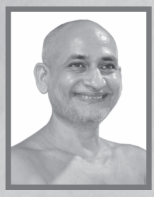

आमाल

अपना आमाल[1] गर नज़र आये
इन्साँ के दिल से हज़ो[2] मर जाये

कौन है जिसमें कोई ऐब नहीं
झाँक ख़ुद में बदी[3] नज़र आये

दीद[4] आफ़्ताब[5] का जिसे सू[6] लगे
वो हमें बूम[7] ही नज़र आये

जो भलाई को मानता है ख़ुदा
वो गुनाहों से ख़ुद उभर जाये

आइना हो गया है दिल जिनका
उनके घर बनके रब क़मर[8] आये

जीस्त काँटों पे गुज़रना मुमकिन
रब का पैगाम चूँ[9] असर लाये

दिखता 'ज़ाहिद'[10] ही पाकबाज़[11] यहाँ
वो दिलगुदाज़[12] सा नज़र आये

❑❑

23 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. आचरण, 2. निन्दा, शिकायत, बुराई 3. बुराई, 4. दर्शन, 5. सूरज, 6. बुरा, खराब, 7. उल्लू, 8. चाँद, 9. अगर, 10. संयमी, जितेन्द्रिय, 11. सच्चरित्र, 12. हृदय द्रावक

शुहूद

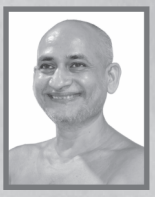

हमने जलता चिराग़ देखा है
अपने घर में प्रयाग देखा है

जीता किसके लिये अरे पगले
स्वार्थ में रोते राग देखा है

राग रब का भी छोड़ना होगा
स्वच्छ जल का भी दाग़ देखा है

जिसने ख़िदमत[1] की यति-यतीमों की
मौत को बाग़-बाग[2] देखा है

न यहाँ कोई हमसफ़र - हमदम
रिश्ता हर सब्जबाग[3] देखा है

जू[4] समन्दर से मिलन को बेकल[5]
हमने ऐसा सुराग़ देखा है

होती अक्सर शुहूद[6] 'ज़ाहिद'[7] की
बंदगी में सुहाग देखा है।

❑❑

23 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. सेवा, 2. बहुत अधिक प्रसन्न, 3. झूठी आशा, 4. नदी, 5. बैचेन, 6. मन की वह अवस्था जिसमें संसार की सब चीजों में ईश्वर ही ईश्वर दिखाई देता है, 7. संयमी, जितेन्द्रिय

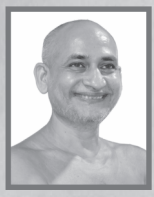

एतबार

अब न फूलों से प्यार करते हैं
काँटों का इंतिज़ार करते हैं

हमने की है बहुत ख़ता[1] अब तक
रब के दर पे इज़्हार[2] करते हैं

गुलशने-जीस्त[3] हो गया वीराँ
रूह से ही दुलार करते हैं

चाँद के सामने फ़ीके अंजुम[4]
होके क्या बेशुमार[5] करते हैं

आग वो ही लगायेंगे मुझमें
जिनका हम एतबार[6] करते हैं

मौत की फ़िक्र न रही हमको
क्या कज़ादाँ[7] ख़ुमार[8] करते हैं

होता दिलशाद हर कोई 'ज़ाहिद'[9]
लोग लहरों से प्यार करते हैं

❑❑

24 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. कसूर, गलती 2. जाहिर, 3. ज़िंदगी का गुलशन, 4. सितारे,
5. असंख्य, 6. विश्वास, 7. मौत को जानने वाले, 8. नशा,
9. संयमी जितेन्द्रिय

बर्फ़

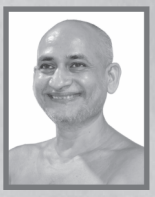

ज़िंदगी उनकी बदलती है यहाँ
अपनी गलती जिन्हें खलती है यहाँ

ख़ुद को पाने की जुटा ले हिम्मत
शब[1] न कौन सी ढलती है यहाँ

संगदिल से घृणा न करना कभी
बर्फ़ कैसी हो पिघलती है यहाँ

प्रेम रब से करो या दुनिया से
प्रेम की आग तो जलती है यहाँ

डूबा जो रब की बंदगी में ही
रूह उसकी ही सँभलती है यहाँ

तन किराये का मकाँ ना तेरा
दरिया घाटों से निकलती है यहाँ

करता 'ज़ाहिद'[3] गुनाहों से तौबा
जीस्त उस जैसी न मिलती है यहाँ

❑❑

24 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. रात, 2. पत्थर दिल, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

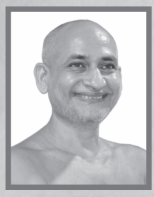

गदा

मर के आदम ही ख़ुदा होता है
जो नहीं अपना जुदा होता है

दे रहा टेर हमें दिल मेरा
क्यों तू दुनिया पे फ़िदा[1] होता है

ऐश-इशरत[2] औ शानो-शौकत में
जीने वाला भी विदा होता है

भूख रब की हो या शिकम[3] की हो
ऐसा इन्साँ ही गदा[4] होता है

चाहते ना कभी दुकाँ-ओ-मकाँ
रूह ही जिनका क़दा[5] होता है

झुकती उसकी ही शाख[6] मस्ती में
गुल से जो दरख़्त[7] लदा होता है

पाने हमदाँ[8] को जो बना 'ज़ाहिद'[9]
उनका ही फ़र्ज अदा होता है

❑❑

24 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. मुग्ध, आसक्त 2. भोग-आनन्द, 3. पेट, 4. भिक्षुक, 5. मकान, घर, 6. टहनी, शाखा, 7. वृक्ष, 8. सर्वज्ञ प्रभु, 9. संयमी, जितेन्द्रिय

तख़लीस नाज़िनीं

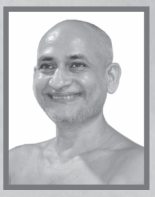

तख़लीस-नाज़िनीं[1] से जब होता निकाह[2] है
सच कहता वहाँ मरना भी होता गुनाह है

सब लोग चाहते सदा दिलशाद हो जियें
वो ग़मज़दा हैं जिनकी जीस्त[3] ही सियाह[4] है

हसरत से कब किसे मिली, ख़ुदा की संपदा
पाता वही बंदा जो चला रब की राह है

ख़ुद जलके भी जो रोशनी बाँटे जहान को
तख़लीस नाज़िनीं की उसी पे निगाह है

जो लोग जी रहे हैं यहाँ रोब-दाब[5] में
आती है जब कज़ा[6] तो निकलती कराह है

मायूस वो न हों जिन्हें मिलता नहीं अदब
इंसानियत मिले समझ ख़ुदा-गवाह[7] है

'ज़ाहिद'[8] के सिवा सब हैं मुसाफिर जहान के
उनके भी लब पे रब का नाम गाह-गाह[9] है

❑❑

24 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. मुक्ति वधु, मुक्ति सुन्दरी, 2. विवाह, 3. ज़िंदगी, 4. अशुभ,
5. आतंक और त्रास, 6. मौत, 7. खुदा साक्षी, 8. संयमी,
9. कभी-कभी

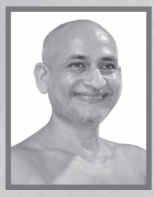

हमारा हो जाये

हर नज़र में नज़ारा हो जाये
एक रब तू हमारा हो जाये

तुझको पाने ही छोड़ दी दुनिया
जीस्त[1] तुझ संग सितारा हो जाये

तेरे कदमों की धूल बनकर ही
ज़िंदगी का गुज़ारा हो जाये

और चाहे न अब किसी को दिल
तू ही मेरा दुलारा हो जाये

कौन तुझसा ज़हीर[2] दुनिया में
हर किसी का जो प्यारा हो जाये

तुझको पाना ही ख़ुद को पाना है
इस जहाँ से किनारा हो जाये

कहता 'ज़ाहिद'[3] तू आ जा दिल में मेरे
मौत भी बेसहारा हो जाये

❑❑

25 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. ज़िंदगी, 2. मददगार, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

कश्ती

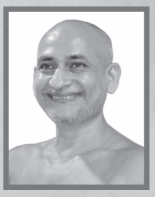

मँझधार में रही है, रहेगी तेरी कश्ती
जब तक न ज़िंदगी में होगी ख़ुदा-परस्ती[1]

मत कर ग़रूर रूप का, धन का, नजीब[2] का
सब ख़ाक हो गई हैं नामवर[3] बड़ी हस्ती

सब कुछ भुला के जी रहे भोगों की ज़िंदगी
सच कहता उन पे ज़िंदगी रोती क़ज़ा[4] हँसती

दैरो-हरम[5] मिला मगर ख़ुद में ख़ुदा नहीं
संसार है हिजराँ-नसीब[6] लोगों की बस्ती

सुख-दुःख में रब का नाम भुलाया नहीं जिसने
उसने ही पाई है यहाँ रब की तरह मस्ती

'ज़ाहिद'[7] की ज़िंदगी में करिश्मा तो देखिये
दुनिया के साथ-साथ यहाँ मौत भी झुकती

❑❑

25 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. धर्मनिष्ठा, 2. कुलीन, 3. प्रसिद्ध नाम वाले, 4. मौत, 5. मन्दिर-मस्जिद, 6. जिसके भाग्य में सदा प्रिय से अलग रहना लिखा हो, 7. संयमी

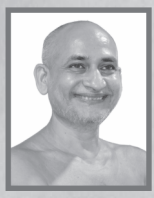

शम्से इरफ़ान

मौत का जश्न मनाया होता
दो घड़ी-ध्यान लगाया होता

देखते लोग फूलों की रंगत
रंगते-रूह[1] को पाया होता

रहते न ग़म न ग़मज़दा कोई
दिल में गर रब को बुलाया होता

फिर न होता मिलन अँधेरों से
शम्से - इरफ़ान[2] उगाया होता

रहता न कुछ भी पाना गीती [3] में
ख़ुद में ख़ुद को ही चूँ[4] पाया होता

दिल न रोता कभी किसी का भी
रोते आदम को हँसाया होता

मौत का जश्न मनाता 'ज़ाहिद'[5]
उसको आदर्श बनाया होता

❑❑

26 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. आत्मा की रंगत, 2. ज्ञान का सूर्य, 3. संसार, 4. अगर,
5. संयमी, जितेन्द्रिय

मुकाम

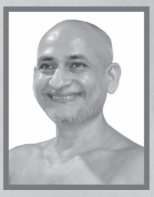

मिलना है तो ऐसे मिलो मुकाम[1] मिल सके
खिलना है तो ऐसे खिलो अवाम[2] खिल सके

मिट जायें दिल की दूरियाँ जी ऐसी ज़िंदगी
तूफाँ भी हिलायें, नहीं इन्सान हिल सके

अपनी ख़ुशी में करना मत तबाह ग़ैर को
जल बनके शमा जिससे बुझा दीप जल सके

देखे हैं शूर कई जिन्हैं बल का ग़रूर था
जब आई क़ज़ा[3] लेने न करवट बदल सके

होता है कदरदाँ[4] कोई दुनिया में सब नहीं
यह सोचकर कि ज़िंदगी रब सी सँभल सके

अपने उसूल[5] पे जो रहा करते हैं अडिग
'ज़ाहिद'[6] की राह चल नये पैगाम[7] मिल सके

❑❑

27 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. रहने का स्थान, घर 2. जनसाधारण, 3. मौत,
4. गुण ग्राहक, 5. सिद्धान्त, 6. संयमी, 7. संदेश

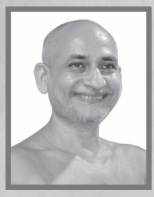

आदत में इबादत

जो पाकदिल है दुनिया में वो ही कबीर[1] है
जिस दिल में बंदगी है वो आदम अमीर है

महावीर ने कहा है जिओ और जीने दो
इस राह चल दिखाये वो आदम कदीर[2] है

नफ़रत न कर किसी से है छोटी सी ज़िंदगी
सबको गले लगाये वो आदम नसीर[3] है

लाचार बैठे राह में होकर यतीम जो
अपना उन्हें बनाये वो आदम ज़हीर[4] है

सब लोग मुसाफ़िर हैं मिले हैं सराय में
यह सच समझ में आये तो आदम फ़कीर है

काँटों की राह चलके ही मंज़िल मिले यहाँ
फूलों से दिल लगाये वो आदम ग़दीर[5] है

आदत में इबादत का दीद करता जो 'ज़ाहिद'[6]
उनका जहाने-फ़ानी[7] से समझो अख़ीर है

❑❑

28 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. श्रेष्ठ बड़ा, 2. बलवान, शक्तिशाली 3. मददगार, ईश्वर का नाम, 4. मददगार, 5. धोखेबाज, 6. संयमी, 7. नश्वर संसार

ज़ाहिद

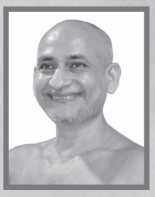

अश्क आँखों में छलक आते हैं
ख़्यालों में गुरु की झलक पाते हैं

रिश्ता कितना अजीब होता है
तन्हा रहते वो जान पाते हैं

सादगी जैसे ख़ुशबू हो गुल की
जानते वो जो गुरु को पाते हैं

इंतहा हो गई है नफ़रत की
प्रेम में डुबकियाँ लगाते हैं

चाह तख़लीस-नाज़िनीं[1] की इन्हें
ध्यान इसके लिये लगाते हैं

ज्ञान हमको दिया है जो गुरु ने
हर घड़ी याद कर बिताते हैं

जीस्त गुरुचरणों समर्पित मेरी
मौन रहकर भी गुनगुनाते हैं

भूल पाना गुरु को नामुमकिन
गुरु की यादों से दिल सजाते हैं

वीतरागी हैं निष्पृही गुरुवर
देख चर्या ख़ुदा को पाते हैं

हमको भी चलना राह गुरुवर की
बनके 'ज़ाहिद'[2] ही मोक्ष पाते हैं

❑❑

29 दिसम्बर 2004
भानपुरा

---

1. मुक्ति वधु, मुक्ति सुन्दरी, 2. संयमी

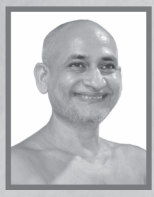

गुरुदेव

गुरुदेव के दीदार[1] से आँखें सजल हुईं
गुरुदेव के गुणगान से बातें ग़ज़ल हुईं

आकाश ही अम्बर है धरती इनका बिछौना
गुरुदेव से मिलकर मुलाकातें अमल[2] हुईं

गुरु ज्ञान का समन्दर हैं इस जहान में
गुरुदेव की हर इक नसीहतें[3] फ़ज़ल[4] हुईं

गुरुदेव की मिल जाये ख़ाके-पा[5] जिसे यहाँ
समझो निसार[6] खुशियाँ उस पे दरअसल हुईं

अपने में रहना मुख से हित की बात ही कहना
गुरुदेव की चर्या की यादें अदल[7] हुईं

गुरुदेव ध्यान लीन हों महावीर सम लगें
पा दर्शभक्तों की भी ज़िंदगी कमल हुईं

गुरुदेव का नित साथ हो 'ज़ाहिद'[8] की चाह है
गुरुदेव के बिना ही ज़िंदगी क़तल हुईं

❑❑

29 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. दर्शन, 2. आचरण, 3. उपदेश, शिक्षायें, 4. दया, अनुग्रह, 5. चरण रज, 6. न्यौछावर, 7. न्यायशील, 8. संयमी

मिलके जाना

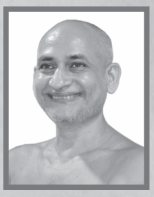

आये हो इस जहाँ में, ख़ुद से ही मिलके जाना
ग़ैरों से मिलते सभी, ख़ुद को अपना बनाना

भोगों की इस दरिया में - प्यास बुझती कहाँ है
जितना भी डूबो इसमें-प्यास बढ़ती वहाँ है
भोगों में डूब मरना इस जहाँ का फँसाना
आये.....।

कौन हमदम है किसका-साथ कितना निभाते
मौत जब लेने आती-वादे सब भूल जाते
मतलबी लोग यहाँ-मतलबी है ज़माना
आये.....।

ज़िंदगी चार दिन की-इसको मत भूल जाना
कारवाँ, कार, कोठी-इसको पा मत इठलाना
छूट जायेगा यहीं-सारा दौलत ख़ज़ाना
आये.....।

रूप के ओ दिवाने-रूह का रूप चोखा
देह का रूप धोखा-जैसे वायु का झौंका
ज्ञान-दर्शन ये तेरा-रूप कितना सुहाना
आये.....।

❑❑

30 दिसम्बर 2004
भानपुरा

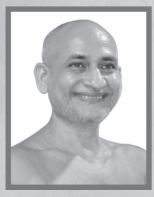

पर्दा हटाइये

पाना है रब को गर तुम्हें पर्दा हटाइये
अपनी नज़र को रब की नज़र से मिलाइये

रब की नज़र से बच न सका कोई भी इंसाँ
अपनी नज़र में रब की चाह को जगाइये

दरिया किनारे बैठ के मिलते नहीं मोती
मिल जायेंगे बस दरिया में डुबकी लगाइये

हर इंसाँ में, दरख़्त में, जल में दिखेगा रब
अपनी नज़र को रब की नज़र सा बनाइये

सच कहता हूँ रब तुझको मिलेगा उसी घड़ी
आमाल[1] सिर्फ अपना रब सा बनाइये

दौलत हो या शौहरत हो जाती है मसान तक
इसके लिये न अपनी ज़िंदगी गँवाइये

'ज़ाहिद'[2] सा न शोला-रू[3] है कोई जहान में
दीदार[4] पाने अपना ख़जाना लुटाइये
❑❑

30 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. आचरण, 2. संयमी, 3. स्वरूपवान, बहुत ही सुन्दर, 4. दर्शन

छत में दरार है

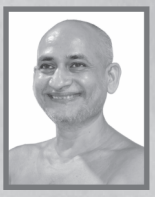

पानी टपक रहा है तो छत में दरार है
इंसान रो रहा है तो किस्मत की मार है

होते हैं ख़ाक आग में जलकर सभी यहाँ
जलता जो स्वर्ण आग में लाता निख़ार है

तूफाँ में भी झुकने की न आदत है किसी की
दरख़्त[1] झुक रहा है तो फूलों का भार है

फलदार वृक्ष मौन है पत्थर की चोट खा
इंसान को शैतान से भी होता प्यार है

दुनिया में पुण्य-पाप का संयोग देखिये
आदम चढ़ा डोली में आदमी कहार है

मिट जाने दे, खो जाने दे सागर में मौज को
सागर स्वयं हो जाओगे गर एतबार है

सब कुछ लुटा के देख ले 'ज़ाहिद'[2] तू एक बार
आनन्द का ख़ज़ाना तुझमें बेशुमार है

❑❑

31 दिसम्बर 2004
भानपुरा

1. वृक्ष, 2. संयमी, जितेन्द्रिय

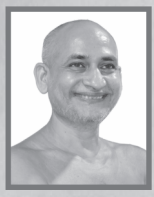

रब की चाह में

सब कुछ लुटा रहा है वो रब की चाह में
तख़लीस-नाज़िनीं[1] है उसकी निगाह में

होकर के ख़ाक भी जो कभी ख़ाक न हुआ
रब नाम रहा होगा उस दिल की आह में

हँसता हुआ चेहरा ही बयाँ कर रहा होगा
फूलों को पाया होगा, काँटों की राह में

आती हुई क़ज़ा[2] से न डरता है वो आदम
जीवन बिताया होगा रब की पनाह में

नज़रें चुराता है वो अपनों से भी हरदम
अपना सा दिखा होगा-साक़ी इलाह[3] में

सबकी ये शानोशौकत दो क्षण का ठाठ है
इसके लिये जींता क्यों आदम गुनाह में

सच कहता हूँ 'ज़ाहिद'[4] वो यारब का है बंदा
रब को ही बुलाता जो, शुभ में सियाह[5] में

❑❑

2 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मुक्ति सुन्दरी, मुक्ति वधु 2. मौत, 3. ईश्वर, 4. संयमी, 5. अशुभ

ज़माने में

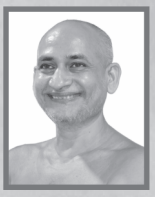

दीद[1] ग़म का है इस ज़माने में
रहते हम फिर भी इस ज़माने में

आज मिलना है कल बिछुड़ना है
क्या मिला घर यहाँ बसाने में

जख़्म 'इतने कि दिल हुआ छलनी
फिर भी रिश्ते नये बनाने में

प्यासा रहता वो समंदर हरदम
रात-दिन प्यास भी बुझाने में

मर गये लोग सिकंदर जैसे
न मिला वैद्य इस ज़माने में

शान-ओ-शौकत में ही जीने वालो
रोओगे तुम भी कल ज़माने में

जुल्म है प्यार-मुहब्बत भी यहाँ
आग लग जाये इस ज़माने में

दिल से 'ज़ाहिद'[2] फ़ना[3] करता गीती[4]
ग़म सिवा क्या मिला ज़माने में

❑❑

3 जनवरी 2005
भानपुरा

1. दर्शन, 2. संयमी, 3. नाश, 4. संसार

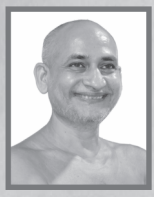

रोते

देखा है समुन्दर को भी हमने यहाँ रोते
जब जाते लोग मयकदे[1] में ग़म वहाँ खोते

ख़ुद को भी न समझ सके ग़ैरों की चाह में
जागे हुये इंसान भी देखे यहाँ सोते

ख़ुद अपना बोझ ढो सकें ताकत न थी जिनमें
दिले बेवफ़ा का बोझ भी देखा यहाँ ढोते

तस्वीर है जिसकी यहाँ बिल्कुल ख़ुदा जैसी
देखा है हमने उनको भी खाते यहाँ गोते

इंसान से इंसान का रिश्ता अजीब है
देखा है उसकी राह में काँटे यहाँ बोते

जीते थे शान में जो, मिल गये वो ख़ाक में
देखे हैं ऐसे हादसे हमने यहाँ होते

'ज़ाहिद'[2] ने ही तोड़ा यहाँ रोने का सिलसिला
कहते हैं लोग उसको भी देखा यहाँ रोते

❑❑

4 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मैख़ाना, 2. मधुशाला, 3. संयमी

गुरु के दिल में

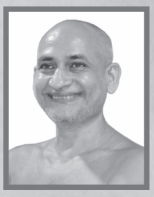

गुरु के दिल में हमें मंदिर दिखाई देता है
गुरु की नज़रों में समुन्दर दिखाई देता है

फूल से झरते हैं सच कहता गुरूवाणी में
इनके जैसा न तवंग़र[1] दिखाई देता है

सारी दुनिया में खोजा रब को कहीं भी न दिखा
गुरु की चर्या में वो मंज़र[2] दिखाई देता है

प्रेम सबका यहाँ मतलब का कौन है अपना
प्रेम गुरुदेव के अंदर दिखाई देता है

जिससे इन्सान भी भगवान सा पूजा जाता
गुरु में वो सत्य शिव सुन्दर दिखाई देता है

कर्मों का काटना तुझको ले पंचगुरु शरणा
गुरु के हाथों में वो ख़ंजर[3] दिखाई देता है

खाईं हर दर पे सबने ठोकरें यहाँ अब तक
गुरु के जैसा न अमन दर दिखाई देता है

करने सब पे करम[4] सब छोड़ बन गया 'ज़ाहिद'[5]
गुरु के जैसा न कलंदर[6] दिखाई देता है

❑❑

4 जनवरी 2005
भानपुरा

1. धनवान, 2. दृश्य, 3. तलवार, 4. दया, 5. संयमी, 6. त्यागी, साधु

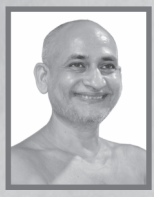

दिखाई देता है

गुरु के दिल में हमें क्या-क्या दिखाई देता है
कभी दरिया कभी सागर दिखाई देता है

गुरु ने हर आदमी की रूह को सँवारा है
गुरु के हाथों में करिश्मा दिखाई देता है

जी रहे लोग जो मुर्दों की तरह दुनिया में
गुरु की मुस्कान में जीवन दिखाई देता है

जिसको ठुकरा दिया सारे जहाँ ने है बेबस
गुरु के चरणों में सहारा दिखाई देता है

देखना जिसको अपना चेहरा वो आकर देखे
दीद में गुरु के आइना दिखाई देता है

पैरों में पड़ गये छाले तलाशते मंज़िल
गुरु में मंज़िल का नज़ारा दिखाई देता है

रब को किसने यहाँ देखा है शक्ल-ओ-सूरत से
गुरु में ही रब का इशारा दिखाई देता है

जिसने चाहा है गुरु को दिल से बन गया 'ज़ाहिद'[1]
उसकी किस्मत में किनारा दिखाई देता है

❑❑

5 जनवरी 2005
भानपुरा

1. संयमी, जितेन्द्रिय

देखा है

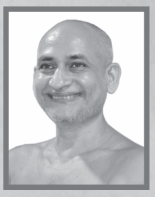

हमने अपना ज़मीर[1] देखा है
ख़ुद में रब सा कबीर[2] देखा है

जिसको आता नहीं बुढ़ापा कभी
ऐसा पीरों[3] का पीर[4] देखा है

डर रही अब क़ज़ा[5] भी आने में
ऐसा धीरों का धीर देखा है

जो कभी-भी नहीं हुआ मैला
ऐसा चीरों का चीर देखा है

जिसको पीने से प्यास मर जाती
ऐसा नीरों का नीर देखा है

सारी दुनिया में है जिसका रुतबा
ऐसा मीरों का मीर देखा है

मौत के घर में जो ला दे मातम
ऐसा तीरों का तीर देखा है

'ज़ाहिद'[6] जिसके लिये है जिंदा यहाँ
ऐसा वीरों का वीर देखा है

❑❑

5 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मन, अन्त:करण, 2. श्रेष्ठ, 3. बुजुर्गों, 4. बुजुर्ग, सिद्ध,
5. मौत, 6. संयमी, जितेन्द्रिय

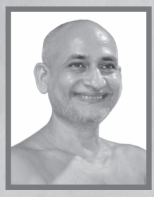

नसीहत

क़िस्मत को अपनी तीर के जैसा बनाइये
जीवन को महावीर के जैसा बनाइये

आमाल[1] से ही मिलता है जन्नत[2] व जहन्नुम[3]
जन्नत के लिये आचरण वैसा बनाइये

बहती हुई नदी यही देती है नसीहत[4]
प्यासे को देना पानी न पैसा दिखाइये

घर में रहो मगर न कभी घर के ही रहो
मन को न अपने भँवरे के जैसा बनाइये

सब त्याग, सबको त्याग का रस्ता दिखा दिया
मावस[5] में ख़ुद को चाँद के जैसा बनाइये

बनकर के दीप जलता रहूँ राह में हरदम
भावों को वीतराग के जैसा बनाइये

हर दिल अज़ीज़[6] होती है 'ज़ाहिद'[7] की ज़िंदगी
इशरत[8] में दिल न काँटों के जैसा बनाइये

❑❑

5 जनवरी 2005
भानपुरा

1. आचरण, 2. स्वर्ग, 3. नरक, 4. उपदेश, 5. अमावस,
6. माननीय, 7. संयमी, 8. सुख, भोग

अपना पता

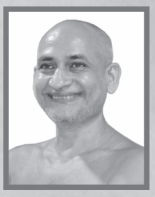

काश इंसान को इंसान मिल गया होता
सच उसे ख़ुद में ही भगवान मिल गया होता

ज़िंदगी में न कभी आता ख़िज़ा[1] का मौसम
जैसे गुलशन को बाग़बान मिल गया होता

दिल में न रहती कभी नफ़रतों की दीवारें
प्रेम को हर दिले सम्मान मिल गया होता

लोग लड़ते यहाँ फ़िरकापरस्ती[2] में हरदम
भाईचारे में ये आलम बदल गया होता

स्वार्थ में जीने वाले जीते घर की कब्रों में
दिल बदलते ही गुलिस्तान मिल गया होता

जो मिला दुनिया में सब छोड़ यहीं जाना है
इतना इंसान को गर पता चल गया होता

ज़िंदगी में जो बना इंसाँ भी 'ज़ाहिद'[3] जैसा
उसको अपना पता ख़ुद में ही मिल गया होता

❑❑

5 जनवरी 2005
भानपुरा

1. पतझड़, 2. साम्प्रदायिकता, 3. संयमी

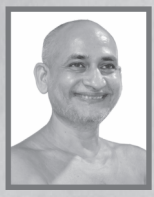

रब आओ तो सही

दिल में हम अपने बसा लेंगे रब आओ तो सही
दिल भी हम अपना दिखा देंगे रब आओ तो सही

ख़्वाबों में भी तेरा दीदार[1] करेंगे हरदम
अपनी आँखों में छुपा लेंगे रब आओ तो सही

जीना मंजूर हमें बस तेरी इबादत में
सारी दुनिया को भुला देंगे रब आओ तो सही

राह में हो अगर अँधेरा बता दो हमको
आग दुनिया में लगा देंगे रब आओ तो सही

पूछते हैं परिन्दे इंसाँ क्यों डूबे ग़म में
ग़म सभी अपने मिटा देंगे रब आओ तो सही

गा रहा हूँ मैं सिफ़त[2] रात दिन तुम्हारे ही
हम तुम्हें अपना बना लेंगे रब आओ तो सही

मेरे जज़्बात आके देख लो मेरे यारब
तुझे पलकों पे बिठा लेंगे रब आओ तो सही

हो गई मुझसे अगर कोई भी ख़ता[3] सुन ले
उसकी हम अर्थी उठा देंगे रब आओ तो सही

रात-दिन तेरी ही यादों में तड़फता 'ज़ाहिद'[4]
गुलशने-रूह[5] खिला लेंगे रब आओ तो सही

❑❑

6 जनवरी 2005
भानपुरा

1. दर्शन, 2. गुण, 3. गलती, कसूर, 4. संयमी, 5. आत्मा का गुलशन

अमन

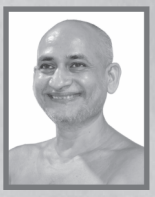

लोग कहते जुदा हुआ है बहारों का चमन
सोचता हूँ मैं हुआ मेरा बहारों से मिलन

ऐश-इशरत[1] में सुकूँ खोजता है हर आदम
हमने पाया है यहाँ रूह की चाहत में अमन

सबके किरदार भी झूठे, सभी वादे झूठे
साथ दो पल का निभाने करें जीवन का हवन

जिसने भी छोड़ा यहाँ दिल से मोह माया को
उसने ही पाया है यारब की तरह आत्मभवन

मन के दर्पण में जिसने देख ली सूरत अपनी
कर सका है वही आदम यहाँ इंद्रिय का दमन

जितना-जितना लुटाओगे हाँ पाओगे उतना
सब लुटा जाओगे मिल जायेगा खुद में भगवन्

सारी दुनिया से जुदा होता है 'ज़ाहिद'[2] हरदम
मौत आयेगी हँसेगी न दिखेगा जो कफ़न

❑❑

6 जनवरी 2005
भानपुरा

1. भोग-आनन्द, 2. संयमी, जितेन्द्रिय

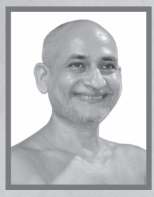

मेरा हमदम

जितना रब को यहाँ भुलाता हूँ
उतना रब को क़रीब पाता हूँ

ढूँढते थे कभी बहारों में
आज ख़ुद में ही रब को पाता हूँ

रब की यादें मुझे हँसाती हैं
इसलिये रब से दिल लगाता हूँ

रब में मुझको दिखाई दी मंज़िल
रब के नक़्शे-पा पग बढ़ाता हूँ

मेरा हमदम है रब मेरा साथी
साथ रहने की क़सम खाता हूँ

सच कहूँ रब नसीब है मेरा
सारी ख़ुशियाँ उसे लुटाता हूँ

रब के कदमों में मिली है जन्नत[1]
रब को हरदम दिले बसाता हूँ

रब को पाने ही मैं बना 'ज़ाहिद'[2]
रब में ही डूब के मर जाता हूँ

❑❑

6 जनवरी 2005
भानपुरा

1. स्वर्ग, 2. संयमी जितेन्द्रिय

कमाल

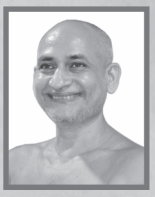

जो चाहते हैं दिल से यारब तुझे हरदम
उनको नसीब होते नहीं ज़िंदगी में ग़म

गाते हैं गीत लोग तो सारे जहान में
बंदे की रब के नाम से होती शुरु नज़म[1]

सच कहता रब की सजदा का ऐसा कमाल है
जैसे अँधेरी रात में हो चाँद ओ अंजुम[2]

कितना हसीन होता जब यारब से हो मिलन
झरने की तरह फूटता भावों से तरन्नुम[3]

जो रबपरस्त[4] उनको क़ज़ा[5] क्या मिटायेगी
जो हैं हवापरस्त[6] क़ज़ा ढाती है सितम

दिल चीर करके दिखा दे तस्वीर जो रब की
बन्दे के सर पे रहता है रब का सदा करम[7]

'ज़ाहिद'[8] हूँ रब की चाह में ही जी रहा अब तक
रब जब से मिला मिट गये दिल के सभी बहम

❑❑

6 जनवरी 2005
भानपुरा

1. कविता, 2. तारे, 3. स्वर माधुर्य, 4. परमात्म उपासक, 5. मौत, 6. इन्द्रिय लोलुपी, 7. कृपा, दया, 8. संयमी जितेन्द्रिय,

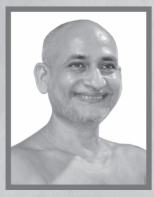

दिल जिसका रो दिया

रोता पड़ौसी देख के दिल जिसका रो दिया
समझो उसी ने दिल से नफ़रत को खो दिया

चाहे अमीर हो या आदम ग़रीब हो
सब भेदभाव खोके दिले प्रेम बो दिया

रब के क़रीब है वो आदम जो रहनुमा[1]
चेहरे को जिसने अपने अश्कों से धो दिया

देखा जो राह में यतीम दीन को कभी
उसके लिये भी दामन अपना भिंगो दिया

गर देख के दु:खी को दिले आई न दया
कैसे कहें दिल रब की चाह में डुबो दिया

अंजुम[2] को देखने से न कटती कभी रातें
बेकस[3] को अपना कम्बल सर्दी में जो दिया

सबकी भलाई में जो भला मानता अपना
'ज़ाहिद'[4] की राह चल रहा वो रब सा हो गया

❑❑

7 जनवरी 2005
भानपुरा

1. पथ प्रदर्शक, 2. सितारे, 3. जिसका कोई सहायक न हो, बेचारा, 4.

हातिम

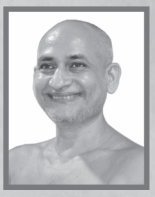

मिलती हैं कभी ख़ुशियाँ मिलते हैं कभी ग़म
आदम है जिसने सह लिया हँसके ख़ुदा क़सम

हँस-हँस के जीना चाहता हर आदमी यहाँ
जब आती क़ज़ा[1] लेने न करती जरा रहम

जिनके लिये तू रात-दिन ग़म सह रहा यहाँ
इक दिन तुझे जलायेंगे मरघट पे वो आदम

अपनों को भी देखा है मुँह फेरते यहाँ
पत्ते भी साथ छोड़ते पतझड़ का हो मौसम

सब अपनी-अपनी करनी का फल भोगते यहाँ
किसके लिये तू करता रात-दिन यहाँ असम[2]

दौलत न साथ जायेगी, शोहरत न साथ में
अच्छा-बुरा किया ही साथ जाता है हरदम

ग़ैरों के दर्द में भी जो होता शरीक है
आदम है वो ख़ुदा से भी बढ़कर ख़ुदा क़सम

गर जीना सीखना है तो 'ज़ाहिद'[3] से सीख ले
आमाल[4] से सिखा रहा सबको यहाँ हातिम[5]

❑❑

7 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मौत, 2. पाप, 3. संयमी, जितेन्द्रिय, 4. आचरण, 5. परोपकारी

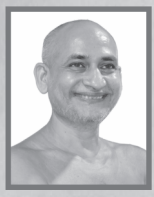

बहाना है

ग़म में जीना तो इक बहाना है
दिल में यारब को बस बुलाना है

सारे आदम यहाँ शराबी हैं
सारी दुनिया शराब - ख़ाना है

अपना कह - कह के लूटते अपने
लोग कहते यही ज़माना है

लोग लुटने को भी बेताब यहाँ
कहते अपना तुम्हें बनाना है

चाँद लाने की बात है झूठी
फिर भी सबका यही फ़साना[1] है

जानता हूँ मैं रब है हस्ती बड़ी
मैं भी कुछ हूँ मुझे दिखाना है

बन के 'ज़ाहिद'[2] हँसा रहा ख़ुद को
सारी दुनिया को भी हँसाना है

❑❑

7 जनवरी 2005
भानपुरा

1. किस्सा, कहानी, 2. संयमी, जितेन्द्रिय

काँपता होगा

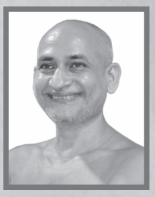

वक्त सबका न एक सा होगा
कभी ख़ुशियाँ तो कभी ग़म होगा

घर में होगी किसी के दीवाली
घर कोई उससे काँपता होगा

कोई मजबूर होगा लेने को
कोई ख़ैरात[1] बाँटता होगा

जीता होगा कोई उजालों में
शब[2] कोई तम में काटता होगा

कोई फूलों पे सो रहे होंगे
कोई काँटों पे जागता होगा

कोई ख़ुद में ख़ुदा को पायेगा
कोई ख़ुद से ही भागता होगा

मारती होगी मौत सबको यहाँ
कोई उसको भी मारता होगा

'ज़ाहिद'[3] को फ़िक्र न ज़माने की
डूब ख़ुद में गुजारता होगा

❑❑

8 जनवरी 2005
भानपुरा

1. दान पुण्य, 2. रात, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

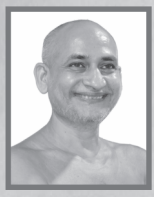

मैं ख़ुद निराश था

रब मेरे पास था मैं भी रब के पास था
फिर भी मिलन न हो सका कारण वो ख़ास था

अपना भी अपनी आँख से कैसे दिखाई दे
ग़ैरों की चाहतों में जब मन उदास था

ना रब से मैं ख़फ़ा हूँ न बेवफ़ा हूँ मैं
अपनी ही ज़िन्दगी से मैं ख़ुद निराश था

जिन-जिन को समझता था अहबाब[1] मैं यहाँ
उनने ही हमको लूटा मन में क़यास[2] था

सबको क्षमा करूँ मैं क्षमा माँग लूँ सबसे
रब से मिलूँगा दिल से मेरा प्रयास था

किससे करूँ गिला मैं किससे करूँ शिकवा
सदियों से मेरा मन ख़ुद भोगों का दास था

अनगिन बदल चुके हैं जिस्म के लिबास हम
'ज़ाहिद'[3] ने ही जाना जो ख़ुद का लिबास था

❑❑

8 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मित्र, दोस्त, 2. अनुमान, ध्यान, 3. संयमी जितेन्द्रिय

गिर-गिर के चल रहा हूँ

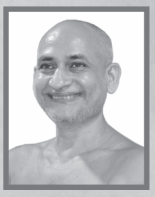

बहती हुई नदी को पार कर रहा हूँ मैं
तूफाँ के आगे रोज दिया धर रहा हूँ मैं

जिस राह पे दुनिया को भी मंजूर न चलना
उस राह से हरदम यहाँ गुजर रहा हूँ मैं

संघर्ष में जीना भी तो आदम का काम है
हिम्मत नहीं है फिर भी काम कर रहा हूँ मैं

जब तक मुकाम न मिले तब तक बढ़े चलो
संकल्प की शक्ति से गुजर कर रहा हूँ मैं

ठोकर लगा रहा मेरा नसीब ही मुझे
गिर-गिर के चल रहा हूँ मगर चल रहा हूँ मैं

बनकर नदी की धार बहना सीख लिया है
शबनम[1] की तरह ना कभी बिखर रहा हूँ मैं

सब लोग कह रहे नहीं बच्चों का खेल ये
तलवार की है धार फिर भी चल रहा हूँ मैं

विश्वास है 'ज़ाहिद'[2] को ही मिलती यहाँ मंज़िल
सूरज की तरह ढल के भी निकल रहा हूँ मैं

❑❑

8 जनवरी 2005
भानपुरा

1. ओस, 2. संयमी, जितेन्द्रिय

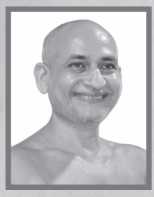

झोली में समर होगी

दर्दे-निहाँ[1] मिटेगा ओ रात गुजर होगी
जब झाँकेगा रब दिल में, तब दिल में सहर[2] होगी

रब दूर रहा है कब, सब उसकी नज़र में हैं
दिल में तभी पाओगे, जब रब पे नज़र होगी

दर्दे-निहाँ लिखोगे ये तेरी ख़ता[3] होगी
रब तो है अरे हमदाँ[4] उसको तो ख़बर होगी

रब सा न कोई साथी, रब सा न कोई साक़ी
रब को बनालो अपना हर बात असर होगी

रब की नसीहतों[5] को दिल में उतार ले तू
दिल से उतार दे जो, उन्हें मौत क़हर[6] होगी

जीवन में जो बदहाली उसके हो सबब[7] तुम ही
आदम हो नेकदिल तो झोली में समर[8] होगी

'ज़ाहिद'[9] की आरज़ू है दर्दे-निहाँ मिटाऊँ
होगा कमाल यह भी जब रब सी बसर होगी

❑❑

9 जनवरी 2005
भानपुरा

1. छुपा हुआ दर्द, 2. सुबह, 3. गलती, 4. सर्वज्ञ प्रभु, 5. उपदेशों, 6. विपत्ति, 7. कारण, 8. धन सम्पत्ति, 9. संयमी, जितेन्द्रिय

आये नहीं काँधों पे

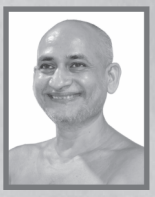

आये नहीं काँधों पे ना काँधों पे जायेंगे
अपना जनाज़ा[1] हम यहाँ ख़ुद ही उठायेंगे

सब कुछ लुटा दिया है हमने रब की चाह में
हम हैं फ़कीर अर्थी हम कहाँ से लायेंगे?

दुनिया से मेरा अब न रहा कोई वास्ता
काँधा लगाने लोग कहाँ से बुलायेंगे ?

तीर्थंकरों का तन विलीन हो कपूर सा
तीर्थेश की परंपरा हम भी निभायेंगे

सब चाहते हैं ज़िंदगी में रौब-दाब[2] हो
जींते जो अर्थ में यहाँ अर्थी पे जायेंगे

काँधों पे हमने कर लिया अब तक बहुत सफ़र
काँधों की ये परंपरा कब तक निभायेंगे ?

'ज़ाहिद'[3] ही चल सका यहाँ ऐसे उसूल[4] पे
हम भी उसी की राह पे चलकर दिखायेंगे

❑❑

9 जनवरी 2005
भानपुरा

1. अरथी, 2. शान-शौकत, 3. संयमी, 4. सिद्धान्त

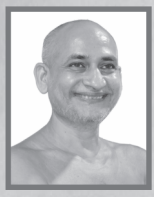

शोला बदनाम हुआ करते हैं

देख शबनम[1] को आहें भरते हैं
लोग बेमौत यहाँ मरते हैं

ख़ुद में झाँको तो समुन्दर भी दिखे
लोग पोखर में डूबा करते हैं

ख़ुदा का नूर बस रहा सबमें
लोग अंजुम[2] को याद करते हैं

जख़्म फूलों से हों, वो भी गहरे
नाम शूलों का लिया करते हैं

रूप को देख के जलती आँखें
शोला बदनाम हुआ करते हैं

डूबी देखी सफ़ीना[3] साहिल पे
लोग मँझधार में ही डरते हैं

रूह का दीद कराता 'ज़ाहिद'[4]
लोग मुँह फेर लिया करते हैं

❑❑

9 जनवरी 2005
भानपुरा

1. ओस, 2. सितारे, 3. नाव, किश्ती, 4. संयमी

उम्मीद

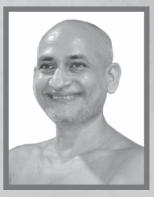

उम्मीद का दिया ले तेरे द्वार आ गया
बदबख़्त[1] का झौंका तभी दीपक बुझा गया

जलता है जो, बुझता है वो मैं जानता मगर
मौके पे ऐसा वाक़िआ कई बार आ गया

चाहा तुझे, पूजा तुझे, पूजूँगा भी तुझे
यह एतबार मेरा हौंसला बढ़ा गया

उम्मीद भी क्या चीज़ है ये तब पता चली
तीरा[2] में ख़ुदबख़ुद ही ख़ुदा पास आ गया

सब कुछ लुटा के बैठा जो दर तेरे सुना है
उसका भी तू चुपके से आ दीपक जला गया

हिम्मत जो हारते हैं वो हैं बख़्त-ए-तीरा[3]
बदबख़्त का झौंका हमें ये भी सिखा गया

यारब हमें तुमसे नहीं कोई गिला-शिकवा
उम्मीद को आमाल[4] में ढलना जो आ गया

'ज़ाहिद'[5] को है उम्मीद मिलेगी हमें मंजिल
दीपक बुझा तो पैरों को ख़ुद चलना आ गया

❑❑

10 जनवरी 2005
भानपुरा

1. दुर्भाग्य, 2. अँधेरे, 3. बदकिस्मत, 4. आचरण, 5. संयमी जितेन्द्रिय

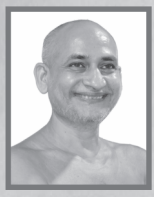

ख़्याल

दुनिया खिलाफ है, रहे, नहीं मलाल है
मैं जिसका हो गया हूँ उस ख़ुदा का ख़्याल है

खा करके पत्थरों को भी जिंदा दरख़्त[1] है
फूलों का साथ है तो ग़म का किसको ख़्याल है

दर-दर की खाके ठोकरें बहती यहाँ नदी
मिलना है समुन्दर से चाह बेमिशाल है

दुनिया का प्रेम है यहाँ जंजीर की तरह
ठुकरा दिया जिसने वही आदम ख़ुशहाल है

दुनिया ख़िलाफ़ है मेरे मैं भी ख़िलाफ़ हूँ
कुछ लोग चाहते मुझे, फिर भी कमाल है

झूठी हैं कस्मे, वादे, प्यार की सभी नज़्म[2]
फिर भी जो सुनाता वो ग़मों का दलाल है

शोला भी पानी हो गया पुराण कह रहे
शौहरपरस्त[3] सीता का ऐसा आमाल[4] है

'ज़ाहिद'[5] को चाह न रही दुनिया की जरा भी
ख़ुद में ही झाँककर दिखा ऐसा जमाल[6] है

❑❑

10 जनवरी 2005
भानपुरा

1. वृक्ष, 2. कविता, 3. पतिव्रता, 4. आचरण,
5. संयमी, जितेन्द्रिय, 6. बहुत सुन्दर रूप

गज़ब है

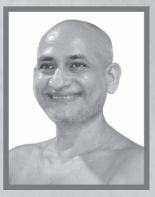

समुन्दर में नहाने की जो हरदम बात करते हैं
गज़ब है चुल्लु भर पानी में कैसे डूब मरते हैं?

गुमाँ आदम ने जाने कैसे-कैसे पाल रक्खे हैं
न घर में रोशनी जिनके क़मर[1] की बात करते हैं

थी चाहत बस नज़र से देखने की रब की तस्वीरें
न जाने कैसे वो आदम नज़र से वार करते हैं?

जिन्हैं दुनिया की रंगीनी से ज्यादा रब लगा प्यारा
वो इंसाँ जाने कैसे रिश्तों की परवाह करते हैं?

हो यारब तुम दिले हरदम जरूरत क्या बहारों की
न जाने कैसे वो रब को भी यूँ गुमराह करते हैं?

यहाँ पाषाण भी भगवान बन जाता मेरे यारब
मगर इंसान क्यों इंसान होने से याँ डरते हैं?

जो दुनिया छोड़कर खुश है वो होता पाकदिल 'ज़ाहिद'[2]
हाँ उनके पास रब रहता वो रब के पास रहते हैं

❑❑

10 जनवरी 2005
भानपुरा

1. चाँद, 2. संयमी, जितेन्द्रिय

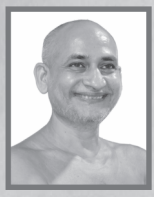

वतन के वास्ते

सभी की ज़िंदगी में बस करिश्मा एक हो जाये
रहें आपस में सब हिल-मिल दिल सबका नेक हो जाये

रहें न दूरियाँ दिल में, न हों व्यवहार कटुता के
क़मर[1] के साथ अंजुम[2] की तरह सब एक हो जायें

न अपने स्वार्थ की ख़ातिर किसी को दर्द दे कोई
मिले गर राह में दुखिया तो उससे प्रेम हो जाये

घृणा, नफ़रत की दीवारें सभी के दिल से गिर जायें
सभी का प्रेम का आँगन गगन सा एक हो जाये

रहें सद्भावना दिल में, अमन हो सबके जीवन में
भरा हो ख़ुशियों से दामन इरादा नेक हो जाये

हो भूखा गर पड़ौसी तो न भोजन कर सके कोई
बिठाके साथ कर भोजन फ़रिश्ता देख शर्माये

अमीरों के दिलों में भी अमीरी का दिखे मंज़र[3]
अमीरों की ग़रीबों की दिवाली एक हो जाये

कोई मन्दिर में जाता, कोई मस्जिद, कोई गिरिजाघर
वतन के वास्ते सबकी इबादत एक हो जाये

है 'ज़ाहिद'[4] की तमन्ना सारी दुनिया में हो खुशहाली
न रोती आँख हो कोई याँ मंज़र एक हो जाये

❑❑

11 जनवरी 2005
भानपुरा

1. चाँद, 2. सितारे, 3. दृश्य, 4. संयमी, जितेन्द्रिय

नब्ज़

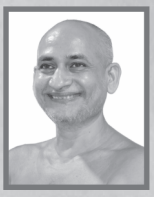

ख़ुद ही पतवार चलाई जाये
कश्ती साहिल से लगाई जाये

तूफाँ आकर तबाह कर दे हमें
इससे जल्दी ही दिखाई जाये

नाव लहरों पे डोलती जिनकी
उनको उम्मीद जगाई जाये

नाव मँझधार में फँसी हो अगर
आँख यारब से मिलाई जाये

सूर्य को दीप दिखाने वालो
शमअ[1] तीरा[2] में जलाई जाये

इंतहा[3] हो न जाये जीवन की
नब्ज़ यारब को दिखाई जाये

मिल गई राह बढ़ चलो 'ज़ाहिद'[4]
पल भर न देर लगाई जाये
❑❑

11 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मोमबत्ती, 2. अँधेरे, 3. अन्त, समाप्ति, 4. संयमी, जितेन्द्रिय

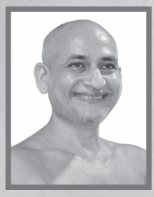

आई थी रात

नज़रों में मेरी रब की नज़र यूँ समा गई
जैसे गुलाब में सुगंध ही समा गई

जिसको भी देखता हूँ दीद[1] रब का हो रहा
यादें मेरे जेहन[2] में इस तरह समा गई

आई थी रात हमको सुलाने को नींद में
लेकिन वो रब को स्वप्न में हमसे मिला गई

मैं सोचता हूँ उनकी तो क़िस्मत बुलंद है
आई थी मौत लेने को रब से मिला गई

न चाह है जन्नत[3] की, न गुलज़ार की हमें
तख़लीस-नाज़िनीं[4] मेरे दिल में समा गई

मदहोश हो रहा हूँ मैं रब की तरह यहाँ
रब जैसी मय हमारे भी पीने में आ गई

'ज़ाहिद'[5] से पूछना है पता पूछ लीजिये
साँसों में जिसके रब की ही साँसें समा गई

❑❑

11 जनवरी 2005
भानपुरा

1. दर्शन, 2. स्मृति, बुद्धि, 3. स्वर्ग, 4. मुक्ति सुन्दरी, मुक्ति वधु, 5. संयमी

बरबाद

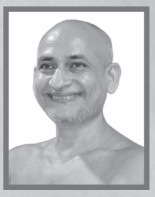

रो-रो के जो बिछुड़े हुये को याद कर रहा
वो अपनी ज़िंदगी को ही बरबाद कर रहा

जिससे मिलन हुआ यहाँ होगा बिछोह भी
फिर क्यों क़ज़ा[1] के सामने फ़रियाद कर रहा

होता नदी के आब[2] सा बिछुड़ा हुआ आदम
दिल उसके लिये क्यों यहाँ नाशाद कर रहा

ग़म को भुला जो डूब गया रब की याद में
वो अपनी रूह को यहाँ आज़ाद[3] कर रहा

मल्हम लगा सहला रहा गैरों के जख़्म जो
रब जैसी ज़िंदगी यहाँ ईजाद[3] कर रहा

संयोग में वियोग में समता का भाव रख
हर आदमी का कर्म स्वयं दाद[4] कर रहा

जिसने मिटा दी दूरियाँ रब से सदा-सदा
अपने सिफ़त[5] वो आदमी आबाद कर रहा

जीने की चाह है तुझे 'ज़ाहिद'[6] की तरह जी
ख़ुद शाद[7] है ग़ैरों को भी दिलशाद कर रहा

❑❑

11 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मौत, 2. जल, 3. आविष्कार, 4. इन्साफ, न्याय
5. गुण, 6. संयमी, 7. प्रसन्न

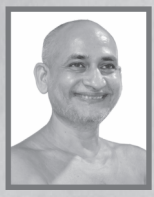

प्यार की बातें

ता-उम्र[1] करते कस्मे-वादे, प्यार की बातें
जो होती दो घड़ी के एतबार[2] की बातें

करते रहे हैं, कर रहे, समझायें हम किसे
होती हैं सब ये ग़म के इंतज़ार की बातें

किसका है कौन साथी सभी जानते यहाँ
करते हैं लोग फिर भी ये बेकार की बातें

जन्मों तलक रहेंगे साथ कहते सब यहाँ
सच कहता हूँ झूठी हैं ये इज़हार की बातें

सूरतपरस्त[3] करते हैं तारीफ़ हुस्न[4] की
कब उनको सुहाती यहाँ अज़कार[5] की बातें

देखा है बेवफ़ाई के साँचे में भी ढलते
करते थे जो दिलदार के दीदार[6] की बातें

बरबाद हो गये यहाँ कितने ही नामवर[7]
शोहरत भी हुई ख़ाक थी तक़रार[8] की बातें

'ज़ाहिद'[9] भी सराबोर है, सरशार[10] है रब में
ख़ुद में ही रब को पाऊँगा इक़रार[11] की बातें

❑❑

12 जनवरी 2005
भानपुरा

1. उम्रभर, 2. विश्वास, 3. सौन्दर्योपासक, 4. सौन्दर्य, 5. प्रार्थना, 6. दर्शन, 7. प्रसिद्ध नाम वाले, 8. विवाद, 9. संयमी, 10. मस्त, 11. प्रतिज्ञा, वचन

एक घूँट

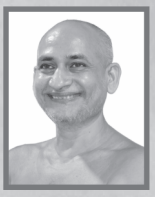

न देखो ख़्वाब जीवन में जो अक्सर टूट जाते हैं
उन्हें अपना कहो मत जो यहीं पर छूट जाते हैं

जिन्हैं अपना बनाया है उन्हीं ने ग़म दिया हमको
उन्हैं हम चाहते दिल से वो अक्सर लूट जाते हैं

समन्दर में सफ़ीना[1] को डुबाना चाहती लहरें
उछल कर आती हैं, सुक्कान[2] अक्सर छूट जाते हैं

न दौलत के, न शोहरत के, न इशरत के हो दीवाने
न मारो पत्थरों पे सर वो अक्सर फूट जाते हैं

जिन्हैं करते रहे सज़दा ख़ुदा सा पूजते आये
वो ग़ैरों के लिये हमसे भी अक्सर रूठ जाते हैं

मेरे रब तेरे जैसी मय भी सबको पुण्य से मिलती
कोई पीते हैं बोतल भर, कोई एक घूँट पाते हैं

वो इक 'ज़ाहिद'[3] है जिसका ख़्वाब सच होता है दुनिया में
सिवा ज़ाहिद के सबके ख़्वाब अक्सर झूठ पाते हैं

❑❑

12 जनवरी 2005
भानपुरा

1. नाव, 2. पतवार, 3. संयमी

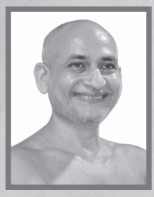

नहीं अच्छा

हर तरफ ताकना नहीं अच्छा
बातें भी फाँकना नहीं अच्छा

अपने दिल में तू झाँक ले ख़ुद ही
ग़ैरों में झाँकना नहीं अच्छा

शोला बनकर जलाते जो सबको
पापों का ढाकना नहीं अच्छा

दे समय आत्मध्यान में आदम
गप्पें भी हाँकना नहीं अच्छा

दग़ा करना मिज़ाज[1] हो जिनका
ऐसा फिर आशना[2] नहीं अच्छा

कुत्ते ने गर किसी को काटा हो
कुत्ते को काटना नहीं अच्छा

कर ले एतबार रब पे 'ज़ाहिद'[3] सा
तलुवे को चाटना नहीं अच्छा

❑❑

12 जनवरी 2005
भानपुरा

1. स्वभाव, 2. मित्र, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

सुकूँ

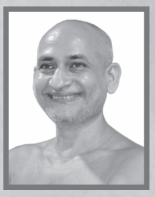

जिन्हें रब की इबादत में मिला करता सुकूँ हरदम
वो इस दुनिया में रब जैसी तरब[1] से कम नहीं आदम

इबादत साँस हो जाये इबादत बिन कहाँ धड़कन
बदल जायेगा हर इंसान का ग़म से भरा आलम[2]

अगर तू चाहता है रब को अपने दिल के आँगन में
दिखा दे रब को अपना खोलकर दिल भी मेरे हमदम

लुटा दे अपने दौलत के ख़ज़ाने रब की चाहत में
तुझे देने को रब के भी ख़ज़ाने कम पड़ें आदम

समन्दर की लहर साहिल पे कहने आई है इतना
समन्दर में नहाले फासला अपना मिटा आदम

कोई दौलत कोई शोहरत से होते नामवर[3] लेकिन
जो रब को चाहते हैं दिल से वो हैं नामवर आदम

सभी को एक दिन रब की अदालत में ही जाना है
अमल[4] से ज़िंदगी अपनी बना रब जैसी तू आदम

कभी मंदिर गया बुत[5] में भी रब को पाया था लेकिन
दिखा रब ख़ुद में अब 'ज़ाहिद'[6] न जाता कोई दैरो हरम[7]

❑❑

13 जनवरी 2005
भानपुरा

1. प्रसन्नता, 2. संसार, 3. प्रसिद्ध नाम वाले, 4. आचरण,
5. मूर्ति, 6. संयमी, 7. मन्दिर-मस्जिद

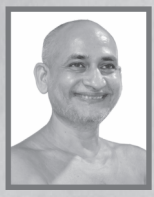

तासीर

अमल[1] सबका हो कुछ ऐसा कि वो अक्सीर[2] हो जाये
हर इक इंसान की रब की तरह तासीर हो जाये

मिला क्या आज तक आदम को पूछो इस ज़माने में
ज़माने को मिटा दे जो वही शमशीर[3] हो जाये

कयामत[4] के हैं दिन फिर भी यहाँ आदम तरब[5] चाहे
जो दिल से चाहता रब को स्वयं दिलगीर[6] खो जाये

तमन्ना है यही हरदम यही है आरजू दिल में
हर इक इंसान में यारब तेरी तस्वीर हो जाये

जो हरदम चाहते दौलत जहाँ में वो फ़ना होते
लुटाता है जो दौलत को उसे जागीर हो जाये

क़सम खाओ ना तुम झूठी कि सपने सच नहीं होते
जो करते रात-दिन मेहनत वही तक़दीर हो जाये

यहाँ सब ग़मज़दा हैं और ख़ुशियों के हैं दीवाने
मिला दे ख़ाक में ग़म को वही तदबीर हो जाये

कोई 'ज़ाहिद'[7] है जिसका ख़्वाब सच होता है दुनिया में
किया दिलशाद सबको चाहे ख़ुद को पीर[8] हो जाये

❑❑

13 जनवरी 2005
भानपुरा

1. आचरण, 2. दवा, 3. तलवार, 4. प्रलय, 5. प्रसन्नता,
6. दुःख, उदासता, 7. संयमी, 8. पीड़ा, दुःख

क़ब्रें

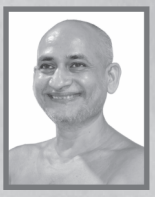

लोग अपनी बढ़ा रहे उम्रें
पड़ौसी मर गया सुनकर ख़बरें

जिनको अब चाहता नहीं कोई
उनको अब चाहती यहाँ क़ब्रें

तजुर्बे काम न आते उनके
क़हर बन जब बरसती हों अब्रें[1]

जिनमें जोख़िम न कोई जनहानि
होती होंगी वो बच्चों की गदरें[2]

खोले मुँह नाली में शराबी की
सिर्फ़ कुत्ते ही जानते क़दरें

लोग भूले उसूल[3] मज़हब[4] के
खोदते हैं पड़ौसी की क़ब्रें

बेख़बर है जमाने से 'ज़ाहिद'[5]
रब की नज़रों से मिल गई नज़रें

❑❑

13 जनवरी 2005
भानपुरा

1. बदलियाँ, 2. बगावतें, विद्रोह 3. सिद्धान्त, 4. धर्म, 5. संयमी

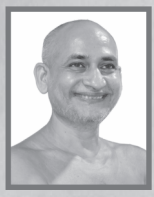

पहिचान

क्यों लोग तरसते हैं पहिचान के लिये
जाता है जो मरघट तक सम्मान के लिये

कुछ कारख़ैर[1] करले तू परभव के वास्ते
पहचाने जाते जो जियें भगवान के लिये

पहिचान की थी चाह जिन्हैं उनसे पूछ लो
लब भी तरस गये हैं मुस्कान के लिये

जब तक है स्वार्थ ग़ैर भी पहिचानेंगे तुम्हैं
तरसोगे स्वार्थ टूटते पहिचान के लिये

पहिचान पाने ज़िंदगी अपनी न खोइये
सब जानते हैं सिकंदर महान के लिये

फहराते ही रहोगे क्या पहिचान का परचम
बैठोगे किस घ़ड़ी तुम निजध्यान के लिये

जो लोग नामवर[2] हैं वो भारत के मोर हैं
रब खोजता है उनमें इन्सान के लिये

जब कहते लोग सब हमें पहिचानते यहाँ
तब लगता पहचाँ होती अभिमान के लिये

'ज़ाहिद'[3] न करना चाह तू पहिचान की कभी
पहचान में तड़पोगे गुणगान के लिये

❑❑

13 जनवरी 2005
भानपुरा

1. शुभकार्य, 2. प्रसिद्ध नाम वाले, 3. संयमी

ठोकर

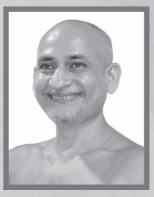

होता है एतबार तो रब होता दूर ना
सम्यक्त्व जहाँ होता वहाँ होता जूर[1] ना

ग़ैरों को अपना कहके ना अपना चमन जला
आमाल[2] ठीक हो वहाँ होता फ़ितूर[3] ना

चाहत है आदमी को जियें रौब-दाब[4] में
लेकिन क़ज़ा[5] के सामने कोई भी शूर ना

फूलों को झड़ता देख के रोता रहा चमन
मौसम ख़िज़ाँ[6] का है तो हवा का कसूर ना

होने लगी है साँझ कह रही है लालिमा
दो दिन की ज़िंदगी का करना ग़रूर ना

ठोकर नहीं लगे तो सँभलता ना आदमी
ढलता ना रूप तो ये गुमाँ होता चूर ना

कोई नाज़िनीं[7] की चाह में कोई रब की चाह में
दिल ग़ैरों को ही चाहे होता ज़रूर ना

'ज़ाहिद'[8] की चाह है दिले तख़लीस-नाज़िनीं[9]
दिल में लगा दे आग कोई ऐसी हूर[10] ना

❑❑

14 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मिथ्यात्व, 2. आचरण, 3. दोष, 4. शान-शौकत, 5. मौत,
6. पतझड़, 7. सुन्दरी, 8. संयमी, 9. मुक्ति वधु, 10. अप्सरा

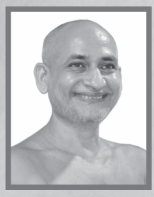

बात करते हो

क्या ज़माने की बात करते हो
पागलख़ाने की बात करते हो

न वफ़ा, प्रेम, शराफ़त दिल में
दिल लगाने की बात करते हो

रिश्ते बारूद की तरह ज़ालिम[1]
आजमाने की बात करते हो

खंडहर हो गये हों दिल जिनके
फिर सजाने की बात करते हो

आना निश्चित हो ख़िज़ाँ का मौसम
उस ज़माने की बात करते हो

अपने अपनों को लूटते हों जहाँ
भूल जाने की बात करते हो

जो जलाता हो सिर से पैरों तक
दिल जलाने की बात करते हो

'ज़ाहिद'[2] अंजान इस ज़माने से
राह पाने की बात करते हो
❑❑

14 जनवरी 2005
भानपुरा

1. जुल्म करने वाला, 2. संयमी

आदमी

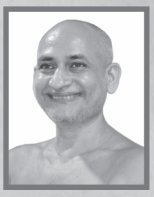

दास्ताँ हो गई पुरानी सी
मौत भी हो गई अनजानी सी

भोगों में इस कदर ये डूबा दिल
ज़िंदगी हो गई वीरानी सी

आदमी इतना हो गया गाफ़िल
भूला दुनिया जो आनी जानी सी

देखकर नाज़िनीं[1] के चेहरे को
ज़िंदगी हो गई कहानी सी

खाके ठोकर भी सँभल न पाये
आँख यूँ हो गई दिवानी सी

जिसने देखा है रब को, 'ज़ाहिद[2] को
उनकी दुनिया हुई रुहानी[3] सी

❑❑

14 जनवरी 2005
भानपुरा

1. सुन्दरी, 2. संयमी, जितेन्द्रिय, 3. आध्यात्मिक

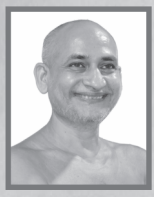

किरदार

यहाँ हर आदमी को आदमी से प्यार हो जाये
बिछे हों ख़ार[1] राहों में गुलों का हार हो जाये

दशहरा, ईद, दीवाली ये आते हैं चले जाते
सभी के दिल में भाईचारे का त्यौहार हो जाये

न रोती आँख हो कोई, न दिल कोई सिसकता हो
सितारों से भरा हर आदमी का द्वार हो जाये

बुराई से बुराई हैं, बुराई से करें तौबा
भलाई के लिये हर आदमी तैयार हो जाये

न हों अपने-पराये की कभी-भी भेद की बातें
चमेली, केवड़ा, जूही सभी गुलज़ार हो जाये

ग़रीबों की, यतीमों की करे हर आदमी ख़िदमत
फ़रिश्तों जैसा हर आदम का याँ किरदार हो जाये

मुहब्बत, प्रेम का पैग़ाम आदम की अमानत हो
सभी ख़ुशहाल हों दुनिया में वो आसार हो जाये

है 'ज़ाहिद'[2] की यहाँ रब से गुज़ारिश रात-दिन इतनी
इनायत[3] करना हर आदम का याँ ख़ुद्दार हो जाये

❑❑

14 जनवरी 2005
भानपुरा

1. शूल, 2. संयमी, 3. दया

मेरा भारत रहे ख़ुशहाल

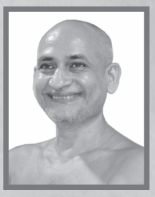

करें पुरुषार्थ सब धरती भी जन्नत सी नज़र आये
चलें कर्त्तव्य पथ पर सब ख़ुशी दिल में उभर आये

बनें सब स्वावलंबी अपनी मेहनत वा परिश्रम से
न हो आदम कोई क़ाहिल[1] करम सबका सँवर जाये

बटायें हाथ हिलमिलकर सभी में प्रेम हो इतना
गंगा-जमुना सरस्वती का महासंगम नज़र आये

शस्य-श्यामल हो ये धरती फ़सल खेतों में लहराये
सभी ख़ुशहाल हों आदम समय पर ही अबर[2] आये

हो सेवाभाव हर दिल में धरम ईमान को समझें
वतन की उन्नति में अपनी उन्नति भी नज़र आये

बहें नदियाँ यहाँ कल-कल, घने हों झूमते जंगल
रहें सीमा में सागर, ना सुनामी सी लहर आये

सुबह का सूर्योदय हो 'अहिंसा परमो धर्मः' से
दिले महावीर गौतम, राम का पैगाम भर आये

मेरा भारत रहे ख़ुशहाल, ख़ुशहाली हो दुनिया में
है 'ज़ाहिद'[3] की तमन्ना एक आलम[4] ख़ुश नज़र आये

❑❑

15 जनवरी 2005
भानपुरा

1. सुस्त, आलसी 2. बादल, 3. संयमी, 4. संसार

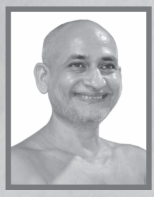

शराब

मैख़ाने[1] जाते लोग भुलाने बड़े ग़म को
हम ना गये, बुतख़ाने[2] से फ़ुर्सत नहीं हमको

जीते हैं रब में डूबके हमको क्या फ़िक्र है
जीते जो मै[3] में डूबके तरसे वो करम[4] को

हर धर्म कह रहा है धर्मशास्त्र कह रहा
पीते शराब लोग जो, भूले वो धरम को

पीकर शराब गालियाँ बकना मिज़ाज है
जाते हैं जहन्नुम[5] में करते हैं असम[6] को

घर भी तबाह हो गये बोतल के नशे में
लाचार बीबी सहती शराबी के सितम[7] को

इज्जत भी होती ख़ाक, साख होती ख़ाक है
मैख़ाने की चौख़ट पे धरते ही कदम को

पीने को तो मैं पी रहा रब सी शराब भी
दीवाना हूँ मैं रब का छोड़ा हमने शरम को

ख़ुद में ख़ुदा में डूबना शराब से क्या कम
मैं होश में नहीं हूँ कर रहा हूँ रहम को

'ज़ाहिद'[8] से न कहे कोई शराब छोड़ दो
रब जैसा ही बना रहा हूँ अपने करम को

❑❑

15 जनवरी 2005
भानपुरा

1. मधुशाला, 2. मंदिर, 3. शराब, 4. दया, कृपा, 5. नरक, 6. पाप, 7. जुल्म, 8. संयमी

नूरों का नूर

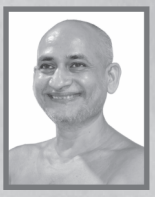

मेरी ज़िंदगी में कोई तो आया जरूर है
ख़ुद में ख़ुदा सा दिख रहा हमको सुरूर[1] है

हमने भी कर दी ज़िंदगी अब उसके नाम ही
कोई भले ख़ता[2] कहे दिल का कसूर है

चाहा उसे दिल से तभी हमको पता चला
तख़लीस-नाज़िनीं[3] अरे हूरों की हूर है

उसके लिये ही हमने भुलाया है ये जहाँ
होकर वो पास मेरे मगर मुझसे दूर है

रब को तलाशता रहा दैरोहरम[4] में जा
ख़ुद में छुपा हुआ है जो नूरों का नूर है

मंज़र को देखकर अगर मौसम बदल रहा
आँखों का नहीं है ये करम का फ़ितूर है

कर दीद रब का करता कोई इल्तिज़ा[5], गिला[6]
हर आदमी का अपना-अपना शऊर[7] है

'ज़ाहिद'[8] है शाद[9] सबको ही दिलशाद कर रहा
हर आदमी के ग़म को मिटाया जरूर है

❑❑

16 जनवरी 2005
भानपुरा

1. आनन्द, 2. गलती, 3. मुक्ति वधु, 4. मन्दिर-मस्जिद, 5. प्रार्थना, 6. निंदा, 7. ढंग, योग्यता, बुद्धि, 8. संयमी, 9. प्रसन्न

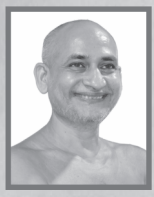

आत्मा

मुज़रिम की तरह देह में रहती है आत्मा
अच्छे-बुरे सभी करम करती है आत्मा

भोगों की भी दीवानगी सर चढ़ के बोलती
फिर भी यहाँ तड़पती रहती है आत्मा

मिलता नहीं सुरूर[1] मगर सुख की आश में
चारों गति भटकती रहती है आत्मा

कब कौन किसका साथी यहाँ साथ जो चले
क़समें भी झूठी खाती रहती है आत्मा

माता-पिता, सखा-सखी संयोग हैं सभी
रिश्ता यहाँ बनाती रहती है आत्मा

अपना बनाया सबको कोई अपना न हुआ
सपने नये दिखाती रहती है आत्मा

न जाने ख़ाक हो गये तन कितने चिता पे
पिंजरे से दिल लगाती रहती है आत्मा

'ज़ाहिद'[2] की तरह ज़िंदगी जीते हैं जो उनको
मुक्ति का पथ बताती रहती है आत्मा
❑❑

16 जनवरी 2005
भानपुरा

1. आनन्द, 2. संयमी

आख़िरी ये शाम है

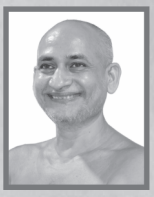

यूँ सोच ज़िंदगी की आख़िरी ये शाम है
मैं सो रहा हूँ सबसे क्षमा-ओ-सलाम है

दम का क्या भरोसा यहाँ गुब्बारे की हवा
होगा न जाने कब, कहाँ, किसका मुक़ाम है

तूफान, आँधियों में झूमते दरख़्त[1] भी
हर आदमी की ज़िंदगी डाली का आम है

जन्मा है जो इक दिन उसे मरना भी पड़ेगा
मुफ़लिस-ओ-तवंगर[2], ये क़ज़ा[3] का पैग़ाम है

कुत्ते की मौत मरना नहीं चाहता हूँ मैं
रब ज़िंदगी हमारी अब तुम्हारे नाम है

कोई किसी को भूलकर भी अपना न कहे
रिश्ते सभी झूठे, सभी झूठी कलाम[4] है

दीदार[5] नई सुबह का किस्मत में होगा गर
यारब तेरी इबादत[6] ही पहला काम है

'ज़ाहिद'[7] को न जीने की तमन्ना न मौत की
जीना समाधि में ही उसकी सुबहो-शाम है

❑❑

17 जनवरी 2005
भानपुरा

1. वृक्ष, 2. गरीब और अमीर, 3. मौत, 4. प्रतिज्ञा, वादा, 5. दर्शन, 6. प्रार्थना, 7. संयमी

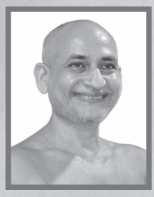

मुंगेरीलाल

रहता जो मेरे पास वो मेरा ख़्याल है
कोई तो मेरे पास सोच दिल ख़ुशहाल है

ख़्यालों मे किसी के है रब किसी के नाज़िनीं[1]
तख़लीस-नाज़िनीं[2] में डूबा मेरा ख़्याल है

है कौन जिसको न मिला दर्दे-जुदाई[3] भी
सच कहता इसमें भी मिला हमको मनाल[4] है

दुनिया में रब के ख़्याल से कुछ भी नहीं प्यारा
आये न आये रब, नहीं इसका मलाल है

ख़्यालों से ही जन्नत[5] यहाँ ख़्यालों से जहन्नुम[6]
मिलता है रब भी ख़्याल से सचमुच कमाल है

दीवाना हूँ मैं ख़्याल का, हँसता हूँ, ख़्याल में
ख़्यालों से ही ख़ुद में दिखा रब सा जमाल[7] है

ख़्यालों की जितनी भी करूँ तारीफ़ उतनी कम
ख़्यालों से मेरी वंदगी रहती बहाल है

'ज़ाहिद'[8] ही जानता यहाँ ख़्यालों का तराना[9]
जिसको न रब का ख़्याल वो मुंगेरीलाल है

❑❑

17 जनवरी 2005
भानपुरा

1. सुन्दरी, 2. मुक्तिवधु, 3. जुदाई का दर्द, 4. लाभ, 5. स्वर्ग, 6. नरक, 7. सौन्दर्य, 8. संयमी, 9. गीत-संगीत

देखा है

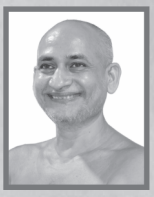

आज अपने ही घर में हमने पूरा चाँद देखा है
न जिसमें दाग़ है कोई वो हमदाँ-ख़ाँद[1] देखा है

न दिखता इस ज़माने में कोई सुबहान[2] रब जैसा
पिलाता ग़म मिटाने प्रेम रूपी ख़िसाँद[3] देखा है

वो घर का वैद्य करता ठीक रोगी हो कोई कैसा
जनम-मृत्यु-जरा रोगों में डूबा मान्द[4] देखा है

बनाता है यहाँ रब को जो अपनी जीस्त में साथी
उसे रब की तरह मिलते भी हमने दाद[5] देखा है

अगर आबाद होना है, तो पा अरिहंत का मज़हब[6]
जिसे मज़हब की चाहत न, उसे बरबाद देखा है

मिटाना चाहते हो कर्म की रेखा बनो 'ज़ाहिद'[7]
हर इक इन्सान को ऐसा किये दिलशाद[6] देखा है

❑❑

17 जनवरी 2005
भानपुरा

---

1. शिक्षित सर्वज्ञ यानि सर्वज्ञानी, 2. पवित्र, स्वतंत्र, 3. दवाओं का काढ़ा, 4. बीमार, 5. न्याय, इन्साफ़, 6. धर्म, 7. संयमी, 8. दिल से प्रसन्न

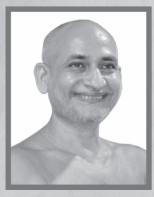

इम्तिहान

कहते थे बच्चे कल हमारा इम्तिहान[1] है
इनको भी अपनी ज़िंदगी का कितना ध्यान है

पढ़ते रहे हम देर रात तक किताब को
पाना है अच्छी रैंक[2], ये उनका बयान है

दिन-रात एक कर रहे ख़ाने की न फ़ुर्सत
कुछ आगे निकलने का भी जज़्बा[3] महान है

माता-पिता का नाम भी रोशन करेगें हम
मुफ़लिस-अब्बू[4] के अरमानों का इनको ध्यान है

देता हूँ दुआ इनको जो कल का भविष्य हैं
इनके अमल[5] से ही मेरा भारत महान है

इनकी लगन को देख के 'ज़ाहिद'[6] भी सोचता
ख़ुद में ख़ुदा को पाना मेरा इम्तिहान है

❑❑

17 जनवरी 2005
भानपुरा

1. परीक्षा, 2. श्रेणी, 3. भावना, 4. गरीब पिता, 5. आचरण, 6. संयमी, जितेन्द्रिय

कामयाब

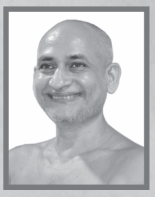

मेरे जिगर[1] में रब का मचलता शबाब[2] है
गुलज़ार[3] में अकेला खिलता गुलाब है

मैं होश में नहीं हूँ किया जबसे रब का दीद[4]
मस्ती में जी रहा हूँ वो ऐसी शराब है

उसका ख़्याल गुफ़्तगू[5] मुझको हँसा रही
यूँ आके ग़म मिटाना उसका जवाब है

आँखें तरस गई हैं मेरी नींद के लिये
नज़रों में उसका आना यूँ बेहिसाब है

यादों में उसकी दिल में मेरे शमअ जल रही
रब जैसा नहीं कोई भी प्यारा अहबाब[6] है

ख़ुद को ही पढ़ रहा हूँ मैं दिन-रात, सुबह-शाम
अब मेरी ज़िंदगी ही रब की किताब है

रब तो था मेरे सामने लेकिन दिखा तभी
जबसे उठाया हमने ख़ुद का नकाब[7] है

रब नाम से जो करता यहाँ ज़िंदगी शुरू
'ज़ाहिद'[8] वो ज़िंदगी में सदा कामयाब है

❑❑

18 जनवरी 2005
भानपुरा

1. हृदय, 2. सौन्दर्य, 3. गुलाब का बगीचा, 4. दर्शन, 5. चर्चा, 6. मित्र, 7. घूँघट, 8. संयमी

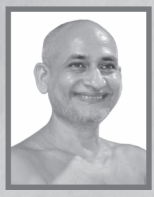

ऐ गुमाँ!

हमको जलाया ऐ गुमाँ अब मैं जलाऊँगा
दे आइना तेरा मैं मुकद्दर दिखाऊँगा

चेहरे बदल-बदल के लूटता रहा मुझे
कर बेनक़ाब सारी दुनिया को बताऊँगा

लैलो-नहार[1] हमको रुलाता ही तू रहा
अब हँस भी न सकेगा तू इतना रुलाऊँगा

करके गुनाह घूमता रहा तू शहर में
चौराहे पे तेरे लिये फाँसी लगाऊँगा

की ज़िंदगी तबाह मेरी तूने आज तक
गिन-गिन के सभी का हिसाब मैं चुकाऊँगा

सच कहता जहन्नुम[2] का ख़ौफ भूल जायेगा
कुछ इस तरह से अब तेरा भुर्ता बनाऊँगा

सब जान सकें ऐ गुमाँ इतिहास भी तेरा
सरे-आम[3] ही तेरी मज़ार को बनाऊँगा

'ज़ाहिद'[4] को न देखेगा कभी आँख उठाकर
हाथी की सूँड सी तेरी गर्दन झुकाऊँगा
❑❑

18 जनवरी 2005
भानपुरा

1. रात-दिन, 2. नरक, 3. जनता के सामने, 4. संयमी

सच्चा गुरु

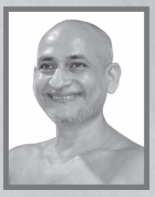

गुरु जैसी न दुनिया में कोई ज़ागीर होती है
गुरु का साथ हो जाये वही तक़दीर होती है

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु शंकर, गुरु पारस
गुरु स्पर्श से पारसमयी शमशीर[1] होती है

गुरु के कदमों पे जो भी चला वो पा गया मंज़िल
जगा दे प्यास मंज़िल की वही तदबीर होती है

गुरु की छाँव में अपनी गुजारी ज़िंदगी जिसने
वो पाता हर कदम ख़ुशियाँ न दिल में पीर[2] होती है

गुरु हैं ज्ञान का सागर पिलाते ज्ञान का अमृत
जो पीले घूँट भर रब की तरह तासीर होती है

गुरु हैं आग का दरिया जलाते रहते कर्मों को
गुरु में डूबती जो आत्मा अशरीर[3] होती है

गुरु की नज़रों में हरदम ख़ुदा का ही नज़ारा है
मिले गुरु की नज़र तो जीस्त रब सी मीर[4] होती है

जो है 'ज़ाहिद'[5] वही सच्चा गुरु होता ज़माने में
नसीहत[6] सारी दुनिया के लिये अक्सीर[7] होती है

❑❑

18 जनवरी 2005
भानपुरा

1. तलवार, 2. पीड़ा, 3. शरीर रहित सिद्ध प्रभु जैसी, 4. अमीर श्रेष्ठ, 5. संयमी, 6. उपदेश, 7. दवा

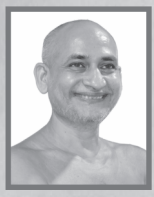

फ़ासला

लुटेरों की है बस्ती इस ज़माने से चला जाये
यहाँ फ़िरकापरस्ती[1] गुल खिलाते ज़लज़ला[2] आये

कयामत[3] के यहाँ दिन हैं कयामत की यहाँ रातें
सुकूने-ज़िंदगी[4] पाने परिंदों से मिला जाये

लरज़ते[5] होंठों से हमने सुनी हैं दास्ताँ कितनी
जहाँ में बेवफ़ाई का फ़क़त यूँ सिलसिला आये

दिला[6] तू फ़िक्र न कर और न हो इस तरह बेकल[7]
तू ख़ुद में डूब जा तो इस जहाँ से फ़ासला आये

है सच बदबख़्त[8] में कोई किसी का भी नहीं साथी
सिवा रब की इबादत के, कि जिससे हौंसला आये

खुलूसे-दिल[9] में ही देखा है हमने दैर[10] यारब का
जहाँ इंसान को इंसाँ से न कोई गिला आये

ज़माने में यही होता है आगे भी यही होगा
भलाई अब इसी में है न दुनिया में रुला जाये

ज़माने को अगर लूटा फ़क़त वो एक 'ज़ाहिद'[11] ने
रही दिलशाद दुनिया शाद का वो भी सिला पाये

❑❑

19 जनवरी 2005
भानपुरा

1. साम्प्रदायिकता, 2. भूचाल, 3. प्रलय, 4. ज़िंदगी का चैन, 5. काँपते, 6. ऐ दिल, 7. बैचेन, 8. दुर्भाग्य, 9. दिल की सच्चाई, 10. मन्दिर, 11. संयमी

रुख़ बदलने लगा

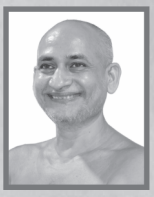

अब हवा का भी रुख़ बदलने लगा
पानी पत्थर से भी निकलने लगा

कल जो खिल न सका गुलज़ार में भी
आज गुलज़ारे-दिल में खिलने लगा

चलता था संग को मारता ठोकर
खाके ठोकर वो ख़ुद सँभलने लगा

देखा है दोपहर का सूरज भी
साँझ होते ही ख़ुद जो ढलने लगा

था गुमाँ जिनको अपनी दौलत का
पाने दौलत वो हाथ मलने लगा

आग भी जिसको न जला पाई
प्यास की आग में वो जलने लगा

मुद्दतें गुज़रीं ख़िज़ाँ[1] में जिसकी
पाके सावन को अब मचलने लगा

देखी हैं हमने बर्फ़ की झीलें
अब हिमालय भी ख़ुद पिघलने लगा

'ज़ाहिद'[2] ही बनता है सदा हमदाँ[3]
मौन रह के भी सुर निकलने लगा

❑❑

19 जनवरी 2005
भानपुरा

1. पतझड़, 2. संयमी, जितेन्द्रिय, 3. सर्वज्ञ

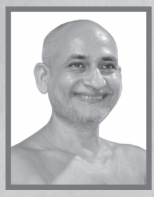

अब तो आ जाओ

ढल चली साँझ अब तो आ जाओ
रब का पैग़ाम[1] अब सुना जाओ

रात मावस[2] की, हैं अंजुम[3] बेकल[4]
चाँद का रुख़ इन्हें दिखा जाओ

प्यासी माही[5] तड़प रही कबसे
पानी की बूँद ही पिला जाओ

राह भूला भटकता जंगल में
राहे-मंजिल भी अब दिखा जाओ

ग़म में डूबी हैं ज़िंदगी हरदम
आके हँसना ही अब सिखा जाओ

ज़िंदगी जी रहे अँधेरों में
आके शमअ ही अब जला जाओ

पाँव काँटों में हो गये छलनी
राह काँटों की है बता जाओ

रहनुमा[6] तुम हो एक 'ज़ाहिद'[7] के
हे गुरु विराग गुल खिला जाओ

❑❑

20 जनवरी 2005
भानपुरा

1. संदेश, 2. अमावस, 3. सितारे, 4. बैचेन, 5. मछली, 6. पथ प्रदर्शक, 7. संयमी जितेन्द्रिय

यही आसार कर देना

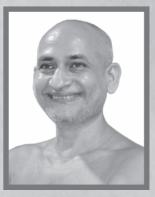

मेरे रब ज़िंदगी में बस यही आसार कर देना
चलें हम राह मज़हब[1] की यही आधार कर देना

न दिल में हो कभी मेरे ज़माने की मिलें ख़ुशियाँ
सभी को बाँट दें ख़ुशियाँ यही आचार कर देना

न कोई ऐब हो हममें न कोई हो ख़ता[2] हमसे
जियें करने भलाई हम यही किरदार कर देना

न फूलों की तमन्ना है न काँटों से गिला हमको
सभी को इक नज़र देखूँ वही दीदार[3] कर देना

न अपने स्वार्थ की ख़ातिर किसी का दिल दुखायें हम
सभी को दिल से चाहें हम नज़र में प्यार भर देना

न कोई है यहाँ अपना, पराया है नहीं कोई
सभी हैं रब के बंदे बस यही इक़रार[4] कर देना

है 'ज़ाहिद'[5] की तमन्ना मौत को अपना बनाने की
हो यारब साथ मेरे तुम यही इज़हार कर देना
❑❑

21 जनवरी 2005
भानपुरा

1. धर्म, 2. गलती, 3. दर्शन, 4. प्रतिज्ञा, 5. संयमी

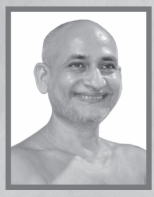

आकर तो देखिये

आँखों में नहीं दिल में भी आकर तो देखिये
यारब मुझे भी अपना बनाकर तो देखिये

बंदा हूँ मैं तेरा तुझे पाकर ही रहूँगा
मेरी तरह क़सम कभी खाकर तो देखिये

दुनिया के लोग थक गये मुझको बुला-बुला
यारब मुझे एक बार बुलाकर तो देखिये

कहते हो लोग चलते नहीं राह मोक्ष की
मुझको भी एक बार चलाकर तो देखिये

खिलते हैं सुबह फूल जो मुरझाते साँझ वो
यारब मुझे इक बार खिलाकर तो देखिये

कितने ही दीप बुझ गये तूफान में यहाँ
यारब मुझे दुआ दे जलाकर तो देखिये

रिश्तों की क्या बिसात सभी टूटते यहाँ
इक बार रिश्ता मुझसे बनाकर तो देखिये

तुझको ही पाने सह रहा 'ज़ाहिद'[1] यहाँ सितम[2]
तेरा ही बीज हूँ मैं उगाकर तो देखिये

❑❑

21 जनवरी 2005
भानपुरा

1. संयमी, जितेन्द्रिय, 2. जुल्म, कष्ट, पीड़ा

बातें

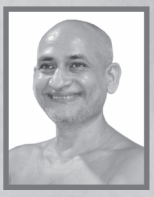

भूलो न कभी प्रेम के इज़हार की बातें
रब आयेगा कभी तो, इंतजार की बातें

चाहे बिना ही रब को गँवाये कई जनम
यह सिलसिला मिटाऊँगा इक़रार[1] की बातें

रब में अनन्तज्ञान-दर्श-वीर्य-सुख कहा
मैं भी इसी को पाऊँगा गुलज़ार की बातें

रब जैसा न दुनिया में कोई भी हसीन है
निज ज्ञान-दर्श-रूह के दीदार[2] की बातें

भटका हूँ बहुत आज तक इस कायनात[3] में
शुद्धोपयोग से मिले घरद्वार, की बातें

रब नाम का अमृत पिया जिसने भी घूँटभर
कर्मों को कहना आ गईं इंकार की बातें

ग़ैरों से बहुत की हैं ज़िंदगी में रात-दिन
करना है ख़ुद से अब हमें कुछ प्यार की बातें

'ज़ाहिद'[4] तो रब में डूबके हरदम ही जी रहा
भगवान आत्मा हूँ ये ख़ुद्दार की बातें
❑❑

22 जनवरी 2005
भानपुरा

1. प्रतिज्ञा, 2. दर्शन, 3. संसार, 4. संयमी

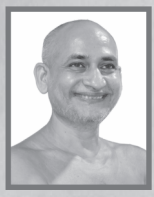

रूह

रोशन हो रूह ऐसा कोई काम कीजिये
ना ज़िंदगी को यूँ ही बस तमाम[1] कीजिये

देखो तो कभी झाँक के अपनी भी ज़िंदगी
ग़ैरों को देखते हुये न शाम कीजिये

आमाल[2] बना ऐसा कि मंज़िल तुझे मिले
हरदम बढ़ा कदम नहीं विश्राम कीजिये

पाने को सफलता सभी खाते हैं ठोकरें
ऐसी भी ठोकरों को अपने नाम कीजिये

कैसे कहें ख़ुद्दार जो मन का गुलाम है
मन के नहीं, मन को ही अब गुलाम कीजिये

इतने बदल चुके हैं घर कि बेशुमार हैं
फिर से न बदलना हो वो मुकाम कीजिये

जीना है तो जीवन जिओ 'ज़ाहिद'[3] सा एक बार
दुनिया में रहते आख़िरी सलाम कीजिये

❑❑

22 जनवरी 2005
भानपुरा

1. पूरी, सम्पूर्ण, समाप्त, 2. आचरण, 3. संयमी

ग़ज़ब

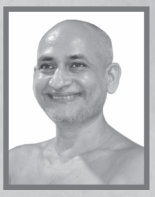

हर आदमी पे जुल्म यहाँ ढा रहा ग़ज़ब[1]
शोलों की तरह रात - दिन जला रहा ग़ज़ब

मुफ़लिस[2] हो या अमीर हो, बालक या पीर[3] हो
छोटे-बड़े सभी में नज़र आ रहा ग़ज़ब

ताकत है जिनके हाथ में दुनिया को मिटा दें
तक़दीर उनकी भी यहाँ मिटा रहा ग़ज़ब

रिश्ते तबाह हो गये, होते भी रहेंगे
मंज़र सुनामी लहरों सा दिखा रहा ग़ज़ब

सब रौब-दाब[4] में जिओ, सपने दिखा-दिखा
सबके जिगर में अपने ऐब ला रहा ग़ज़ब

अपनों को छोड़िये, न रहता ख़ुद का ख़्याल भी
ऐसी शराब सबको ही पिला रहा ग़ज़ब

सब ख़ुशियाँ ख़ाक करना ही मकसद रहा हरदम
मातम की राह सबको ही चला रहा ग़ज़ब

'ज़ाहिद'[5] की तरह शान्त सा दिखता जो कलन्दर[6]
गाहे-ब-गाहे[7] उसको भी अपना रहा ग़ज़ब

❑❑

23 जनवरी 2005
भानपुरा

1. क्रोध, 2. गरीब, 3. वृद्ध, 4. शान-शौकत, 5. संयमी, 6. त्यागी, 7. कभी-कभी

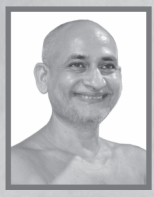

कृपा

आइना बन के पास आते हो
राह घर की हमें बताते हो

न भटक जायें कहीं राहों में
ज्ञान का दीप तुम जलाते हो

जिसको पीकर मिले ख़ुदा-ख़ुद में
ऐसा अमृत हमें पिलाते हो

चलने वाले ही कभी गिरते हैं
आके उनको तुम्हीं उठाते हो

थक गये हैं जो बैठे राहों में
हौंसला उनका तुम बढ़ाते हो

सो रहे जो यहाँ अँधेरों में
बन के सूरज तुम्हीं जगाते हो

जिनके लब से हँसी हुई है फ़ना[1]
उनको आकर तुम्हीं हँसाते हो

'जाहिद'[2] पे है कृपा तेरी यारब
हर समय दिल, ज़िहन[3] में आते हो
❑❑

24 जनवरी 2005
भानपुरा

1. गायब, नष्ट, 2. संयमी, जितेन्द्रिय, 3. बुद्धि

तुझे दिल में बसाकर ही

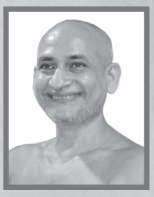

तुझे अपना बनाकर ही मुझे रब चैन आयेगा
तुझे दिल में बसाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

न तन में डूबना हमको, न धन में डूबना हमको
ये दिल तुझमें डुबाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

न चाहत है बहारों की, न चाहत है सितारों की
तेरी चाहत को पाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

तेरे कदमों में हैं खुशियाँ, तेरे कदमों में है जन्नत
तुझे सब कुछ लुटाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

अभी तक बाँधती आईं हमें रिश्तों की जंजीरें
नया रिश्ता सजाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

सुना है तेरे दर पे ही करम सबके सँवरते हैं
तुझे दिल में बुलाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

गुज़ारिश है यही यारब मुझे अपना बना लेना
ज़माने को भुलाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

न भूलो मौत को 'ज़ाहिद'[1], वो है सबकी ही दीवानी
समाधि को मनाकर ही मुझे रब चैन आयेगा

❑❑

28 जनवरी 2005
भानपुरा

1. संयमी, जितेन्द्रिय

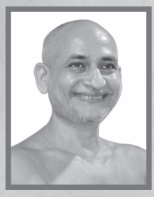

ज़माने में

ज़माने में ज़माना है न हम रहते ज़माने में
ज़माना आज़माना है न हम कहते ज़माने में

कोई दौलत कोई शोहरत कोई इशरत[1] के दीवाने
न पाते चैन पलभर भी वो ग़म सहते ज़माने में

तेरी बीबी तेरे बच्चे रस्म इतनी निभायेंगे
तेरी अर्थी सजा तुझको जला देंगे ज़माने में

न दौलत साथ जायेगी, न शोहरत साथ जायेगी
हाँ जाते संग शुभाशुभ जो कर्म करते ज़माने में

जिसे अपना कहे दुनिया, दग़ा सब खा रहे उनसे
गजब है खा दग़ा फिर भी सभी रहते ज़माने में

तेरा घर धर्मशाला है, यहाँ रहने की मत सोचो
सभी को मौत आयेगी सभी कहते ज़माने में

खिलाओ तुम, पिलाओ तुम, सँभालो तुम, सजाओ तुम
ये मिट्टी के घरोंदे तन सभी मिटते ज़माने में

शरण अरिहंत की पाने भक्ति में डूब जा 'ज़ाहिद'[1]
राग की आग में अक्सर सभी जलते ज़माने में

❑❑

29 जनवरी 2005
भानपुरा

1. संयमी, जितेन्द्रिय

हमें रस्ता दिखा देना

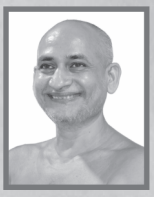

मेरे गुरुदेव मंज़िल का हमें रस्ता दिखा देना
चलें निज धर्म पर हम भी हमें इतना सिखा देना

अनादि से भटकते ही रहे हम चारों गतियों में
मेरी नैया पड़ी मँझधार साहिल से लगा देना

सजाया आज तक तन को, न देखा हमने चेतन को
भूल की मोह में गुरुवर हमें आकर जगा देना

ऐश-इशरत[1] में जी-जीकर अनन्तों भव गँवाये हैं
ज्ञान-दर्शनमयी निज आत्मा का रस पिला देना

न चाहूँ कार, न बँगला, निराकुल सुख ही अब चाहूँ
मेरे मिथ्यात्व की गुरुवर करम रेखा मिटा देना

किया उपकार ग़ैरों पे, न उपकारी हुआ ख़ुद का
स्वपर उपकार हम भी कर सकें इतना सिखा देना

रतन-धन त्याग दूँ दिल से भावना भाऊँ रत्नत्रय
समाधि के समय गुरुवर मंत्र णमोकार सुना देना

है 'ज़ाहिद'[2] की यही अंतिम तमन्ना आरजू दिल में
करूँ शुद्धात्म अनुभूति ज्ञान ज्योति जला देना
❑❑

30 जनवरी 2005
भानपुरा

1. भोग-आनन्द, 2. संयमी, जितेन्द्रिय

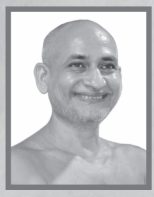

मुहब्बत भी तरसती है

नज़र अपनी उठाकर देखता हूँ जिस तरफ यारब
तू ही तू बस नज़र आता है हमको उस तरफ यारब

न दौलत की न इशरत की न शोहरत की ख़बर मुझको
तेरा दीदार[1] करने की है दिल में अब ख़बर यारब

ज़माने भर के ग़म हमने तुझे पाकर मिटाये हैं
तेरे दीदार से मुझको मिली ऐसी तरब[2] यारब

रहा न ख़ौफ़ अब हमको क़ज़ा आये तो आ जाये
भरोसा है मरूँगा ना, मिलूँगा ख़ुद से अब यारब

जिन्हें अपना समझकर पूजते आये ज़माने में
ज़माने में तड़पता छोड़ देंगे हमको सब यारब

जहाँ तक ख़्याल है मुझको मेरे ख़्यालों में बस तुम हो
तराना तेरा गाते हैं लरज़ते[3] मेरे लब यारब

कहाँ फ़ुर्सत है 'ज़ाहिद'[4] को नज़रभर ग़ैर को देखे
मुहब्बत भी तरसती है तू ही इसका सबब[5] यारब

❑❑

8 फरवरी 2005
भानपुरा

1. दर्शन, 2. प्रसन्नता, 3. काँपते, 4. संयमी, 5. कारण

मंज़र

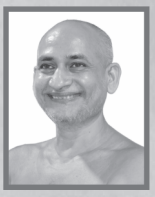

क़समों के समन्दर में डूब मरते आदमी
संयोग की घड़ी में क्या-क्या करते आदमी

दिखता है नाज़िनीं[1] का चेहरा चाँद के जैसा
भोगों में भी क्या-क्या ख़्याल करते आदमी

बूढ़ों को भी दिखते नहीं बुढ़ापे के मंज़र[2]
यौवन की ही यादों में डूबे रहते आदमी

बचपन गया, यौवन गया, बुढ़ापा जा रहा
सब कुछ बदलता देख न बदलते आदमी

कोई किसी का साथ निभाता नहीं यहाँ
क़समें जनम-जनम की खाते रहते आदमी

शुभ कर्म का फल अच्छा, बुरे कर्म का बुरा
सब जानकर भी कर्म बुरे करते आदमी

मिलती न यहाँ ख़ुशियाँ चाहकर भी किसी को
इक ज़िंदगी में ग़म हजारों सहते आदमी

संयोग में होता वियोग जानता 'ज़ाहिद'[3]
उसकी नसीहतों[4] से दूर रहते आदमी
❑❑

9 फरवरी 2005
भानपुरा

1. सुन्दरी, 2. दृश्य, 3. संयमी, 4. उपदेशों

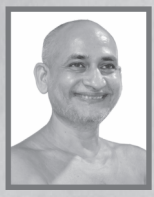

शासन

मिट्टी के मकानों से प्रेम कर रहे हैं लोग
अपने नहीं ग़ैरों के लिये मर रहे हैं लोग

मरघट पे तो मुर्दों का ही शासन सदा रहा
बस्ती में भी मुर्दों से प्रेम कर रहे हैं लोग

जागीर पाके देह की किसको सुकून[1] है
इसका नहीं ख़्याल कोई कर रहे हैं लोग

दहकाते आये तन यहाँ भोगों की चाह में
जलती हुई लाशों से गुजर कर रहे हैं लोग

अपनी जरूरतों को ख़ुदा सा बनाइये
ख़ुद में ख़ुदा दिखेगा मगर डर रहे हैं लोग

'ज़ाहिद'[2] की तरह प्रेम का दीपक जलाइये
मावस[3] की रात में क्यों बसर कर रहे हैं लोग

❑❑

10 फरवरी 2005
भानपुरा

1. चैन, 2. संयमी, 3. अमावस

मिट्टी के ढेले में

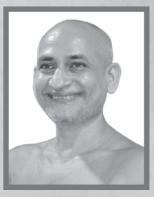

कोई अपना नहीं दिखता हमें दुनिया के मेले में
वही कहते हैं जो ख़ुद से मिला करते अकेले में

कयामत[1] की यहाँ रातें कयामत के यहाँ दिन हैं
नहीं दिन-रात उनको चैन जो हैं इस झमेले में

न देना दोष किस्मत को कभी-भी भूलकर साक़ी
तवंगर[2] रोते, मुफ़लिस[3] हँसते देखे हाथ ठेले में

हजारों क़स्में तोड़ी हैं, हजारों रिश्ते तोड़े हैं
यहाँ दो भाई देखे लड़ते इक मिट्टी के ढेले में

चला करते सभी काँटों पे किन्तु मानते गुल सा
सितम[4] सहते सभी आदम यहाँ रिश्तों के मेले में

है 'ज़ाहिद'[5] ही अकेला याँ हिमालय औ सुमेरु सा
जो रहता रूह[6] में अपनी, ऐश-इशरत[7] के रेले में

❑❑

18 फरवरी 2005
भानपुरा

1. प्रलय, 2. धनवान, 3. गरीब, 4. कष्ट, 5. संयमी, 6. आत्मा, 7. भोग-आनन्द

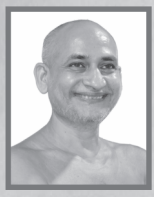

स्वार्थ

न बदले चाँद-ओ-सूरज, बदलते न कभी तारे
बदलते हैं वही इंसाँ जो होते स्वार्थ के मारे

कहें उनको क्या क़िस्मतवर[1] नहीं दिल में रहम[2] जिनके
कोई बैचेन खा भर - पेट, कोई भूख के मारे

मेरे घर का कुँआ अच्छा बुझाता प्यास जो सबकी
ख़ज़ाने हैं जो जल के वो समन्दर रह गये खारे

बिखर जाते हैं सब रिश्ते जो आता स्वार्थ का झौंका
कभी दुश्मन भी बन जाते जो कल तक थे उन्हें प्यारे

जियें सब स्वार्थ को तजके तो दुनिया स्वर्ग हो जाये
बहारें आयेंगी चलकर हो दिल में प्रेम के धारे

सिकन्दर स्वार्थ के कारण हुआ बदनाम दुनिया में
न आई संपदा कुछ काम, आई जब क़ज़ा[3] द्वारे

तरब[4] की चाह है दिल में तरब दुनिया को बाँटो तुम
मिटा दो स्वार्थ दिल से जीत लोगे तुम भी दिल सारे

है 'ज़ाहिद'[5] की तमन्ना ये अमन हो सारी दुनिया में
सभी के पास हो सूरज सभी के पास हों तारे
❑❑

19 फरवरी 2005
भानपुरा

1. सौभाग्यशाली, 2. दया, 3. मौत, 4. प्रसन्नता, 5. संयमी, जितेन्द्रिय

तन

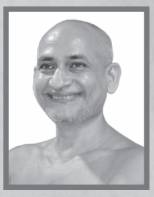

तन ख़ाक होगा एक दिन इसका विचार कर
तन के लिये न दिल को इतना बेक़रार[1] कर

तन अस्थि मांस मज्जा रक्त पित्त से बना
मलमूत्र का पिटारा है न इससे प्यार कर

तन पींजरें में चर्म का सौंदर्य है धोखा
तन रोगों का है घर, न इसका एतबार[2] कर

नवद्वार तन में नालियाँ हैं गौर कर जरा
मल बह रहा इनसे स्वरूप का विचार कर

तन के दीवाने बनके न चेतन को भुलाओ
चेतन नहीं दिखता कभी तन को सँवारकर

तन है किसी का गोरा, तो किसी का है काला
चैतन्य सबका एक है पर्याय पार कर

'ज़ाहिद'[3] न चाहे तन को, चाहता निजात्मा
मिलता है ज्ञानानंद भी वैराग्य धारकर
❑❑

20 फरवरी 2005
भानपुरा

1. बैचेन, 2. विश्वास, 3. संयमी, जितेन्द्रिय

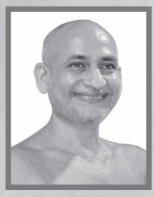

नज़दीकियाँ

हो गईं दूरियाँ मेरी तन से
हुईं नज़दीकियाँ जो चेतन से

मेरा गुणधर्म ज्ञान-दर्शन है
दूर जाता हूँ जड़ के आँगन से

याद आतम की समाई इतनी
दूर जाती नहीं मेरे मन से

देख सुख का ख़जाना अन्तस में
प्यास बुझती नहीं मेरी धन से

मेरा भगवान समाया मुझमें
देखा है उसको ध्यान दर्पण से

शुद्ध हूँ बुद्ध हूँ मैं ज्ञायक हूँ
हमने जाना है ये ख़ुद के मिलन से

चाहते हो अगर सुखी होना
सुख मिलेगा तुम्हें 'ज़ाहिद'[1] बन के

❑❑

20 फरवरी 2005
भानपुरा

---

1. संयमी, जितेन्द्रिय

तक़दीर

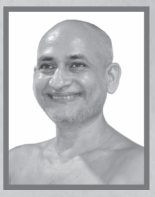

चलो तक़दीर को अब ख़ुद ही आजमायें हम
अपने घर में ही बीज बोके गुल खिलायें हम

देखकर ग़ैर के गुलशन को कभी दिल न जला
अपनी तस्वीर अपने हाथों से बनायें हम

देख ले आज आसमाँ भी सितारों से भरा
अपने दामन में छुपाकर इसे सो जायें हम

जानें लैलो-नहार[1] आये कयामत[2] क्या पता
इसके पहले ही शराफ़त से गुजर जायें हम

कश्ती मँझधार में ही डूब न जाये मेरी
अपनी पतवार चला हौंसला बढ़ायें हम

हमने देखे सुने क़िस्मत बनाने वाले भी
अपने कदमों को उनके कदमों पे बढ़ायें हम

क्या तरब[3] पाओगे ग़ैरों की तरब छीन के तुम
आग ईर्ष्या की अपने दिल से अब बुझायें हम

देखना है दिले परमात्मा की सूरत को
अपनी क़िस्मत को भी 'ज़ाहिद'[4] सा कर दिखायें हम

❑❑

20 फरवरी 2005
भानपुरा

1. रात-दिन, 2. प्रलय, 3. प्रसन्नता, 4. संयमी, जितेन्द्रिय

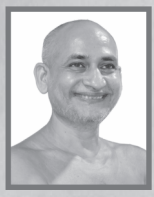

दिल मिला न सके

आज तक हम तुम्हें दिल में पा न सके
दिल मिला पर कभी दिल मिला न सके

दूरियाँ किस तरह बढ़ गईं हैं मेरी
बह रही है नदी और नहा न सके

जागते - जागते इंतिहा हो गई
पास बैठे रहे पर बुला न सके

झिलमिलाता रहा चाँद तारों से घर
तेरे कदमों पे तारे बिछा न सके

जानता हूँ तेरे बिन कोई न मेरा
अश्रु फिर भी कभी छलछला न सके

हाथ में साथ में दीप बाती मगर
दीप देहरी पे तेरी जला न सके

द्वार तूने बुलाया मैं आया मगर
ज्ञान कलशा कभी सिर ढुला न सके

मेरे चेतन प्रदेशों में झूले सदा
बनके 'ज़ाहिद'[1] कभी हम झुला न सके

❑❑

1. संयमी, जितेन्द्रिय

देश की आन बान शान के लिये जीना

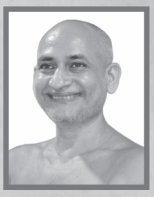

देश की आन बान शान के लिये जीना
आत्म कल्याण धर्मध्यान के लिये जीना

लब पे प्रभु गान हो, या राष्ट्रगान हो लब पे
बनके इंसान तुम इंसान के लिये जीना

आरजू है ये हृदय आचरण से हो पावन
प्यार ईमान व सम्मान के लिये जीना

खूबसूरत है जिंदगी न डूब यूँ गम में
दो घड़ी ही सही, मुस्कान के लिये जीना

कीमती चीज है विश्वास बनाये रखिये
आपसी प्रेम गुलिस्तान के लिये जीना

कौम इन्सान की कुछ ऐसी हुआ करती है
ज़रूरतमंद के अरमान के लिये जीना

जो मिटा दे दिलों की दूरियाँ दरारों को
अपनी मीठी-सी उस ज़ुबान के लिये जीना

❑❑

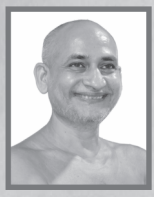

दिल बाग-बाग हो गया

दिल बाग बाग हो गया गुरुवर के दर्श से
मैं खुद गुलाब हो गया गुरुवर के दर्श से

पावन विरागोदय है या पावन है पथरिया
कण-कण प्रयाग हो गया गुरुवर के दर्श से

दहका रहे कर्मों को ये तीर्थेश की तरह
मैं खुद वो आग हो गया गुरुवर के दर्श से

मुस्कान में विराग के विरागता भरी
मैं खुद विराग हो गया गुरुवर के दर्श से

मुक्ति वधु को वर रहे निर्ग्रंथ सुना है
मैं खुद सुहाग हो गया गुरुवर के दर्श से

चर्या में दिख रही है तीर्थेश की छवि
ज़ाहिद चिराग हो गया गुरुवर के दर्श से

आकर विरागोदय में सब विराग से मिले
साकार ख़्वाब हो गया गुरुवर के दर्श से

मायूस हो रहा है जो भव की थकान से
वो वीतराग हो गया गुरुवर के दर्श से

❑❑

अतिशय क्षेत्र विरागोदय
पथरिया (म.प्र.)

जिन्दगी से मुलाकात

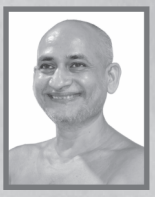

तुम्हें क्या बतायें वहाँ रात थी।
नई जिन्दगी से मुलाकात थी।।

खड़ा था बड़ा काफिला दर्श को।
हुआ दर्श कैसे कहें हर्ष को।।
नजाकत ने पहली सजी रात थी।

नई जिन्दगी से.....

थी मुस्कान होटों पे कुछ मंद सी।
मेरी जीस्त शायद वहीं बंद थी।।
हिले होंठ न एक सौगात थी।

नई जिन्दगी से.....

था स्नेह नजरों में कुछ जादुई।
जो देखा तो बस आरजू मिल गई।।
नजर ने नजर से ही कुछ बात की।

नई जिन्दगी से.....

घड़ी भर मिले घर को आने लगे।
वो यादों में आकर बुलाने लगे।।
वो यादें समर्पण की बरसात थीं।

नई जिन्दगी से.....

हमें जो दिया वो कहीं न मिला।
रखा हाथ सिर पे तो यारब मिला।।
मैं नाचीज क्या मेरी औकात थी।

नई जिन्दगी से.....

❑❑

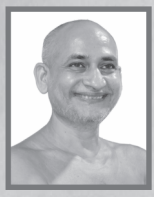

बात

बात समझोगे तो हर बात समझ आयेगी।
दीप मन का जले, दीपावलि मन जायेगी।।

हर खुशी आपके अंदर से ही निकलती है।
खुद में आओगे तो खुद की खुशी मिल जायेगी।

दीप जलते हैं खाक होते दीप ज्योति से।
ज्योति मिल जाये तो दीपक में फिजा आयेगी।

क्यों भटकता है जमाने में छोडके खुद को।
खुद में तू लौट आ मंजिल यहीं मिल जायेगी।।

❑❑

बाराबंकी (उ.प्र.)

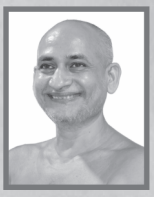

जिनागम पंथ प्रभावना फाउंडेशन
के अंतर्गत
जिनागम पंथ ग्रंथमाला

उद्देश्य
मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार-प्रसार
एवं लोकोपयोगी, धार्मिक-नैतिक साहित्य का
निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष/प्रेरणा
प.पू. श्रमणाचार्य विमर्शसागर जी महामुनिराज

स्थापना ग्रंथमाला : 15 नवम्बर 2018, विमर्श उत्सव

कार्यालय : 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)

कहो गर्व से हम जिनागम पंथी हैं।

978-93-82071-36-5

सच्चे जैन का एक ही पंथ–जिनागम पंथ

जयदु जिणागम पंथो

जिनागम पंथ जयवंत हो

जिनागम पंथ प्रकाशन

...शास्त्र विक्रय... ज्ञानावरणस्यास्रवाः

शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है।

(आचार्य अकलंक देव, राजवार्तिक)

NOT FOR SALE